अश्विन मास, शुक्ल पक्ष 20 वर्ष, अंक 291 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज शुक्रवार 15 अक्टूबर 2021

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस हजार वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

स्वामी श्री योगी सत्यम्

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान प्रयागराज

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

अवकाश की सूचना

विजयदशमी के शुभ अवसर पर सभी पाठकों, अभिकर्ताओं, पत्र वितरकों एवं शुभचिंतको को हार्दिक शुभकामनायें।इस अवसर पर **अखंड भारत संदेश** कार्यालय एवं प्रेस में आज दिनांक 15 अक्टूबर 2021 को अवकाश रहेगा। अतः पत्र का अगला अंक 17 अक्टूबर 2021 को मिलेगा।

-संपादक

30 से ज्यादा देशों ने दी भारत की वैक्सीन सर्टिफिकेट को मान्यता

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूरी दुनिया में अभी कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई जारी है। इस बीच आधिकारिक सूत्रों ने गुरुवार को जानकारी दी है कि ब्रिटेन के अलावा 30 से ज्यादा देशों ने भी भारत के वैक्सीन सर्टिफिकेट को मान्यता दे दी है। जिन देशों ने यह मान्यता दी है उनमें यूके के अलावा, फ्रांस, जर्मनी, नेपाल, बेलारूस, लेबनान, अरमेनिया, यूक्रेन, बेल्जियम, हंगरी और सबिऱ्या शामिल हैं। इसके अलावा साउथ अफ्रीका, ब्राजील, बांग्लादेश, बोत्सवाना, और चीन ये कुछ ऐसे देश हैं जिनके यात्रियों को भारत आने पर जरुरी नियमों का पालन करना होगा। इसमें भारत पहुंचने के बाद कोविड टेस्ट कराना भी जरुरी है। अभी हाल ही में भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने एक ट्वीट में कहा था कि ठकोविड -19 टीकाकरण प्रमाणपत्रों की पारस्परिक मान्यता शुरू होती है! भारत और हंगरी एक-दूसरे के कोविड -19 टीकाकरण प्रमाणपत्रों को मान्यता देने के लिए सहमत हैं। शिक्षा, व्यवसाय, पर्यटन और उससे आगे के लिए गतिशीलता की सुविधा प्रदान करेंगे।बता दें कि भारत में बृहस्पतिवार को कोविड टीकों की 27 लाख से अधिक खुराकें दी गयी और इसके साथ ही देश भर में अब तक दी गयी खुराकों की संख्या 97 करोड़ को पार कर गयी। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने यह जानकारी दी। मंत्रालय ने कहा कि देर रात तक दिन भर की अंतिम रिपोर्ट के एकत्र होने के साथ ही दैनिक टीकाकरण संख्या में वृद्धि होने की उम्मीद है। बुधवार को टीकों की 27,62,523 खुराकें दी गईं। मंत्रालय ने रेखांकित किया कि देश में सबसे संवेदनशील जनसंख्या समूहों को कोविड-19 से बचाने के लिए एक उपकरण के तौर पर टीकाकरण अभियान की नियमित रूप से समीक्षा की जा रही है और उच्चतम स्तर पर इसकी निगरानी की जा रही है।

यूपी विधानसभा चुनाव : प्रदेशभर में भाजपा की किसान चौपाल कल से

लखनऊ (एजेंसी)। भाजपा किसान मोर्चा विजयदशमी के दिन शुक्रवार को प्रदेश भर में किसान चौपाल की शुरुआत करेगी। यह किसान चौपाल प्रदेश की 58 हजार से अधिक ग्राम पंचायतों में लगाई जाएंगी। गुरुवार को भाजपा के राज्य मुख्यालय पर प्रदेश उपाध्यक्ष व मोर्चा के प्रभारी प्रकाश पाल की मौजूदगी में तैयारी बैठक हुई। उन्होंने कहा कि इन चौपालों के जरिए किसानों की आय दोगुनी करने, उनको समृद्धशाली बनाने की केंद्र की मोदी सरकार और प्रदेश की योगी सरकार द्वारा चलाई जाने वाली योजनाओं की जानकारी दी जाएगी। विपक्षी दलों सपा, बसपा या कांग्रेस के पास किसानों को लेकर न कोई योजना है, न कोई मुद्दा है।

अहंकार और अत्याचार का परिणाम सदैव बुरा होता : अखिलेश

लखनऊ (एजेंसी)। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने विजयादशमी पर्व पर प्रदेशवासियों को बधाई देते हुए कहा है कि यह दिन हमें अन्याय पर न्याय की विजय का संदेश देता है। यह सबक भी मिलता है कि अहंकार और अत्याचार का परिणाम सदैव बुरा होता है। अखिलेश यादव ने कहा कि बुराई और असत्य के मुकाबले हमेशा सत्य की जीत होती है। हमें अपने आचरण से सामाजिक सद्भाव एवं परस्पर सौहार्द को बढ़ावा देना चाहिए। इस पर्व से हमें समाज पर हो रहे अन्याय से मुक्ति पाने की भी प्रेरणा मिलती है। समाजवादी पार्टी का कहना है कि उनके अध्यक्ष अखिलेश की दो दिन की पहले चरण की विजय रथयात्रा ने बड़ी हलचल पैदा कर दी है। कानपुर से हमीरपुर-जालौन की यात्रा में जनता के हर वर्ग से उत्साहपूर्ण और स्वतः स्फूर्त समर्थन मिला है। इससे भाजपा नेतृत्व आशंकित और हतोत्साहित हो गए हैं इसलिए वे अपनी रणनीति बदलने की साजिश में जुट गये हैं। सपा प्रवक्ता व राष्ट्रीय सचिव राजेंद्र चौधरी ने बयान जारी कर कहा कि अखिलेश यादव ने वर्ष 2022 में होने वाले चुनावों की निर्णायक शुरुआत कर दी है। उनमें तमाम चुनौतियों को परास्त करने की ताकत है। भाजपा अपनी संकीर्ण मानसिकता के साथ ध्रुवीकरण की राजनीति चलाती है। रथयात्रा के दौरान अखिलेश यादव ने महंगाई, रोजगार, आवास, शिक्षा-स्वास्थ्य जैसे सामाजिक सरोकारों से जुड़े मुद्दे उठाए। दो दिनों में ही प्रदेश में राजनीतिक क्षेत्रों को इस बात का आभास हो गया है।

भारत एक बार फिर यूएनएचआरसी के लिए हुआ निर्वाचित, सपोर्ट में मिले 193 में से 184 वोट

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत गुरुवार को संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद (यूएनएचआरसी) में 2022-24 के लिए एक बार फिर से निर्वाचित हुआ है। इसके साथ थी अगले तीन सालों के लिए निकाय के 47 सदस्यों में शामिल होगा। फिर से निर्वाचित होने भारत ने कहा है कि हम सम्मान, संवाद, सहयोग के माध्यम से मानवाधिकारों के संवर्धन और संरक्षण के लिए काम करना जारी रखेंगे। बता दें कि यह लगातार दूसरी बार है जब भारत परिषद के लिए चुना गया है, और इसे तीन साल का कार्यकाल पूरा करने के बाद अनिवार्य रूप से ब्रेक लेना होगा। जिनेवा में भारतीय मिशन के एक ट्वीट में कहा गया है कि भारत को संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों के भारी समर्थन द्वारा चुना गया। भारत को अपनी श्रेणी में डाले गए 193 वोटों में से 184 वोट मिले। संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी मिशन ने ट्वीट करके यह जानकारी दी। उन्होंने लिखा, 'भारत छठी बार भारी बहुमत से यूएनएचआरसी के लिए पुनःनिर्वाचित हुआ। भारत में अपना विश्वास व्यक्त करने के लिए संयुक्त राष्ट्र के सदस्यों का हार्दिक आभार।' उन्होंने एक अन्य ट्वीट में कहा, 'हम सम्मान, संवाद, सहयोग के माध्यम से मानवाधिकारों के संवर्धन और संरक्षण के लिए काम करना जारी रखेंगे।ङ्ग संयुक्त राष्ट्र महासभा ने अर्जेंटीना, बेनिन, कैमरून, इरिट्रिया, फिनलैंड, जाम्बिया, होंडुरास, भारत, कजाकिस्तान, लिथुआनिया, लक्जमबर्ग, मलेशिया, मोंटेनेग्रो, पराग्वे, कतर, सोमालिया, संयुक्त अरब अमीरात और अमेरिका का चयन गुप्त मतदान के जरिये किया।

देश में टीकाकरण ने पार किया 97 करोड़ का आंकड़ा

स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कब तक हासिल होगा 100 करोड़ का लक्ष्य

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में कोरोना टीकाकरण अभियान में दिन पर दिन तेजी देखने को मिल रही है। इसी के साथ टीकाकरण का आंकड़ा 97 करोड़ को पार कर गया है। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने बताया कि गुरुवार शाम 7 बजे तक देशभर में 27 लाख से अधिक डोज लगाए गए हैं। टीकाकरण का आज 272वां दिन था। वहीं, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया ने गुरुवार को कहा कि भारत को 18 या 19 अक्टूबर के आसपास 100 करोड़ टीकाकरण लक्ष्य हासिल करने की उम्मीद है।

कोविड योद्धाओं पर कॉफी टेबल बुक का विमोचन करते हुए कहा कि भारत में जब कोविड-19 टीके की 100 करोड़ खुराक लोगों को लगा दी जाएगी तो इसकी घोषणा बंदरगाहों, रेलवे स्टेशनों, बस स्टेशनों, मेट्रो स्टेशनों और हवाई अड्डों पर की जाएगी। देश में अभी तक 73 प्रतिशत वयस्कों को पहली खुराक दी जा चुकी है, जबकि 30 प्रतिशत वयस्कों को दोनों खुराक दी जा चुकी है। स्वास्थ्य मंत्री मांडविया ने ट्वीट किया, 'देश 100 करोड़ टीकाकरण लक्ष्य की तरफ बढ़ रहा है। अभी तक कोविड-19 टीके की 97 करोड़ खुराक लगाई जा चुकी है। हम कोरोना से लड़ते रहेंगे।' उन्होंने कहा, '100 करोड़ खुराक का लक्ष्य पूरा हो जाने के बाद हम यह सुनिश्चित करने के लिए मिशन मोड में आ जाएंगे कि जिन लोगों ने पहली खुराक ले ली है।

यूपी में 31 अक्टूबर तक केवल 21 घंटे मिलेगी बिजली

लखनऊ (एजेंसी)। कोयले के संकट से बिजली उत्पादन में आई भारी गिरावट के बावजूद उ.प्र. पावर कारपोरेशन इस त्योहारी सीजन में भरपूर बिजली देने का क्रम जारी रखेगा। राज्य भार प्रेषण केंद्र उ.प्र. (यूपीएसएलडीसी) ने 31 अक्तूबर तक विद्युत आपूर्ति का शिड्यूल जारी किया है। जिसके मुताबिक नगर पंचायतों और तहसीलों में 21.30 घंटे बिजली आपूर्ति किया जाना है। यह आदेश 13 से 31 अक्तूबर तक के लिए है। केंद्रीय विद्युत नियामक आयोग के आदेशों और ग्रिड सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य में यह आदेश सामान्य अवस्था में लागू होंगे। बुंदेलखंड में 20 घंटे नियमित बिजली दिए जाने का आदेश है। किसानों को खेती में दिक्कत न हो इसके लिए कृषि फीडरों से बीते एक अक्तूबर से ही 10 घंटे बिजली दिए जाने की व्यवस्था की गई है।

कश्मीर में बढ़ती हत्याओं पर अमित शाह ने पड़ोसी मुल्क को चेताया, कहा- जैसा सामने से सवाल आएगा वैसा ही जवाब दिया जाएगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। सीमा पर अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहे पाकिस्तान को अब केंद्रीय गृहमंत्री ने खुली चेतावनी दे दी है। गुरुवार को गोवा में एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अमित शाह ने कहा कि एक वो युग था जब बातों से बात होती थी और फिर एक युग आया कि जैसा सामने से सवाल आएगा, वैसा ही जवाब दिया जाएगा। शाह ने कहा कि पहली बार सर्जिकल स्ट्राइक करके भारत ने दुनिया को बता दिया कि भारत की सीमाओं से छेड़खानी करना इतना सरल नहीं है।यहां आपको बता दें कि पाकिस्तान पोषित आतंकवाद जम्मू-कश्मीर में फिर से जड़े जमाने की कोशिश कर रहा है। हाल के दिनों में कायर आतंकवादियों ने कई घाटी में कई निर्दोष लोगों की जान ले ली। इसके अलावा आतंकियों ने सेना पर भी हमला किया था। पड़ोसी मुल्क की शह पर आतंकियों के इस खूनी खेल के बाद इस वक्त पूरा देश उबल रहा है।

अमित शाह ने गुरूवार को गोवा के धारबांदोडा में राष्ट्रीय फ़ॉरेन्सिक साइंस यूनिवर्सिटी के तीसरे परिसर की आधारशिला रखने के मौके पर अपने संबोधन में गोवा के पूर्व मुख्यमंत्री और पूर्व रक्षा मंत्री पर्रिकर को याद करते हुए कहा कि उन्होंने गोवा के मुख्यमंत्री के रूप में प्रदेश को बदलने की शुरूआत की। उन्होंने कहा 'श्री पर्रिकर ने श्री मोदी के नेतृत्व में रक्षा मंत्री के तौर पर दो बड़े काम किए जिनके लिए देश उन्हें हमेशा याद रखेगा। पहला सेनाओं को वन रैंक, वन पेंशन देना तथा दूसरा आतंकवादी ठिकानों पर सर्जिकल स्ट्राइक करना।'

अमित शाह ने आगे कहा, 'वर्षों से देश की सीमाओं को लांघकर आक्रांता आते थे और उग्रवाद फैलाते थे और नई दिल्ली से निवेदन के अलावा कुछ नहीं होता था। लेकिन जब कश्मीर के पुंछ में हमला हुआ और हमारे जवान शहीद हुए, तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और रश्रा मंत्री मनोहर पर्रिकर के नेतृत्व में पहली बार सर्जिकल स्ट्राइक करके भारत ने दुनिया को बता दिया कि भारत की सीमाओं से छेड़खानी करना इतना सरल नहीं है। उन्होंने आगे कहा 'मोदी जी और पर्रिकर जी के नेतृत्व में पहली बार भारत ने अपनी सीमाओं की सुरक्षा, सम्मान अपने सार्वभौमत्व का गौरव प्रस्थापित करने का काम करके एक युगांतकारी शुरूआत की। एक वो युग था जब बातों से बात होती थी और फिर एक युग आया कि जैसा सामने से सवाल आएगा, वैसा ही जवाब दिया जाएगा।

गौ-गंगा और गौरीशंकर की परिकल्पना होगी साकार : डिप्टी सीएम केशव मौर्य

मिर्जापुर (एजेंसी)। कछवां में गौ-गंगा और गौरीशंकर की परिकल्पना साकार होगी। गंगा किनारे गौ आश्रम के साथ ही 108 फीट ऊंची गौरीशंकर की ऊंची प्रतिमा स्थापित होगी। यह बातें डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने कछवां के गड़ौली गांव के कमहरिया गंगा तट पर कुंदन गौ आश्रय स्थल की आधारशिला रखने के बाद समारोह को संबोधित करते हुए कहीं। उन्होंने कहा कि कछवां के कमहरिया में शिव और शक्ति का यानि बनारस और मिर्जापुर का किनारा मिलता है। ऐसे में यहां माता गौरी शक्ति के रूप में तो भगवान शंकर शिव के रूप में स्थापित होंगे।मिर्जापुर के कछवां के गड़ौली गांव में गुरुवार को ओएस बाल कुंदन फाउंडेशन के कुंदन गौ आश्रय स्थल की आधारशिला डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने रखी। इस मौके पर आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए मौर्य ने कहा कि यह गौ आश्रम योग और भारतीय शिक्षा का केंद्र बनेगा। गौ, गंगा, गौरीशंकर हमारा संकल्प का जो बीजारोपण आज हो रहा है वह विशाल वटवृक्ष आने वाली पीढ.ियों को छाया, दिशा और संस्कार देने का काम करेगा। उन्होंने कहा कि गौ माता हम सबके लिए कितनी उपयोगी है ये बातें सभी जानते है। गौ से प्राप्त गोबर हो या गौमूत्र, दूध हो या घी, हम सब इसे पूरे धार्मिक भाव से ग्रहण करते है। उन्होंने कहा कि गऊ माता को कैसे बचाया जाए व उसकी सेवा कैसे की जाए ये सब हमें यहां से जानने को मिलेगा। उन्होंने कहा कि गौ से हमें रोजगार मिलेगा। आर्गेनिक खेती करने में मदद मिलेगी।डिप्टी सीएम ने कहा कि कमहरिया कस्बे के गंगा तट पर बन रहे गौ आश्रम में 108 फीट ऊंची गौरी शंकर की ऊंची प्रतिमा स्थापित होगी। यह प्रतिमा गन मेटल की होगी। इसी जगह पर भगवान शिव का विशाल मंदिर भी स्थापित किया जाएगा। जिनका अभिषेक निरंतर मां गंगा करती रहेंगी। उन्होंने कहा कि इस आश्रम में योग और आयुर्वेद औषधियों की भी जानकारी प्राप्त होगी। इससे पूर्व उप मुख्यमंत्री ने ओएस बालकुंदन फाउंडेशन की तरफ से लगाई गई।

देश के जाने-माने उद्योगगपति टाटा मोटर्स के मालिक पर धोखाधड़ी का मुकदमा दर्ज

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। नए वाहन की रकम लेकर पुराना वाहन दिए जाने के मामले में देश के जाने माने उद्योगपति टाटा मोटर्स के मालिक समेत कई लोगो के विरूद्ध सैनी कोतवाली में धोखाधड़ी फ्राड हेराफेरी सहित कई गम्भीर धाराओं का मुकदमा दर्ज हो गया है मुकदमा दर्ज होते ही उद्योगपतियों में हड़कंप मच गया है बताते चलें कि टाटा मोटर्स के अधिकृत शोरूम बृंदावन शेल्टर्स प्रा0लि0 कानपुर ने नई टाटा सफारी स्ट्रोम की कीमत 16 लाख 67 हजार रुपए लेकर पुरानी गाड़ी दे दी थी सैनी कोतवाली के निन्दूरा के रहने वाले अजय कुमार कुशवाहा ने जिस गाड़ी को टाटा मोटर्स से खरीदी है वह गाड़ी पहले से ही जालौन निवासी इसरार अहमद के नाम से कम्पनी द्वारा बेची जा चुकी थी, जिसका साक्ष्य सर्विस के दौरान मिलने वाली रशीद से व बीमा प्रपत्र के अतिरिक्त गाड़ी के साथ मिलने वाली पुस्तिका से भी प्रमाणित हो रहा है इस मामले को लेकर अजय कुशवाहा ने अदालत का दरवाजा खटखटाया अदालत के निर्देश पर सैनी कोतवाली पुलिस ने टाटा मोटर्स के मालिक समेत कई लोगों के विरुद्ध धोखाधड़ी फ्रॉड हेरा फेरी का मुकदमा अपराध संख्या 301 सन 2021 दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी है

दुर्गा पूजा पर बांग्लादेश में जगह-जगह छिड़े दंगे, मंदिरों में तोड़फोड़ के बाद 3 की मौत

22 जिलों में पैरामिलिट्री फोर्स तैनात

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश में हिंदुओं के साथ अमानवीय व्यवहार एक बार फिर से खुलकर सामने आ गया है। यहां दुर्गापूजा के दौरान हिंदू मंदिरों में इस कदर तोड़फोड़ की गई कि दंगे भड़क गए। इस दंगे में तीन लोगों के मारे जाने और कई लोगों के घायल होने की खबर है। फिलहाल स्थिति को कंट्रोल करने के लिए बांग्लादेश सरकार ने 22 जिलों में अर्द्धसैनिक बलों की तैनाती कर दी है।

बांग्लादेशी न्यूज पोर्टल्‌हौ24.म्दस्‌ की खबर के मुताबिक, ढाका से करीम 100 किलोमीटर की दूरी पर कमिला नाम की जगह पर ईशनिंदा के आरोपों के बाद मंदिर में तोड़फोड़ की गई। खबर के मुताबिक, हिंसक झड़पें बढ़ती देख पुलिस ने स्थिति को नियंत्रित करने की कोशिश की। रिपोर्ट के मुताबिक, चांदपुर के हाजीगंज, चत्तोरग्राम के बांसखली और कॉक्स बाजार के पेकुआ में भी मंदिरों के अंदर तोड़फोड़ की घटनाएं दर्ज की गईं। ढाका ट्रिब्यून की खबर के मुताबिक, स्थिति नियंत्रण से बाहर चली गई और एक के बाद एक कई दुर्गा पूजा स्थलों पर दंगे भड़कने लगे। डेली स्टार की खबर के मुताबिक, दंगों में कम से कम तीन लोग मारे गए हैं और कई लोग घायल हो गए हैं। ये तीन मौतें चांदपुर हाजीगंज इलाके में पुलिस और भीड़ के बीच हुई झड़प के दौरान हुई।

केंद्रीय धार्मिक मंत्रालय ने मामले को लेकर एक इमरजेंसी नोटिस जारी कर जनता से कानून अपने हाथ में नहीं लेने की अपील की गई है। प्रशासन ने आम लोगों से शांति बनाए रखने की अपील की है। अधिकारियों ने कहा है कि अपराधियों को नहीं बक्शा जाएगा। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने अधिकारियों को अपराधियों को जल्द से जल्द पकड़ने के आदेश दिए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, स्थिति हाथ से बाहर जाते देख बांग्लादेश सरकार ने देश की पुलिस रैपिड एक्शन बटालियन (ँ) की एंटी टेररिजम यूनिट और अर्द्धसैनिक बल यानी बॉर्डर गार्ड बांग्लादेश (ँउ) को तैनात किया गया है।

खबर संक्षेप

आरती करते समय करंट की चपेट में आए युवक की मौत

सहसों। थरवई थाना क्षेत्र के मेडुआ गांव में बुधवार रात लगभग आठ बजे गांव में स्थापित पूजा पंडाल में आरती करते समय करंट की चपेट में आने से मौत हो गई। मौके पर पहुंची थरवई पुलिस ने शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। जानकारी के अनुसार मेडुआ गांव निवासी विजय तिवारी 42 वर्ष पुत्र राजमणि तिवारी गांव में स्थापित पूजा पंडाल में आरती कर रहे थे। उसी समय पूजा पंडाल में करंट उतर आया। जिसकी चपेट में आने से विजय तिवारी की मौत हो गई। सूचना पर पहुंची थरवई पुलिस ने शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। विजय तिवारी की मौत से परिजनों सहित पूरे गांव में मातम छाया हुआ है। विजय तिवारी भाजपा के सेक्टर संयोजक भी थे।

संदिग्ध दशा में युवक की मौत

शंकरगढ। नगर पंचायत शंकरगढ़ के लाला पुरवा निवासी एक युवक की संदिग्ध दशा में मौत हो गई। बताया जाता है कि नगर पंचायत शंकरगढ़ के लाला का पुरवा निवासी छोटू (19) पुत्र विजय शुक्ला सोमवार की रात गुडि?ा तालाब स्थित दुर्गा पंडाल के कार्यक्रम में सम्मिलित हुआ था, वहाँ से लौटने के बाद वह घर में अचेत हो गया। उसे अस्पताल ले जाया गया, पर उसकी जान नहीं बचाई जा सकी।

मेजा ब्लाक में लूट खसोट एवं भ्रष्टाचार का बोलबाला

अखंड भारत संदेश

मेजा ब्लाक के वर्तमान हालात की गवाही देती तस्वीरें

- कभी उरूवा तो कभी मेजा ब्लाक में मठाधीश बने एडीओ पंचायत की कार्यशैली
- विकास के बजाय भ्रष्टाचार में लिप्त है अधिकारी
- पूरा ब्लाक कैम्पस बना गौशाला गंदगी का अम्बार
- कैम्पस का मेन गेट महीनों से है टूटा, बीडीओ आवास भी गंदगी का शिकार साफ सफाई नदारत
- गॉवों का औचक निरीक्षण कर सुर्खिया बटोरने में मशगूल है मैडम सपना

मेजा। शासन व्यवस्था से जुड़े अधिकारियों के लिए किसी भी पद पर एक ही स्थान पर बने रहने को लेकर गाइड लाइन तय की गयी है। ऐसे में विभिन्न पदों पर तैनात अधिकारी समय से अधिक टिके रहने पर इलाके की लोकल राजनीति में आकर मठाधीश बन जाते है जिससे उस इलाके का विकास होने के बजाय लूट-खसोट एवं भ्रष्टाचार का विकास होने लगता है। मेजा ब्लाक के एडीओ पंचायत रमाकान्त पाडेय की कार्यशैली भी कुछ इसी प्रकार की है।

उल्लेखनीय है कि मेजा तहसील क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले तीन विकास खण्ड मेजा, उरूवा एवं माण्डा प्रयागराज जिले के चर्चित विकास खण्ड है जहॉ बीते दिनों हुए ब्लाक प्रमुख चुनाव में क्षेत्र की बड़ी हस्तियों ने विकास के मुद्दे पर चुनाव जीतकर सम्पूर्ण विकास खण्ड में विकास की गंगा बहाने की घोषणा के पश्चात अपना कार्यकाल शुरू किया है। इस दौरान ब्लाक की कमान कुछ ऐसे नवनिर्वाचित ब्लाक प्रमुख के हाथ में गयी जो वास्तव में विकास के लिए जाने जाते है। विकास खण्ड उरूवा की श्रीमती आरती गौतम का विकास के प्रति ऐसा ही व्यक्तित्व रहा है जिसके कारण सत्ता पक्ष के तमाम विरोध के बावजूद भी सपा के बैनर तले उन्हें उरूवा का दोबारा नेतृत्व करने को मिला। बता दें कि विकास को प्राथमिकता देने वाली श्रीमती गौतम ने कार्यभाल ग्रहण करने के पश्चात बीते कार्यकाल में उरूवा ब्लाक के मठाधीश बन चुके एडीओ पंचायत को अपने विकास खण्ड से इस आशय से हटवा दिया कि उनके कार्यकाल में विकास को प्राथमिकता दी जोयगी न कि भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकारियों को प्रोत्साहन दिया जायेगा। गौरतलब है कि उरूवा ब्लाक से हटाये जाने के बाद अपनी ऊॅची पहुॅच का ताना-बाना कर उच्चाधिकारियों को खुश करके उक्त अधिकारी ने अब मेजा ब्लाक में अपना पाव जमा लिया है जहॉ विकास के नाम पर लूट-खसोटएवं भ्रष्टाचार का खल खेला जा रहा है। मेजा ब्लाक सूत्रों की माने तो वर्तमान समय में मेजा ब्लाक का कोई ऐसा गॉव नहीं है जहॉ शासन द्वारा संचालित जन कल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन पूर्ण रूप से किया गया हो। ग्राम पंचायत अधिकारी से लेकर बीडीओ तक एडीओ पंचायत रमाकांत पाण्डेय के काले कारनामे में शामिल है जबकि देखा जायतो सरकारी ऑकड़ों में सब कुछ अप टू डेट चल रहा है। इतना ही नहीं बीते पॉच सालो से कभी उरूवा ब्लाक तो मेजा ब्लाक में गॉव देश की लोकन राजनीति के बल पर मठाधीश बन चुके एडीओ पंचायत ने कई ऐसे एजेन्ट पाल रखे है जिसके माध्यम से अपनी बिरादर के लोगों को लाभ पहूॅचाने के लिए ग्राम पंचायत अधिकारियों पर दबाव बनाकर निविदा टेंडर नोटिस जारी करवाकर अच्छी-अच्छी कमीशन खोरी भी किये जाने का मामला भी इन दिनों सुर्खियो में है। देखा जाय तो स्वच्छ भारत अभियान के तहत केन्द्र एवं प्रदेश सरकार द्वारा करोड़ो की राशि ब्लाकों को आवंटित की जा रही है लेकिन मेजा ब्लाक परिसर की टूटी-फूटी बाउण्ड्रीवाल एवं ब्लाक के दक्षिण, उत्तर तथा पश्चित तरफ उगी बड़ी-बडी घासों एवं गंदगी से अटा-पटा दुर्गन्ध युक्त परिसर इस बात की गवाही देने के लिए काफी है। हलाकिं अखबारों में सुर्खियों बटोरने में मशगूल बीडीओ मेजा सपना अवस्थी कभी लोटाढ़ गॉव तो कभी उरूवा ब्लाक के परानीपुर ओनौर आदि का औचक निरीक्षण कर साफ-सफाई व अन्य योजनाओं पर विशेष फोकस की खानापूर्ति में लगी हुई है लेकिन मजे की बात यह है कि उनके कैम्पस में बने उनके सरकारी आवास का इन दिनों काफी बुरा हाल है। ब्लाक कैम्पस के अन्दर बेहद गन्दगी का जहॉ अम्बार लगा हुआ है वही पूरा कैम्पस गौशाला में तब्दील हो गया है कैम्पस का मेन गेट महीनों से टूटा पड़ा है लेकिन यहॉ के जिम्मेदर अधिकारी से लेकर कर्मचारी तक सभी सिर्फ लूट-खसोट एवं भ्रष्टाचार में ही मस्त है। फिलहाल इस सम्बन्ध में नवनिर्वाचित ब्लाक प्रमुख मेजा प्रतिनिधि गंगा प्रसाद मिश्र से बात की गयी तो उन्होने स्पष्ट लहजे में कहा कि यदि एडीओ पंचायत के भ्रष्टाचार की पुष्टि होती है तो किसी भी कीमत पर बक्शा नहीं जायेगा रही बात ब्लाक कैम्पस में गंदगी की तो शीघ्र ही मेजा ब्लाक का कायाकल्प करेगें और यहॉ सुन्दर पार्क के साथ-साथ चारों तरफ की टूटी-फूटी बाउण्ड्रीवाल का भी निर्माण कराया जायेगा।एक माह बाद सौन्दर्यीकरण का कार्य शुरू हो जायेगा।

मानसिक संतुलन व्यक्ति को गायब किए जाने का आरोप

भूमि संपत्ति का मामला, पुलिस पर रिपोर्ट न दर्ज करने का आरोप

कोराव। नगर पंचायत कोरांव में एक किसान के अगुआ किए जाने एवम उसकी रपट न दर्ज किए जाने का आरोप है, जिसकी शिकायत शिकायत कर्ता ने उच्च अधिकारियों को दे रखी है। बता दें कि जगदीश प्रसाद सिंह पटेल पुत्र स्वर्गीय राम गुलाब सिंह कस्बा कोरांव प्रयागराज ने लिखित रूप से शिकायत की है कि मेरे सगे चाचा राजेंद्र प्रसाद सिंह जिनका मानसिक संतुलन ठीक नही है। जिन्हे कुछ लोगों ने अगुआ कर लिया है। चर्चा है कि अगुआ हुए व्यक्ति की कोरांव एवं आसपास के गांव अंतरी सिकमी आदि में उनके नाम कीमती जमीनें हैं। थाना पुलिस कोरांव में अपहरण किए जाने की नामजद तहरीर दी जा चुकी है,किंतु केस दर्ज नहीं की गई। इस मामले में शिकायत कर्ता ने उप पुलिस अधीक्षक मेजा आदि को भी अवगत लिखित रूप से किया गया फिर भी केस अभी तक दर्ज नहीं हुआ। आरोप है कि अगुआ करने वालों की नियत उनकी बेस कीमती सम्पत्ति और बैंक बैलेंस को ऐंठने की है। इस संबंध में शिकायत है कि प्राथमिकी दर्ज की मांग किए जाने पर शिकायत कर्ता को जान से मारने आदि की तरह तरह की धमकियां दी जा रही है। जिससे किसी भी समय अप्रिय घटना घट सकती है। पुलिस, प्रशासन से हस्तक्षेप कर विधिक कार्यवाही किए जाने की मांग कथित रूप से अपहृत व्यक्ति के भतीजों ने सासन से की है।

ग्राम प्रधान के जान माल सम्मान का खतरा!

खुफिया विभाग सक्रीय, कोराव पुलिस ने आरोपियों के घर जा कर की पूंछ तांछ,दी हिदायतें

अखंड भारत संदेश

ग्राम समाज की जमीन पर हुए अतिक्रमण का दृश्य देखते खंड विकास अधिकारी कोरांव व अहद अहमद सिद्दीकी उर्फ शहजादे ग्राम प्रधान

कोरांव। ब्लॉक कोरांव के ग्राम पंचायत अल्हवा के ग्राम प्रधान को कुछ अराजक तत्वों,भू माफियाओं,एवम खनन माफियाओं द्वारा हत्या एवम जान माल के सम्मान पर हमला करने की साजिश रखने वालों के खिलाफ कार्यवाही शुरू की है।

बता दें कि ग्राम प्रधान एवं वरिष्ठ पत्रकार सोशल वर्कर अहद अहमद सिद्दीकी उर्फ शहजादे अल्हवा ने ग्राम समाज की सार्वजनिक सरकारी जमीनों को भू माफियाओं से अव मुक्त किए जाने की कार्यवाही शुरू की है। जिससे ग्राम का विकास निर्माण कार्य,मार्गों का निर्माण आदि हो सके,साथ ही भूमिहीनों को कृषि कार्य तथा आवास बनाने हेतु आवंटन कर सकें। जिस पर काफी समय से कब्जा कर अवैध लाभ उठा रहे भू माफियाओं को प्रधान की कार्यवाही अच्छी नहीं लगी। और न ही गांव में युद्ध स्तर पे चल रहे विकास कार्यों को देख प्रधान के कार्य पसंद आ रहे। सार्वजनिक वितरण प्रणाली पर जब अंकुश लगा तो कोटेदार जो वह भू माफिया है उसने लोगों को उकसा कर हत्या की साजिश रचने लगा। और लोगों से कुल्हाड़ी से काट कर हत्या कराने का लोगों को उकसाने लगा। और राजस्व कर्मियों को नाप जोख न कर कोई कार्यवाही न किए जाने का प्रयास करने लगा। एक साजिश के तहत ग्राम प्रधान को रहाईसी मकान को लेखपाल देवघाट को पटा कर भू माफिया लोग लोक निर्माण विभाग की भूमि में फर्जी रिपोर्ट लगा कर घर गिरवाने की धमकी देने लगे। ग्राम अल्वा के ही एक भू माफिया ने एक महिला को जिंदा होते हुए मुर्दा दिखा कर उसकी भूमि भी माफिया के नाम कर दी। जिसकी शिकायत जिला अधिकारी से महिला खुद जा कर की। और अपनी जिंदा होने का सबूत दिया। जिस पर लेखपाल देवघाट राज बहादुर सिंह पटेल को निलंबित कर दिया गया। और महिला की जमीन उसके नाम वापिस खाते में दर्ज की गई। इसी प्रकार ग्राम प्रधान शहजादे ने मुख्य मंत्री और प्रमुख सचिव राजस्व लखनऊ से शिकायत कर सरकारी जमीन खाली किए जाने और जान माल की रक्षा किए जाने की मांग की। जिस पे सासन कार्यवाही हेतु जिला प्रशासन को इंगित कर दिया। कोरांव पुलिस ने 12 अक्टूबर को प्रधान के विरुद्ध साजिश करने वालों के खिलाफ कार्यवाही शुरू की। जिससे हड़कंप मचा हुआ है।

न्यूज झरोखा

मूर्ति विसर्जन चिन्हित स्थानों पर होगा : विवेक मिश्रा

करछना। तहसील के अंतर्गत गांवो में होने वाले दुर्गा जागरण के उपरांत मूर्ति विसर्जन करने के लिए गुरुवार को प्रशासन ने सभी संचालकों को निर्देशित किया कि निर्धारित स्थानों पर ही मूर्तियों का विसर्जन किया जाएगा जिसको लेकर तालाबों को चिन्हित किया गया जगह-जगह जेसीबी से गड्ढा खोदवाकर मूर्ति विसर्जन के लिए स्थानों का चिन्हित किया गया सभी पूजा पंडाल के संचालकों को एडीओ पंचायत करछना विवेक कुमार मिश्रा एडीओ आईएसबी रामेश्वर सिंह ब्लाक कर्मचारियों के साथ मुंगारी, मनैया, डीहा ,आदि स्थानों पर जेसीबी से गड्ढा खोद वाकर वह चिन्हित किए गए तालाबों पर मूर्ति विसर्जन किए जाने का दिशा निर्देश दिया है इसके लिए सभी पूजा पंडाल के संयोजक भक्तगण मां दुर्गा की मूर्ति विसर्जन चिन्हित स्थानों पर ही करने का उन्हें निर्देश दिया गया है।

दुर्गा पूजा समिति द्वारा चौकी प्रभारी सहसों हुए सम्मानित

सहसों। विकास खण्ड बहादुरपुर क्षेत्र के चकिया घराहरा गांव में बुधवार को जय माँ दुर्गा समिति के तत्वावधान में प्रधान संघ के मंडल उपाध्यक्ष क्रांतिगुरु गणेश वल्लभ दिवेदी ने बतौर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित चौकी प्रभारी सहसों भीष्म नारायण सिंह समेत अन्य पुलिस कर्मियों को अंगवस्त्रम भेंट कर सम्मानित किया। बता दें कि गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी चकिया घराहरा गांव स्थित मंदिर में माँ दुर्गा की प्रतिमा स्थापित की गई हैं। जहाँ शाम होते ही भक्तों की भारी भीड़ लगना आरंभ हो जाता है। बुधवार शाम को सहसों चौकी प्रभारी भीष्म नारायण सिंह ने माँ की आरती उतारकर लोगों के कल्याण हेतु प्रार्थना किया। इस अवसर पर चौकी प्रभारी ने अपने संबोधन में कहा कि पुलिस कर्मियों को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित कर स्वागत करने का दौर तब तक सुचारू रूप से चलता रहेगा जब तक क्रांतिगुरु जैसे लोग समाज का अंग होते रहेंगे। इस मौके पर कांस्टेबल मो० शमीम खां, कांस्टेबल साहब सिंह व हेड कांस्टेबल अनिल मिश्रा आदि पुलिस कर्मियों का स्वागत समिति की ओर से किया गया। इस मौके पर उपास्थित अतिथियों के प्रति बृजेन्द्र पटेल ने आभार प्रकट कर धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन क्रांतिगुरु गणेश वल्लभ दिवेदी ने किया। इस मौके पर विजय पटेल, राम सूरत पटेल, अनिल पटेल पूर्व क्षे०पं०स०, शिव कुमार, रणजीत समेत सैकड़ों की संख्या में भक्तगण उपस्थित रहे।

चलो बुलावा आया है माता ने बुलाया है...

प्रतापपुर। नवदुर्गा पुजा समिति चनेथू के पंडाल में बुधवार रात जागरण कार्यक्रम का आयोजन हुआ।जिसमें सुप्रसिद्ध गायक मंजीत तिवारी, सुजीत तिवारी, ज्योति माही ने एक से बढ़कर एक देवी गीत पचरा सुनाकर लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया।पूजन अर्चन आरती मे क्षेत्र के सैकड़ों दर्शनार्थी महिलाओं बच्चों एवं अन्य भक्तगण शामिल रहे।इस अवसर पर आचार्य धरणीधर शुक्ला, अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद शुक्ला, प्रेमचन्द्र शुक्ला, मिथिला शंकर शुक्ला, विनय शुक्ला, पवन शुक्ला, राजेश मिश्र, कृष्णराज शुक्ला, हरिश्चन्द्र शुक्ला, आशीष शुक्ला, बृजेश तिवारी बाबा, सूरज कोटेदार, कड़ेदिन मौर्य, विपुल तिवारी, कृष्ण कुमार शुक्ला, शिवमणि शुक्ला, शिवम तिवारी, सत्यम तिवारी, अजय शुक्ला, संतोष शुक्ला, अविनाश मिश्रा आदि लोग मौजूद रहे।

नीमिया के डार मैया झूलेला झूलनवा.....

जंघई। प्रतापपुर क्षेत्र के प्रमुख बाजारों मे जंघई, भेलखा, वारी, नेदुला, उग्रसेनपुर, सरायममरेज, सिरसा एवं गावों मे चनेथू, चम्पापुर, महरछा, मठोही, पिलखिनी, पतवां, पतैयां, नेवादा, रस्तीपुर, जलालपुर आदि स्थानों पर शारदीय नवरात्र का जागरण हवन कन्या पूजन के साथ समापन हुआ इस अवसर पूरा क्षेत्र भक्तिरस मे सराबोर रहा भव्य पंडालों एवं घरो मे हवन करके नवरात्र का समापन देवी माँ के मंत्रोच्चारण के बीच किया गया वहीं धनूपुर के देवबरा गांव के चौरा माता मंदिर के श्री नवदुर्गा पूजा समिति के पंडाल मे सुप्रसिद्ध भोजपुरी अशोक रत्न से सम्मानित गायक विकास पाण्डेय इलाहाबादी, गीतांजली मौर्या, हिमांशु सिंह, पाखंडू, इलियास, रिंकू, राजेश, गोलू, मंगल, अवधेश यादव, धनंजय अंजाना द्वारा बुधवार रात्रि में भगवती जागरण मे देवी गीत पचरा भक्ति फिल्मी गीत आदि सुनाकर सभी को मंत्र मुग्ध कर दिया।इस अवसर पर पारस नाथ पाण्डेय, विजयमणि पाण्डेय, छोटेलाल पाण्डेय, कैलाश नाथ, डाक्टर रविंद्र पांडेय, अशोक उपाध्याय, अमित पाण्डेय, राधेमोहन पाण्डेय, बिपिन, पीयूष सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

सिद्धीदात्री के अंतिम स्वरूप का दर्शन करते श्रद्धालु

कौंधियारा। दिन गुरुवार को जारी के प्राचीन बड़े हनुमान जी के मंदिर में महानवमी के दिन मां सिद्धिदात्री का दर्शन पूजन कर महिलाओं ने आशीर्वाद मांगा सुबह आरती के बाद हवन का आयोजन किया गया फिर माता शक्ति स्वरूपा की संध्याकालीन आरती की गई आरती के बाद मंदिर परिसर में भक्तों को हलवे का प्रसाद वितरण किया गया। जहां महिलाओं ने कीर्तन भजन कर माता के जयकारे लगाए और 9 दिन तक खूब चहल-पहल बनी रही। मंदिर परिसर मे मौजूद, अनुराधा गुप्ता, नीलम गुप्ता, गीता गुप्ता, माया अग्रहरि, गुलाब सोनी, रश्मि श्रीवास्तव, अंजलि केसरवानी, मंजू केसरवानी, आचार्य मुकेश शुक्ला ,कृपा शंकर तिवारी ,शैलेंद्र गुप्ता ,महेश केसरवानी, राम गोपाल गुप्ता ,मुरारी केसरवानी, गुड्डू केसरवानी राजू केसरवानी ,नीरज श्रीवास्तव, विकास गुप्ता, बाबूजी केसरवानी, आदि भक्त जनों की भीड़ जुटी रही।

महागौरी की आराधना कर कन्याओं को कराया भोज

दुर्गा पूजा कमेटियों के द्वारा आयोजित भंडारे में हजारों भक्तों ने ग्रहण किया प्रसाद

दुर्गा पूजा कमेटी द्वारा आयोजित कन्या भोज में शामिल

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। शारदीय नवरात्रि के आखिरी दिन महानवमी पर पूजा पंडालों में दिनभर मां जगदंबा के जय का उद्घोष होता रहा। आखिरी दिन जगतजननी के नौवें स्वरूप महागौरी की पूरे विधि-विधान से आराधना की गई। पूजन-अर्चन के उपरांत सामूहिक हवन कर समाज और देश की तरक्की की कामना की गई। कन्याओं के पांव पखार कर उनका भी रोली-अक्षत से पूजन कर भोज करवाया गया। इस दौरान विभिन्न स्थानों पर भंडारे का भी आयोजन हुआ, जिसमें हजारों भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया।

आर्य रामवाटिका, पुरानी बाजार में स्थापित पूजा पंडाल में भी मोहल्लेवासियों ने कन्याओं का पूजन कर आशीष मांगा और भोजन करवाकर यथाशक्ति दक्षिणा प्रदान की। इस दौरान मोहल्लेवासियों ने पूरे विधि-विधान से मां की आराधना की और हवन में आहुति डालकर कुशलता का आशीष मांगा। अंतिम दिन यहां पर विशाल भंडारे का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विनोद केसरवानी, अर्पित केसरवानी, हर्षित केसरवानी, अनमोल, शुभम, पंकज केसरवानी, श्वेत, अभी, प्रकाश, बंटू, नीरज, वंश, आयुष, शैली, काव्या, मीना केसरवानी, मांडवी केसरवानी, झलक, अमायरा, पूजा केसरवानी, श्वेता गुप्ता, गुंजन, तारा, रूपाली ने मां के दरबार में शीश नवाया।

इसीतरह वार्ड संख्या तीन, गुडि?ा तालाब (सभासद सुशील पांडेय के आवास के बगल) स्थापित पूजा पंडाल में अष्टमी की रात डायमंड स्टार जादूगर हेमराज द्वारा जादू के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जादूगर के हाथ की सफाई देखने वालों की भारी भीड़ रही। इस कार्यक्रम में प्रमुख जसरा अजीत प्रताप सिंह उर्फ पप्पू छतहरा, पूर्व प्रमुख गुलाब कली, समाजसेवी सूर्यनिधान पांडेय, जिपं सदस्य बृजेश सिंह आदि शामिल हुए। इसी तरह लाइनपार में नवदुर्गा पूजा कमेटी द्वारा कन्या भोजन का आयोजन किया गया। यहां भी हवन-पूजन के उपरांत आयोजित भंडारे में देर रात तक प्रसाद का वितरण किया गया।

मां काली दुर्गा पूजा पंडाल में गायिका ज्योति माही ने जागरण में बांधा समा

अखंड भारत संदेस

गायिका ज्योति व साथियों संग भक्ति गीत प्रस्तुत किया।

करछना। के केचुहा गांव में कई वर्षों से चल रहा सिद्ध श्री मां काली दुर्गा पूजा में आयोजक हिमांशु तिवारी के तत्वाधान में जागरण का आयोजन किया गया जिसमें कि मेजा की धरती से पहुंचे मनजीत तिवारी और सुजीत तिवारी और बनारस से चलकर आई सुप्रसिद्ध गायिका ज्योति माही ने अपने भजनों से भक्तों को भाव विभोर कर दिया । माई मुखड़ा निहाल कईले बा जैसे भजनों को गाया जिससे कि भक्त तालियों के साथ मंत्रमुग्ध हो गए और जागरण का पूरा माहौल बदल गया और दूर-दूर से आए भक्तगण और ग्रामीणों ने तिवारी बंधु और ज्योति माही की जमकर तारीफ की कयी वर्षों से केचुहा के ग्राम देवी मैया पर आयोजित होता है जिसमें कि पूरे गांव के लोग बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते हैं और पूरी श्रद्धा से 9 दिन पूरे गांव का नजारा ही अलग रहता है और उसमें इस कार्यक्रम ने चार चांद लगा दिया कार्यक्रम में पहुंचे दूर-दूर से क्षेत्रवासी एवं गांव की माताओं एवं बहनों ने तालियों के साथ तिवारी बंधुओं और ज्योति माही का स्वागत किया कार्यक्रम में ग्राम प्रधान पति श्याम नंदन तिवारी पूर्व जिला पंचायत सदस्य रवीश चंद्र तिवारी और पूर्व प्रधान उमाकांत तिवारी के साथ रामअधार, भोली तिवारी, अमरीश तिवारी, रत्नेश तिवारी, निराला द्विवेदी ,घनश्याम द्विवेदी , रामासरे द्विवेदी, सतीश चंद्र तिवारी, देवी प्रसाद तिवारी मनोज शंकर तिवारी ,नचुल विश्वकर्मा, शांति प्रसाद विश्वकर्मा ,देवी प्रसाद विश्वकर्मा आनन्द, कौशल ,पिन्टू शुक्ला, अवधेश, कमलेश, पंचम तिवारी सहित गांव के तमाम लोग जागरण में शामिल हुए और बहुत सारी माताओं एवं बहनों ने उनके भजनों को श्रवण किया और माता रानी का आशीर्वाद प्राप्त किया ।

धनुष यज्ञ की मनमोहक मंचन से श्रीराम के उद्घोष से गूंजा पंडाल

सहसों। क्षेत्र के भोपतपुर मीरापुर गांव में स्थानीय कलाकारों द्वारा मंचित की जा रही रामलीला में बुधवार को धनुष यज्ञ एवं राम विवाह की सजीव प्रस्तुति देखकर उपस्थित दर्शक रोमांचित होकर जय श्रीराम के उद्घोष से पूरा पंडाल गुंजायमान हो उठा। रामलीला के प्रारंभ में समिति के प्रबंधक महेंद्र श्रीवास्तव, लाल जी प्रजापति सहित अन्य लोगों ने श्री राम सहित राम दरबार की आरती उतारी तत्पश्चात रामलीला का मंचन प्रारंभ हुआ। मंचन में जनक द्वारा माता सीता के स्वयंवर की घोषणा की जाती है तथा सीता विवाह के लिए शर्तों को कई देशों से उपस्थित राजाओं के बीच रखा। उपस्थित राजाओं ने शिव धनुष को तोड़ना तो दूर रहा उसे हिला भी नहीं सके। इसे देख कर जनक जी निराश हुए। इस पर गुरु की आज्ञा पाकर श्री राम ने धनुष को जैसे ही हाथ लगाया वैसे ही धनुष टूट गया और पूरे पंडाल में भगवान श्री राम के जयकारे लगने लगे। धनुष टूटने पर माता जानकी ने भगवान श्रीराम के गले में वरमाला डाली और उपस्थित महिलाओं ने मंगल गीत गाकर पुष्प वर्षा की। शिव धनुष का भंजन सुनकर परशुराम क्रोधित हो जाते हैं और परशुराम लक्ष्मण संवाद होता है। इसी बीच श्री राम परशुराम के क्रोध को शांत करते हुए पूरी बात बताई। जिस पर परशुराम शांत हुए। सीता स्वयंवर तथा परशुराम लक्ष्मण संवाद की भावपूर्ण प्रस्तुति देखकर उपस्थित दर्शक रोमांचित हो कर देर रात तक रामलीला का आनंद लेते रहे।

सहसों रामलीला का मंचन प्रोजेक्टर के माध्यम से

सहसों। आदर्श रामलीला कमेटी सहसों में रामलीला की शुरूआत आजादी के पहले सन 1934 से हुई थी। इसकी शुरूआत सहसों क्षेत्र के कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा की गई थी। आज इसका स्वरूप बदल चुका है। आधुनिकता के रंग में रंगी सहसों की रामलीला को देखने के लिए लोगों की भीड़ जुट रही है। कोरोनावायरस के चलते गत वर्ष रामलीला का मंचन नहीं हो सका था। परन्तु इस बार आधुनिकता के रंग में रंगा हुआ प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रतिदिन रामलीला के विभिन्न प्रसंगों को दिखाया जा रहा है। प्रोजेक्टर के माध्यम से दिखाए जा रहे रामलीला को देखने के लिए सहसों सहित आसपास क्षेत्र के भारी संख्या में लोग पहुंचकर रामलीला का आनंद ले रहे हैं। आजादी के बाद पहली बार प्रोजेक्टर के माध्यम से दिखाई जा रही रामलीला को देखने के लिए दूरदराज से लोग पहुंच रहे हैं। जो महिलाओं पुरुषों एवं बच्चों के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। सहसों निवासी 93 वर्षीय राजाराम शुक्ल सन 1962 से लेकर 1972 यानी 10 वर्षों तक लगातार राम का अभिनय करने के पश्चात भरत दशरथ तथा विश्वामित्र की भूमिका भी निभा चुके है। उनका कहना है कि परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है। प्रारंभ में कठिनाइयों के बीच रामलीला का अद्भुत मंचन स्थानीय कलाकारों द्वारा किया जाता रहा है। परन्तु आज भी प्रोजेक्टर के माध्यम से दिखाए जा रहे रामलीला में आकर्षण कम नहीं है। रामलीला के प्रबंधक महादेव सिंह ने बताया कि रामलीला के विभिन्न प्रसंगों को 10 दिन तक प्रोजेक्टर से दिखाया जा रहा है। जो क्षेत्र में आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। दस दिन तक रामलीला के प्रदर्शन के बाद आगामी 20 अक्टूबर को दशहरे के मेले का भव्य आयोजन किया जाएगा। रामलीला को देखने के लिए दर्शक देर रात तक जुटे रहते हैं। बुधवार की रात में कैकेई का कोपभवन में जाना, राम वन गमन आदि का दृश्य देखकर दर्शक रोमांचित हो कर रामलीला का आनंद लिए।

खबर संक्षेप

फांसी लगाकर विवाहिता ने की आत्महत्या

लालापुर। लालापुर थाना क्षेत्र के भमोर गांव में एक विवाहिता ने पति से कहाँ सुनी को लेकर नाराज होकर फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया। भमोर गांव निवासी सुमित्रा उम्र 28 वर्ष पति भुल्लान से किसी बात को लेकर नाराज थी,और बुधवार की रात घर मे दरबाजा बन्द कर के फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया।बताया जा रहा की पति भुल्लान गाँव के नौदुर्गा जागरण में गया था देर रात लगभग बारह बजे जब घर आया और आवाज दिया दरबाजा खट्टखाने लगा तो कुछ देर तक कोई आवाज नहीं आई न दरवाजा खुला तो पति ने दरवाजा तोड़ के अन्दर गुसा तो सुमित्रा धन्नी में साड़ी में लटकती मिली पुलिस को सुचना मिली तो मौके पर पहुंचे लालापुर थानाध्यक्ष ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया। भुल्लान की शादी सात वर्ष पहले लवायान गाँव में होरीलाल निषाद यहां हुई थी।मृतक सुमित्रा के पिता को जब सुचना मिली तो लालापुर थाने आकर दहेज प्रथा और उत्पीड़न का आरोप लगाते तहरीर दी और पुलिस से कहा कि मेरे बच्ची को आये दिन मारा पिता जा रहा था जिसको लेकर कई बार सुमित्रा ने बताया था लेकिन समझा बुझाकार भेज दिया जाता था।

प्रशासनिक अधिकारियों ने अंदावा में बने मूर्ति विसर्जन स्थल का किया निरीक्षण

मूर्ति विसर्जन स्थल का निरीक्षण करते जिलाधिकारी व अन्य।

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री एवं डीआईजी/वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी गुरूवार को अंदावा के पास बनाये गये मूर्ति विसर्जन स्थल का निरीक्षण करते हुए व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने मूर्ति विसर्जन हेतु सभी आवश्यक व्यवस्थायें चुस्त-दुरूस्त बनाये रखने के निर्देश दिये है। जिलाधिकारी ने मूर्ति विसर्जन हेतु स्वच्छ जल की व्यवस्था के साथ-साथ प्रकाश की भी समुचित व्यवस्था सुनिश्चित किये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने प्रकाश के लिए विद्युत की व्यवस्था के साथ-साथ वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में जनरेटर की व्यवस्था भी सुनिश्चित किये जाने का निर्देश दिया तथा जिलाधिकारी एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने मूर्ति विसर्जन हेतु वाहनों के आवागमन की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित किये जाने के लिए निर्देशित किया है। उन्होंने कहा है कि मूर्ति विसर्जन स्थल के आस-पास कहीं पर भी जाम की स्थिति न होने पाये। जिलाधिकारी ने मूर्ति विसर्जन स्थल पर सर्तकता एवं सावधानी बरतने के निर्देश दिये है। उन्होंने कहा है कि कोई भी गहरें पानी में न जाने पाये। जिलाधिकारी ने मूर्ति विसर्जन स्थल पर स्वास्थ्य विभाग, विद्युत विभाग, फायर विभाग के अधिकारियों की तैनाती किये जाने के साथ-साथ साफ-सफाई की भी समुचित व्यवस्था बनाये रखने का निर्देश दिया है। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी नगर मदन कुमार, अपर जिलाधिकारी प्रशासन वी0एस0 दूबे सहित अन्य सम्बंधित विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल का जिलाधिकारी ने निरीक्षण कर दिए आवश्यक दिशा-निर्देश

अस्थायी गोवंश आश्रय का निरीक्षण करते जिलाधिकारी

प्रयागराज। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री एवं डीआईजी/वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी गुरूवार को बहादुरपुर ब्लाक कें हनुमानगंज में सरॉय लाहुलपुर में बनाये गये अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल का निरीक्षण किया। जिलाधिकारी ने गोवंश आश्रय स्थल की व्यवस्थाओं के बारे में मुख्य पशुचिकित्साधिकारी से जानकारी प्राप्त की। उन्होंने निराश्रित गोवंशों के लिए भूसे के साथ-साथ हरे चारे की भी व्यवस्था सुनिश्चित किये जाने का निर्देश दिया है। जिलाधिकारी ने संरक्षित गोवंशों के टीकाकरण के साथ-साथ नियमित रूप से स्वास्थ्य परीक्षण कराये जाने के भी निर्देश दिये है। जिलाधिकारी ने आश्रय स्थल पर प्रकाश की व्यवस्था के साथ-साथ भूसा, चारा, पानी की मुकम्मल व्यवस्था बनाये रखने के निर्देश दिये है। महानवमी के अवसर पर जिलाधिकारी एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने निराश्रित गोवंश आश्रय में संरक्षित किये गये गोवंशों को केला और गुड़ भी खिलाया। उन्होंने मुख्य पशुचिकित्साधिकारी तथा सम्बंधित खण्ड विकास अधिकारी को निराश्रित गोवंश आश्रय स्थलों पर सभी आवश्यक व्यवस्थाओं चुस्त-दुरूस्त बनाये रखने का निर्देश दिया है। उन्होंने कहा है कि निराश्रित गोवंश आश्रय स्थल पर जल-जमाव इत्यादि नहीं होना चाहिए, प्रकाश की समुचित व्यवस्था रहे। इस अवसर अपर जिलाधिकारी प्रशासन वी0एस0 दुबे, मुख्य पशुचिकित्साधिकारी, सम्बंधित खण्ड विकास अधिकारी उपस्थित रहे।

जमुना नदी में एक व्यक्ति की डूबने से हुई मौत

लालापुर। क्षेत्र के माझीयारी गाँव में अवधेश शुक्ला उर्फ लखन के यहाँ कलकत्ता का बंगाली नाम का लड़का उम्र 38वर्ष कई वर्षो से रहता था जिसकी लास जमुना नदी से बीस घण्टे बाद बताया जा रहा है की अवधेश शुक्ला उर्फ लखन के घर का खेती किसानी करता था ग्रामीणों ने बताया की जमुना जी की तरफ पशु चराने गया था कुछ सन्धिग्ध कपडे दिखाई पड़े और कुछ चारवाह लोग बता रहे थे की जमुना जी में कोई डूबता दिखाई दिया है इसकी सुचना पुलिस को दी गई लालापुर पुलिस टीम सहित ग्रामीणों की मदत से माझी द्वारा खोजबीन देर रात तक की गई लेकिन कोई सुराग नहीं मिला भोर होते ही पुलिस टीम इम्तियाज अहमद,एसआई शशिकांत सिंह कांस्टेबल राकेश यादव, आलोक मौर्य द्वारा फिर से खोजबीन चालू हुआ सुबह जा के जमुना नदी से लास मिली पुलिस पंचनामा पर के पीएम को भेज दिया गया है।

सच्चे मन से ध्यान करने वाले को मिलती है मां की विशेष कृपा रावेंद्र तिवारी

जसरा। नवरात्रि के पावन पर्व पर दुखी यारों की सुनती है मां उक्त बाते प्रयाग संगम सेवा संस्थान के महामंत्री रावेंद्र तिवारी ने मां दुर्गा के पंडाल में दर्शन के दौरान कही नवरात्रि के पावन पर्व पर ग्रामसभा भीटा में उपस्थित मां दुर्गा के पंडाल में जाकर समाजसेवी रावेंद्र तिवारी ने पूजा अर्चना किया। रावेंद्र तिवारी ने कहा कि सच्चे मन से ध्यान करने वाले की मनोकामना को मां शेरावाली अवश्य पूर करती हैं हर दुखियों की कष्ट को हर लेती हैं जगत जनानी आदिशक्ति मां दुर्गा जी रावेंद्र तिवारी ने मां दुर्गा का जयकारा लगाते हुए कहा कि नवरात्रि देवी का विशेष पर्व है सच्ची भक्ति के साथ जो भी भक्त मां दुर्गे की पूजा-अर्चना करते हैं उन्हें आशीर्वाद स्वरूप मां दुर्गा की विशेष कृपा मिलती है मां के दरबार में आए हुए भक्तों की हर मनोकामना पूर्ण करती हैं मां दुर्गा दर्शन के पश्चात रावेंद्र तिवारी ने ग्राम वासियों व जनप्रतिनिधियों का भी संबोधित भी किया इस दौरान आयोजक प्रयाग संगम सेवा संस्थान अध्यक्ष सुधांशु मिश्रा, रामजी त्रिपाठी,आलोक पाठक,गोपालू शुक्ला, शिवेंद्र मिश्रा, सूरज यादव, सनी सिंह, छंगू दुबे, अनुराग शिवम आशुतोष यादव योगेश यादव इत्यादि लोग मौजूद रहे।

श्रीराम ने की सेतुबंध रामेश्वरम की स्थापना

नैनी। सार्वजनिक रामलीला समिति द्वारा श्रमिक बस्ती में आयोजित रामलीला मे बृहस्पतिवार को राम-सेना का लंका की ओर प्रयाण, विभीषण-शरणागति, राम-सेतु का निर्माण, सेतुबंध रामेश्वरम की स्थापना, अंगद- रावण संवाद की लीला का मनोहारी मंचन हुआ। राम के सक्षम नेतृत्व में वानर- भालुओं की सेना हुंकार भरते हुए लंका की ओर प्रस्थान करती है। इधर रावण के द्वारा तिरस्कृत विभीषण राम की शरण में आता है। राम समुद्र-जल से उसका राजतिलक कर देते हैं। समुद्र की सलाह पर राम नल और नील नामक वानरों को समुद्र पर सेतु निर्माण की जिम्मेदारी देते हैं। नल-नील भगवान राम की कृपा से राम-सेतु का बहुत कम समय में निर्माण कर देते हैं। राम समुद्र तट पर सेतुबंध रामेश्वरम की स्थापना कर भगवान शंकर से लंका विजय का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। अंगद राम-दूत बनकर लंका जाते हैं और अपने पराक्रम एवं राम के प्रति अटूट विश्वास से रावण सहित सभी राक्षसों का मान-मर्दन कर राम के पास वापस लौट आते हैं। दर्शक बीच-बीच में तालियां बजाकर कलाकारों का उत्साहवर्धन करते रहते हैं। हनुमान की भूमिका में विनोद यादव, जामवंत की भूमिका मे ऋषभ उपाध्याय एवं मेघनाद की भूमिका में गोलू तिवारी को दर्शकों ने सराहा। मंच परे रवींद्र सिंह, आयुष केशरवानी की भूमिका सराहनीय रही। रामलीला के प्रारंभ में कैबिनेट मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार नंद गोपाल गुप्ता नंदी ने भगवान राम के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर सभी को नवरात्रि एवं विजयादशमी की बधाई दी।

अखंड रामायण पाठ का शुभारंभ, श्रीमद् भागवत कथा का समापन

नैनी। अवंतिका कॉलोनी स्थित रामलीला पार्क में गुरुवार को अखंड रामायण पाठ का शुभारंभ किया गया। पाठ की पूणार्हुति शुक्रवार को संपन्न किया जाएगा। कार्यक्रम में बी बी दुबे, अवधेश पांडेय, राकेश त्रिपाठी, आर के शुक्ला, वी बी सिंह, एन बी सिंह, राधेश्याम तिवारी, दशरथ प्रसाद आदि लोग मौजूद रहे। वहीं दूसरी ओर अवंतिका कॉलोनी में ही स्थित मनकामेश्वर मंदिर में श्रीमद् भागवत कथा के अंतिम दिन कथा व्यास सत्यानंद महाराज ने कहा की भागवत कथा से मन का शुद्धिकरण होता है। इससे संशय दूर होता है और शांति व मुक्ति मिलती है। श्रीमद् भागवत कथा श्रवण से जन्म जन्मांतर के विकार नष्ट होकर प्राणी मात्र का लौकिक व आध्यात्मिक विकास होता है। इस दौरान फलाहारी महाराज, डा शत्रुघ्न, चंद्रकांत मंगरुलकर, वंश नारायण चौबे, टी एन सिंह, सी पी चौबे आदि लोग मौजूद रहे।

भजन सुनकर मंत्रमुग्ध हुए श्रोतागण

प्रतापपुर। विकास खण्ड के पुरेविक्रमशाह के प्राचीन चौरा माता की मंदिर को भक्तों द्वारा रंग-बिरंगी लाइटों से सजाया और सिंगार किया गया है।नवरात्र से ही भक्तगण सुबह-शाम आरती,पूजा-अर्चना और भक्ति भाव मे सराबोर है।इसी क्रम में शुक्रवार को भक्ति जागरण का कार्यक्रम रखा गया।जागरण में विश्वम्भरपुर की लोकप्रिय भजन गायिका बिबिता मिश्रा ने अपने भक्ति गीतों से उपस्थित श्रोतागणों को मंत्रमुग्ध कर झूमने पर मजबूर कर दिया।वही बिरहा गायक लक्ष्मण तराना ने भी भक्ति गीतों से माता रानी के दरबार मे अर्जी लगायी।इस अवसर आयोजक सत्या जायसवाल ग्राम प्रधान दयाराम बिंद सहित बड़ी संख्या में भक्तगण उपस्थित रहे।

श्री राम ने बाली का किया वध, हनुमानजी ने जलाई लंका

घूरपुर। जसरा बाजार स्थित श्री रामलीला नाट्य समिति पुरानी बाजार के मंच पर बुधवार की रात श्री राम सुग्रीव मित्रता,बाली वध और लंका दहन की लीला का अभिनय किया गया । वीर रस और करुण रस के बीच चले मंचन में दर्शक भाव विभोर हो गए और जय श्री राम की जयघोष करने लगे। मंच पर माता सीता की खोज करते पशु पक्षियों से जानकारी लेते राम के अभिनय को देख लोगों की आंखे डबडबा गई । श्रीराम अपने अनुज लक्ष्मण के साथ सुग्रीव के ठिकाने की ओर पहुंचे तो किष्किन्धा पर्वत पर बैठे सुग्रीव ने दोनो लोगों को देखा तो डर गया ।सुग्रीव ने हनुमानजी को दोनो का पता लगाने के लिए भेजा। हनुमान जी ब्राह्मण का भेष बनाकर राम और लक्ष्मण के पास पहुंचे ।श्री राम और हनुमान का संवाद चल रहा था और जैसे ही हनुमान को पता चला कि मेरे आराध्य श्री राम तो वह चरणों मे गिर गए और उठे और अपने कंधे पर बिठाकर सुग्रीव के पास पहुंचे । जहां दोनो के बीच मित्रता हुई और श्री राम ने बाली का वध करके सुग्रीव राज्य दिलाया, सुग्रीव और बाली के संवाद को देख सुन दर्शक मंत्र मुग्ध हुए। सीता की खोज के लिए निकले हनुमान ने लंका के राजा रावण के पुत्र का वध करके लंका जलाकर माता की सुधि भगवान श्री राम तक पहुंचाने के लिए निकल पड़े । दर्शकों ने बाली और सुग्रीव तथा राम लक्ष्मण और हनुमानजी के अभिनय को देख दर्शकों ने पुरस्कृत भी किया।

कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच मां-बेटी का हुआ अंतिम संस्कार

मां बेटी का शव पहुंचते ही परिजनों व ग्रामीणों में मचा कोहराम

मृतक के परिजनों को सांत्वना देती अपना दल (कमेरावादी) की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पल्लवी पटेल

अखंड भारत संदेश

नैनी। औद्योगिक क्षेत्र के ग्राम सभा चक पूरे खुर्द के मजरा (मियां का पूरा) गांव में मंगलवार रात बदमाशों के द्वारा धारदार हथियार से गला काटकर की गई मां- बेटी की हत्या के बाद शव का पोस्टमार्टम करा कर गुरुवार शाम पुलिस की कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच गांव में ही स्थित उनकी पुश्तैनी जमीन में गड्ढा खुदवा कर अंतिम संस्कार किया गया।

बता दे, कि मंगलवार की रात ग्राम सभा चक पूरे खुर्द के मजरा (मियां का पूरा) गांव में कुछ बदमाशों ने छत के रास्ते से घर में घुसकर बजरंग बहादुर पटेल उर्फ नचकऊ (50) की पत्नी प्रेम वती देवी (45) और बेटी तनु (18) की धारदार हथियार से गला काटकर हत्या कर दी। बदमाशों ने बजरंग बहादुर पटेल उर्फ नचकऊ को भी धारदार हथियार से हमला कर घायल कर दिए। जिनका अस्पताल में चल रहा है। पुलिस ने मां- बेटी के शव को कब्जे में लेकर विधि कार्रवाई करते हुए पोस्टमार्टम के लिए मर्चरी भेज दिए थे। गुरुवार शाम तकरीबन 3:30 बजे पोस्टमार्टम कराकर जैसे ही मां और बेटी की शव गांव में पहुंचा। इसके पहले गांव में सैकड़ों की संख्या में लोग इकट्ठे थे। मां- बेटी के शव पहुंचते ही परिवारीजन में रोना पीटना शुरू कर दिया। परिवारीजनों के द्वारा घटना में नामजद अभियुक्तों की 48 घंटे के अंदर गिरफ्तारी, 25-25 लाख रुपए का मुआवजा, सड़क के किनारे जमीन, शस्त्र लाइसेंस एवं घायल बजरंग बहादुर पटेल की निःशुल्क इलाज कराए जाने की मांग को लेकर अड़े हुए थे। उक्त मांगों को पूरा न होने तक शव का अंतिम संस्कार करने से इंकार कर रहे थे। पुलिस अधिकारियों के द्वारा यह जानकारी उप जिलाधिकारी करछना को दी गई। जानकारी मिलते ही उप जिलाधिकारी करछना विनोद कुमार पांडेय अपने मातहतों के साथ मौके पर पहुंचे। परिवारीजनों के द्वारा उनको 5 सूत्रीय मांग पत्र सौंपा गया। जिस पर उनके द्वारा 5 लाख रुपए की सहायता राशि मुहैया कराने, 48 घंटे के अंदर नामजद अभियुक्तों की गिरफ्तारी करवाने, 2 बिस्वा जमीन उपलब्ध कराने, परिवार को शस्त्र लाइसेंस दिलाने एवं परिवार की सुरक्षा व्यवस्था का आश्वासन मिलने पर परिवारी जनों के द्वारा मां-बेटी के शव का गांव में ही स्थित उनकी पुश्तैनी जमीन में गड्ढा खोदवा कर अंतिम संस्कार किया गया। वहीं दूसरी ओर अपना दल (कमेरावादी) की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पल्लवी पटेल दलबल के साथ पहुंची और मृतक के परिजनों से मुलाकात कर सांत्वना प्रकट की।

शासन से मदद के लिए करछना एसडीएम से गुहार लगाते हुए लोग

मांडा में टूरिस्ट बस-ऑटो में जोरदार टक्कर, एक की मौत

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। दर्शनार्थियों को लेकर टूरिस्ट बस गोरखपुर से चित्रकूट को जा रही थी। रास्ते मे ही ऑटो से आमने सामने जोरदार टक्कर हो गई। इसमे ऑटो चालक की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि तीन लोगों को गम्भीरावस्था में इलाज के लिए अस्पताल में दाखिल कराया गया है। सूचना पर रोते बिलखते मृतक के परिजन भी पहुच गए। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मिली जानकारी के मुताबिक दर्शनार्थियों को लेकर गोरखपुर से चित्रकूट को जा रही टूरिस्ट बस गुरुवार की शाम प्रयागराज-मिजार्पुर राजमार्ग स्थित मांडा थाना क्षेत्र के हेमपूर पहुचीं थी। इस दौरान मांडा रोड़ से सवारियों को लेकर मिजार्पुर को जा रही ऑटो से आमने सामने जोरदार टक्कर हो गई। इसमें विंध्याचल थाना क्षेत्र के शिवपुर निवासी रामजीत पाल(32)ऑटो चालक मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। जबकि अन्य तीन बाइक सवार बुरी तरह घायल हो गए। हादसा इतना भयावह रहा कि ऑटो के परखच्चे उड़ गए। स्थानीय लोगों की मदद से सभी को सुरक्षित बाहर निकाला गया और पुलिस को घटना की जानकारी दी गई। सूचना पर भारतगंज पुलिस चौकी प्रभारी आशीष कुमार राय दलबल सहित घटनास्थल पहुचें। पुलिस ने तीनों घायलों को तत्काल प्राथमिक उपचार हेतु अस्पताल भेजा। वहीं मृतक के परिजनों को सूचना देते हुए पुलिस ने शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम हेतु शहर भेज दिया, साथ ही घटना में शामिल सभी गाड़ियों को कब्जे में लिया। मृतक के बड़े भाई अमरजीत पाल के मुताबिक मृतक पांच भाइयों में दूसरे नम्बर पर था। ऑटो चलाकर परिवार की आजीविका चलाता था। इस घटना को लेकर पत्नी व दो बच्चों सहित परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हो गया है।

विंध्यवासिनी मंदिर से दर्शन कर प्रयागराज के लिए निकले केशव प्रसाद मौर्य का मेजा रोड में भाजपाइयों ने किया स्वागत

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। गुरुवार को मेजारोड चौराहे पर सूबे के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य का भाजपाईयों ने माल्यार्पण कर जोरदार स्वागत किया।

बता दें कि उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य मिजार्पुर से प्रयागराज की ओर जा रहे थे। विंध्याचल से मां विंध्यवासिनी मंदिर से दर्शन कर प्रयागराज के लिए निकले उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य का जगह-जगह जोरदार स्वागत किया गया। मेजारोड चौराहे पर जिला मंत्री कृष्णदास उर्फ नाथु गुप्ता के नेतृत्व मे पार्टी कार्यकताओं को संबोधित करते हुए उपमुख्यमंत्री ने कहा कि मेजा मेरे लिए कोई नया नहीं है यहीं से हमने संघर्ष की शुरूआत की थी। मेजा विधानसभा को मैं भलीभांति जानता हूं यह मेरे लिए नया नहीं है। सिरसा में पक्का पुल निर्माण की बात करते हुए जल्द ही पुल का निर्माण कराए जाने की बात कही। इस क्षेत्र को मैं पिछले कई वर्षों से भली-भांति जानता हूं। सिरसा हंडिया को जोड़ने के लिए पुल निर्माण की बात चल रही है। भाजपा सरकार में सभी का विकास हुआ। सपा-बसपा केवल वादे करते हैं एक चुनाव में वादा करते हैं तो दूसरे चुनाव में आश्वासन देते हैं। भाजपा सरकार करके दिखाती है। उप मुख्यमंत्री का स्वागत करने के लिए मेजा विधायक नीलम करवरिया ने मांडा से अगवानी किया और काफिले के साथ साथ रही। इस मौके पर मेजा विधायक नीलम करवरिया, भाजपा नेता अशोक सिंह, ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि गंगा प्रसाद मिश्रा, वरिष्ठ भाजपा नेता जय शंकर पांडे, मुन्नन शुक्ला, शंकरलाल केसरवानी, विजयकांत मिश्रा,, व्यापार मंडल अध्यक्ष पप्पू उपाध्याय समाजसेवी सिद्धांत तिवारी सुशील केशरी, पुष्कर तिवारी, रामकृष्ण जयसवाल, नीरज तिवारी, नेहरू कनौजिया, दिनेश गुप्ता, देवीदीन गुप्ता (लाला) शिवानंद शुक्ला, मनीष तिवारी, नागर गुप्ता, कामेश्वर पटेल, जगत नारायण, कमलेश पांडे, महेश तिवारी, श्याम राज यादव, अंशुमान शुक्ला, पीके उपाध्याय, मारुति तिवारी, पप्पू जेरा, राहुल द्विवेदी, धीरज दुबे, शैलेश पांडे, मनीष तिवारी, रामशिरोमणि तिवारी, राजेंद्र मिश्रा, राजेश तिवारी हरि कांत पांडे आदि सैकड़ों भाजपाई रहे।

उपमुख्यमंत्री का स्वागत करते भाजपा कार्यकर्ता।

संपर्क मार्ग बनने पर ग्रामीणो खुशी जाहिर की

करछना के बरांव गांव की पटेल बस्ती में संपर्क मार्ग बनने से लोगों में खुशी

करछना। विकास खंड के अंतर्गत ग्राम पंचायत बराव में विगत कई वर्षों से पटेल समुदाय के मोहल्ले में जर्जर हो चुके संपर्क मार्ग को वर्तमान प्रधान बजरंगी द्वारा संपर्क मार्ग को मरम्मत कराकर बस्ती में आने जाने का रास्ता बहाल कराया जिसके चलते लोगों को आवागमन में हो रही असुविधा से निजात मिल गई इसके बन जाने से पटेल बिरादरी के पचास घरो के आवागमन का रास्ता सुलभ हो गया प्रधान द्वारा कराए गए इस कार्य से ग्रामीणों ने खुशी जाहिर करते हुए प्रधान के प्रति आभार व्यक्त किया प्रधान बजरंगी के द्वारा कराए गए कार्य से गांव के राजकुमार दूधनाथ चिंतामणि पप्पू सुरेंद्र कुमार अभय राज बनवारीलाल श्यामसुंदर राजकरण महानाराय छोटे लाल शंकर लाल, चंद्रमा प्रसाद आदि ने खुशी जाहिर की हैं।

जबरन जमीन पर कब्जा करने वालों को पुलिस ने किया गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

करछना। तहसील क्षेत्र के बरांव गांव निवासी ललिता देवी पत्नी दुर्गा प्रसाद गुरुवार को अपनी भूमि धरी जमीन पर मकान का निर्माण कार्य करा रहा थी कि, पडोस गांव के दो दर्जन से अधिक दंबग लोग महिलाओं के साथ लाठी डंडे से लैस होकर जबरन ललिता देवी पत्नी दुर्गा प्रसाद की जमीन पर कब्जा कर दिवार बनाने लगे, विरोध करने पर मार पीट पर अमादा हो गयें, दबंगो की की दबंगयी और बड़ी घटना की अनहोनी को देखते हुए पीडित पंक्ष ने करछना पुलिस को सूचना दी, तत्काल मौके पर पहुंची पुलिस ने चार लोगों को गिरफ्तार कर लिया जिसमें एक पूर्व प्रधान शामिल हैं, और शेष दर्जन भर से अधिक लोग पुलिस को देख कर भागने में सफल रहे हैं ।पुलिस ने चार लोगों को नाम जद और आधा दर्जन लोगों के अज्ञात में मामला दर्ज कर पकडे गए लोगों को जेल भेज दिया ।बतादेकि उक्त बरांव गांव निवासी ललिता देवी पत्नी दुर्गा प्रसाद की छः विघ्वा जमीन का बैनामा कराया था जिसकी तहसील प्रशासन द्वारा पक्की पैमाइश करा कर पीडित महिला की ललिता देवी को न्याय दिलाते हुए फैसला किया गया था, जिसको लेकर पडोसी दंबग लोग उक्त भूमि को कब्जा करने की कोशिश कर रहे थे।

दंबगो द्वारा जबरन मकान पर कब्जा करते हुए

अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत दूसरा घायल

घूरपुर। इलाके के इरादतगंज हाईवे के ओवर ब्रिज पर अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार एक युवक की मौत हो गई जबकि दूसरा युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। सूचना पर परिजन भी रोते बिलखते घटना स्थल पर पहुंचे। पुलिस ने घायल को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया और मृतक युवक के शव को पीएम के लिए भेजा। घूरपुर के बादलगंज गांव निवासी सत्यम पटेल (18) पुत्र लवकुश पटेल बुधवार की देर रात लालापुर बसाहरा गांव निवासी विकास पटेल (19) के साथ बाइक से घर से इरादतगंज बाजार किसी काम से जा रहे थे कि जैसे ही इरादतगंज ओवर ब्रिज के रसगुल्ला मार्केट के पास पहुंचे कि शहर से घूरपुर की तरफ जा रही तेज रफ्तार ट्रक ने बाइक में टक्कर मार दी जिससे बाइक सवार दोनो युवक सड़क पर गिर गए। जिसमे सत्यम पटेल की मौके पर ही मौत हो गई।

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरा डॉ0 सी वी रमन यूनिवर्सिटी बिलासपुर , वर्ष 2012 अनुक्रमांक 210112365 बैचलर ऑफ एजुकेशन का अंकपत्र व प्रमाण पत्र वास्तव में कहीं खो गया है।

सूर्य नाथ त्रिपाठी पुत्र कामेश्वर नाथ त्रिपाठी पता ओठगी तरहार लालापुर प्रयागराज।

5100 दीपों की दीपांजलि से हुई महाआरती

अखंड भारत संदेश

बिहारगंज, प्रतापगढ़। सदर तहसील के बाजार बिहारगंज में दुर्गा पूजा समिति द्वारा शुक्रवार महाष्टमी को नवल दीपांजलि का कार्यक्रम आयोजित किया गया। आयोजक आदर्श जायसवाल और मुकेश जायसवाल द्वारा दुर्गा पूजा समिति में माँ अम्बे की मूर्ति स्थापित करवाई गई जिसमें 5100 दीपों की श्रखंला सजाई गई। इस दौरान प्रभु श्री राम का दिव्य चित्र बनाया गया। इस दौरान समिति व आस पास गांव के सभी लोगो ने माता अम्बे रानी की आरती की व प्रार्थना की। आयोजक मुकेश व आदर्श ने बताया कि सभी ने अपनी इच्छानुसार दीपकों को दान किया। ज्योत से ज्योत जलाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो की धुन जैसे ही बजी मानो पूरा आकाश बिहारगंज की धरती पर उतर गया हो। चारो तरफ दीपक की रोशनी बिखर गई थी। पंडाल की विशेषता है कि हर धर्म के लोग मिलकर यहां काम करते हैं और उन्हें बड़ा गर्व होता है। और ऐसी गंगा जमनी तहजीब वाली धरती को वो नमन करते हैं। कार्यक्रम को भव्यता देने के लिए राजेश जायसवाल, महेश जायसवाल, टिंकू जायसवाल, प्रेम शंकर सोनी, हर्ष जायसवाल, अमित जायसवाल, अभय गुप्ता, अनमोल, सूरज,नन्दलाल चौरसिया, डॉ बंगाली, अभिषेक जायसवाल, पननलाल जायसवाल, संजय, शिव, मनीष, लाल बहादुर, अभय, मिट्ठू, प्रदीप, रवि विपिन, दीपक, डाउ, लल्लू, रुचिकर जायसवाल, प्रमोद मिश्र, पप्पू जायसवाल आदि लोगों का सहयोग रहा।

बिहारगंज बाजार में हुआ नवल दीपांजलि कार्यक्रम

माता मइया धाम में विशाल भंडारा हुआ सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। नवरात्रि के नवमी के दिन गुरुवार को परियावां माता मइऱ्या धाम में भक्तों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। दर्शन करने वालों को तांता लगा रहा। माता मैया देवी के जलहरी कुंड में जलहरी भरने के लिए महिलाओं की भीड़ लगी रही। उसके बाद लगभग चार बजे सामूहिक हवन का समापन शास्त्री राजेन्द्र प्रसाद मिश्रा ने कराया। उसके बाद विशाल भण्डारा का आयोजन नव दुर्गा कमेटी के तत्वावधान में किया गया जिसमें छोटी छोटी कन्याओं को हलवा पूड़ी सब्जी व दक्षिणा देकर भंडारे का शुभारंभ किया गया जो देर शाम तक चलता रहा। शुक्रवार को दुर्गा पण्डाल में रखी मां दुर्गा, गणेश, लक्ष्मी, कार्तिके, सरस्वती, की प्रतिमाओं को ट्रैक्टरों पर रखकर गाजा बाजा के साथ पैदल परियावां, नवाबगज, आलापुर व कालाकांकर गंगातट के लिए विसर्जन यात्रा निकाली जाएगी।

15 लाख की लागत से शहर में बनेगा प्रेस क्लब भवन

लीला पैलेस में पदाधिकारियों को दिलाई गई शपथ

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। योगी सरकार के कैबिनेट मंत्री डा0 महेन्द्र सिंह ने प्रेस क्लब भवन निर्माण के लिये दस लाख रुपये देने की घोषणा की है। रानीगंज विधायक धीरज ओझा ने अपनी निधि से पांच लाख रुपये और सांसद संगम लाल गुप्ता ने जमीन उपलब्ध कराने का भरोसा दिलाया है।

कैबिनेट मंत्री ने तीन माह में भवन निर्माण कराने के लिये सांसद और रानीगंज विधायक को जिम्मेदारी सौंपी है। शहर के लीला पैलेस में बुधवार को नवनिर्वाचित प्रतापगढ़ प्रेस क्लब के पदाधिकारियों के शपथ ग्रहण समारोह में प्रतिभाग करने पहुंचे जल शक्ति मंत्री डा0 महेन्द्र सिंह ने अध्यक्ष अजीत प्रताप सिंह, महामंत्री अनूप उपाध्याय के पूरी टीम को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। इस मौके पर सीओ सिटी अभय पाण्डेय, एसडीएम मोहनलाल गुप्ता, शिव प्रकाश मिश्र सेनानी, भाजपा जिलाध्यक्ष हरिओम मिश्र, डा0 मनीष सिंह आदि मौजूद रहे।

क्षेत्राधिकारी नगर को उद्योग व्यापार मण्डल ने किया सम्मानित

सीओ सिटी ने असहाय व्यक्ति की समस्या का किया था समाधान

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल व रामलीला समिति के पदाधिकारियों की एक बैठक जिलाध्यक्ष राजेन्द्र केसरवानी के प्रतिष्ठान पर उनकी अध्यक्षता में संपनन्‍ हुई जिसमें दोनों संस्था के पदाधिकारियों व व्यापारियों ने पुलिस क्षेत्राधिकारी नगर अभय कुमार पांडे को एक असहाय और गरीब व्यक्ति की मदद करने और उनकी समस्या का सम्मानजनक ढंग से समाधान करने पर सम्मानित किया गया।

सीओ के इस उत्कृष्ट व सराहनीय कार्य के लिए व्यापार मंडल ने प्रशंसा की। इस दौरान व्यापारी वर्ग की समस्त समस्याओं को अपने संज्ञान में लेकर त्वरित समाधान करने व सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने के संबंध में उपस्थित सभी पदाधिकारियों एवं व्यापारी भाइयों ने सीओ सिटी को माला पहनाकर उनका स्वागत करते हुए स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया और उनके उज्जवल भविष्य की कामना किया।

बैठक में मुख्य रुप से लखन लाल बाबा, कृष्ण मोहन केसरवानी, दूधनाथ सोनी, सतीश चंद्र सोनी राहुल केसरवानी, दिनेश प्रताप सिंह दिनन्‍, विपिन गुप्ता, राहुल गुप्ता, सुनील जयसवाल, सुरेश केसरवानी, मुनन सोनी, सरदार कुलविंदर सिंह, सरदार वशिन्दर सिंह, सरदार महेंद्र सिंह, फारूक अहमद, शकील अहमद, राहुल श्याम गुप्ता, पप्पू चौरसिया, अमित केसरवानी, संजय केसरवानी, मीडिया प्रभारी सतीश चंद्र सोनी आदि मौजूद रहे।

रामलीला मैदान रावण दहन के लिये तैयार

एडीएम, एसडीएम व ईओ ने किया रामलीला मैदान का निरीक्षण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रयागराज-अयोध्या राजमार्ग पर नगर में चौक के आगे रामलीला मैदान में राम-रावण युद्ध के लिये मैदान तैयार हो चुका है जहां रावण का 50 फिट का पुतला शुक्रवार को दहन होगा। रावण के पुतला के स्थान पर तथा राम रथ मार्ग की साफ-सफाई कर दी गई है।

गुरुवार को अंतिम दिन रामलीला मैदान में 100 कर्मचारी जेसीबी, लोडर, ट्रैक्टर आदि लेकर लगे हुए थे। इसके अलावा पीडब्ल्यूडी विभाग का लोडर भी सड़क को समतल करने में जुट रहा। पूर्वान्ह में एडीएम, एसडीएम सदर मोहनलाल गुप्ता ने रामलीला मैदान की व्यवस्था का निरीक्षण किया। अपरान्ह में नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह निरीक्षण करने पहुंचे थे। अधिशाषी अधिकारी ने रामलीला मैदान व मूर्ति विसर्जन स्थल की व्यवस्था देखकर संतोष जताया। ईओ जब विसर्जन स्थल पहुंचे तो वहां विसर्जन स्थल के प्रभारी पंकज लगे थे। गड्ढों में साफ पानी भरा जा रहा था। मूतिऱ्यों का विसर्जन इसी स्थल पर होगा। यहां 50 नगर पालिका के कर्मचारी आज भी इस व्यवस्था में लगे थे। बता दें कि कल दशहरे के दिन अधिकांश मूतिऱ्यों का विसर्जन बेल्हा देवी के समीप इसी विसर्जन स्थल पर होगा। यह जानकारी देते हुए नगर पालिका के सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह ने बताया कि अध्यक्ष प्रेमलता सिंह व अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह के निर्देशन में विगत एक सप्ताह से नगर पालिका के कर्मचारी सफाई में लगे रहे जिससे अब रामलीला मैदान साफ-सुथरा दिखाई देने लगा है।

शिक्षक के निधन पर जताया गया शोक

लालगंज, प्रतापगढ़। स्थानीय ब्लाक के प्राथमिक विद्यालय सराय जगत डिहवा मे तैनात शिक्षक कैलाश सरोज के आकस्मिक निधन पर बुधवार को साथियों मे शोक छा गया। शिक्षक कैलाश का मंगलवार की देर शाम हृदयगति रूकने से अचानक निधन हो गया। बीआरसी भवन मे साथी शिक्षको की बैठक मे दिवंगत कैलाश को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। शोकसभा की अध्यक्षता प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष नवीन शुक्ला ने किया। इस मौके पर मधुलिका शुक्ला, संजय गुप्ता, शैलेश यादव, हर्ष नारायण वर्मा, हीरालाल, सुशीला, अम्बरीश मिश्र, अभय मिश्र, प्रमोद कुमार, मनजीत कुमार, कुलदीप, सचिन, आशीष मिश्र, दिनेश तिवारी, प्रदीप कुमार, अखिलेश प्रताप, मनोज यादव, अजय तिवारी, अभय सिंह, उदयप्रताप सिंह, अरविंद कुमार आदि रहे। इसके बाद शिक्षको का एक प्रतिनिधिमण्डल नवीन शुक्ला के नेतृत्व मे दिवंगत शिक्षक के घर पहुंचा और परिजनों से मिलकर संवेदना जताई।

विधिक सहायता के लिए डोर टू डोर किया गया संपर्क

पट्टी, प्रतापगढ़। आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण नीरज कुमार त्रिपाठी के निर्देश पर उपजिलाधिकारी पट्टी डी पी सिंह के मार्गदर्शन व तहसीलदार पट्टी श्रद्धा पाण्डेय के संयोजन में पीएलवी जिला विधिक सेवा प्राधिकरण राम प्रकाश पाण्डेय एवं क्षेत्रीय लेखपाल दीनानाथ वर्मा द्वारा पट्टी तहसील क्षेत्र के ग्राम बाभनपुर में लोगों को निशुल्क विधिक सहायता एवं कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी गई। इस अवसर पर निशुल्क विधिक सहायता से संबंधित पंपलेट का वितरण भी किया गया।

विषाक्त मिठाई खाने से तीन बच्चे बीमार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नवरात्रि की अष्टमी व्रत में मिठाई खाकर तीन भाई बहन बीमार हो गये। विषाक्त मिठाई खाने के बाद हालत बिगड़ने पर आननफानन में स्थानीय सीएचसी में भर्ती कराया गया है। बताया जाता है कि पड़ोस की डेयरी से लाई गई मिठाई को बच्चों ने खाया था। बता कि पट्टी कोतवाली क्षेत्र के रीठी गांव निवासी अधिवक्ता ज्ञानेंद्र सिंह के बेटे और दो बेटियों की मिठाई खाने से हालत बिगड़ी है। सभी का इलाज स्थानीय सीएचसी में चल रहा है।

नवमी पर घर-घर हुआ हवन-पूजन, मंदिरों में उमड़ी भीड़, देवी मां से कोरोना मुक्ति की हुई सामूहिक प्रार्थना

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। आज नवरात्र की नवमी पर बेल्हा देवी व अन्य देवी मंदिरों के अलावा घर-घर में हवन-पूजन हुआ तथा देवी की आराधना की गई। गुरुवार की शाम तक ही नवमी है। इसके बाद दसमी में लग जाएगी इसलिये नवमी पर लोगों ने नौ दिन का अपना व्रत का समापन भी आज की शाम कर दिया।

बेल्हा देवी मंदिर में हवन-पूजन करने वालों की भीड़ दिखाई पड़ी। वैसे तो पूरे नवरात्र में बेल्हा देवी मंदिर में दर्शनाथिऱ्यों की भीड़ रही लेकिन आज बड़ी संख्या में लोग हवन करने भी आए थे। कुछ स्थानों पर कन्याओं को भोज कराया गया। उधर लालगंज प्रतिनिधि के अनुसार नगर के पुरातन दुर्गा पूजा पाण्डाल मे अष्टमी की रात भक्तों ने मां से कोरोना मुक्ति को लेकर भी सामूहिक प्रार्थना की। सेठ पारसनाथ कौशल स्मृति सेवा संस्थान के बैनरतले कोरोना काल मे योगदान देने वाले लोगों को सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम के संयोजक जय कौशल ने साहित्यकार अंजनी अमोघ, अनूप प्रतापगढ़ी, लवलेश यदुवंशी, आचार्य रामअवधेश मिश्र, समाजसेवी विजय मिश्र बॉबी, प्रीतेन्द्र ओझा, अधिवक्ता ज्ञानप्रकाश शुक्ला, व्यापार मण्डल के संरक्षक डा. रमाशंकर शुक्ला, शिक्षक एसएन त्रिपाठी, वरिष्ठ पत्रकार बाबा नरेन्द्र ओझा, हरकेश विश्वकर्मा, सभासद रमेश जायसवाल, सभासद पप्पू जायसवाल, सदाशिव जायसवाल, कन्हैयालाल पटवा, अवनीश मिश्र को अंगवस्त्रम तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

कार्यक्रम का संचालन साहित्यकार लवलेश यदुवंशी ने किया। आभार प्रदर्शन सह संयोजक अनिल शुक्ला राजा ने किया। कार्यक्रम के दौरान नन्हें-मुन्हें बच्चों ने भजन प्रस्तुत कर समां बांधी। इस मौके पर बब्लू पटवा, शुभम जायसवाल, दयाशंकर पटवा, चंदन कौशल, कृपाशंकर पटवा, सुधांशु जायसवाल, सुनील जायसवाल, संदीप सोनी, बृजलाल गुप्ता आदि रहे।

दो पक्षों में हुई मारपीट, नौ घायल

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। दो पक्षों में जमकर मारपीट, लाठी डंडे और गोलियां से दोनों पक्षों से नौ लोग घायल हो गये। सभी घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र ले जाया गया जहां से चार लोगों को मेडिकल कालेज के लिये रेफर कर दिया गया। इस दौरानतीन महिलाएं गंभीर रुप से घायल हैं। बता दें कि संग्रामगढ़ थाने के फतेहशाहपुर गांव में दो पक्षों के बीच जमकर मारपीट हो गई। इस दौरान दोनों पक्षों से नौ लोग घायल हो गये। सभी को अस्पताल ले जाया गया है। मामले की तहरीर पुलिस को दी गई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

ट्रेन से कटकर सफाईकर्मी की मौत

प्रतापगढ़। टेड्डन से कटकर एक सफाई की मौत हो गई। मालगाड़ी गुजरने से उसके शरीर के दो टुकडे़ हो गये थे। आसपास के लोगों ने पुलिस को सूचना दी तो पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर अन्त्य परीक्षण के लिये भेजा।

देवी जागरण के कार्यक्रमों मे माता के जयकारे मे भावविभोर हुए श्रद्धालु

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। शारदीय नवरात्र को लेकर अष्टमी की रात विभिनन्‍ पाण्डालों मे देवी जागरण के आयोजन किये गये। आयोजन मे श्रद्धालु नर-नारी देर रात तक माता के जयकारे मे भावविभोर दिखे। नगर पंचायत के मनीपुर चंदापुर मे दुर्गा मंदिर के प्रागंण मे हुए देवी जागरण मे चलो बुलावा आया है माता ने बुलाया है जैसे देवी भजन पर श्रद्धालुओं को माता रानी की भक्ति मे मंत्रमुग्ध देखा गया। यहां लोक कलाकारों तथा ग्रामीण प्रतिभाओं ने देवी आराधना के गीत संगीत का जलवा बिखेरा। नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी तथा क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना के मीडिया प्रभारी ज्ञान प्रकाश शुक्ला भी कार्यक्रम मे शामिल हुये। संचालन आचार्य दिवाकर नाथ शुक्ला ने किया। आयोजन मे अनिल त्रिपाठी महेश, जमुना प्रसाद तिवारी, दयाशंकर तिवारी, प्रदीप मिश्र, आचार्य प्रमोद मिश्र, विभाकर शुक्ला, मुनन शुक्ला का भी सराहनीय योगदान दिखा। इधर पण्डित का पुरवा वार्ड मे सोनू मिश्र के संयोजन मे हुए देवी जागरण मे भी देर रात तक श्रद्धालु मां की भक्ति मे रमे दिखे। हरकिशन दीवाना के सांस्कृतिक दल ने देवीगीत के साथ मनमोहक धार्मिक झांकियो की भी प्रस्तुति देकर लोगों का मन मोह लिया। यहां उमाशंकर मिश्र, राजाराम मिश्र, रामफेर मिश्र, मुननलाल मिश्र, श्यामशंकर, शिवशंकर, हरिशंकर बृजेश द्विवेदी, संजय द्विवेदी का भी सराहनीय योगदान दिखा। इस मौके पर विनय पाण्डेय, शास्त्री सौरभ, शिवम मिश्र आदि रहे।

हजारों की नकदी समेत लाखों के जेवरात उठा ले गये चोर

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। लालगंज कोतवाली क्षेत्र के नयापुरवा पड़री गांव मे एक बंद घर मे रखी नकदी, सामान व खाद्यानन्‍ अज्ञात चोर उठा ले गये। घटना की जानकारी होने पर पीड़ित ने बुधवार को नामजद तहरीर दी है। लालगंज कोतवाली के नयापुरवा पड़री गांव निवासी रामकृपाल गुप्ता परिवार के साथ मुम्बई मे रहते है। यहां गांव मे उनके मकान मे ताला बंद है। मकान की देखरेख पडोसी अभिषेक जायसवाल करते है।

पीडित रामकृपाल ने बुधवार को पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि बीते सात अक्टूबर की रात अज्ञात चोर उसके बंद घर मे छत के रास्ते घुस गये और कमरे मे रखे पचास हजार की नकदी व लाखों के जेवरात घर मे रखे राशन, टीवी, फ्रिज आदि कीमती सामान उठा ले गये। पीड़ित रामकृपाल के मुताबिक पडोसी अभिषेक ने चोरी करके भागते हुए गड़वातारा क्षेत्र के एक व्यक्ति को देखा और पहचान लिया। पडोसी अभिषेक ने पीड़ित को घर मे चोरी हो जाने की सूचना दी। इस पर पीड़ित मुम्बई से यहां गांव पहुंचा और बुधवार को नामजद आरोपी के खिलाफ तहरीर दी। कोतवाल कमलेश पाल का कहना है कि मामले की जांच कराकर उचित कानूनी कार्रवाई की जायेगी।

खबर संक्षेप

कोरोना के दृष्टिगत की गई कार्यवाही

कौशाम्बी। जिले में कोरोना के दृष्टिगत व सरकार द्वारा जारी गाइडलाइन का उलंघन करने वाले के विरुद्ध सघन चेकिंग की गई एंव चेकिंग के दौरान दो पहिया व चार पहिया वाहनों को चेक किया गया जिसमें 171 वाहनों का ई चालान किया गया व 7 वाहनों 4000 रुपए सम्मन शुल्क वसूल किया गया व बिना मास्क लगाए घूम रहे 19 व्यक्तियों से 2450 रुपए जुमार्ना वसूला गया।

वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना कोखराज पुलिस द्वारा वारण्टी अभियुक्त रामविशाल पुत्र जगदेव निवासी झंझागण मजरा चमन्धा थाना कोखराज को गिरफ्तार कर कार्यवाही के पश्चात न्यायालय भेज दिया है।

गायत्री परिवार द्वारा किया गया प्रसाद वितरण

कौशाम्बी। गायत्री परिवार शान्तिकुंज हरिद्वार के तत्वाधान में प्रज्ञा अभियान के तहत दुर्गा पंडालों में प्रसाद का वितरण किया गया है मूरतगंज ब्लॉक क्षेत्र में मां दुर्गा पूजा पंडाल में गायत्री परिजन डॉ. ज्ञानेश्वर त्रिपाठी के मार्गदर्शन में युवा कार्यकर्ता सुधीर श्रीवास्तव के द्वारा विभिन्न मां दुर्गा पंडालों में निःशुल्क प्रज्ञा अभियान के तहत प्रज्ञा पाछिक प्रसाद का वितरण का क्रम जारी रखा गया है कार्यक्रम के तहत प्रतिदिन सुबह से कार्यकताओं द्वारा प्रसाद का वितरण भक्तों के बीच किया जाता है।

गर्दन में प्रहार कर अधेड़ की हत्या

जानकारी मिलते ही घटनास्थल पर पहुंचे पुलिस आला अधिकारियों ने किया मौका मुआयना

पोस्टमार्टम से लाश आने के बाद हत्यारो की गिरफ्तारी की मांग को लेकर सड़क पर लाश रखकर ग्रामीणों ने किया चक्का जाम

अखंड भारत संदेश

बीच सड़क पर शव रखकर चक्काजाम करते परिजन

अधेड़ की हत्या की जानकारी मिलते ही घटनास्थल पर जुटे ग्रामीण।

कोखराज कौशांबी। कोखराज थाना क्षेत्र के बिसारा ग्राम में बीच गांव घर के बाहर चारपाई में सो रहे एक अधेड़ के गर्दन में कुल्हाड़ी से ताबड़तोड़ वार कर उसे मौत के घाट उतार दिया गया है जानकारी मिलते ही मौके पर ग्रामीणों का मजमा लग गया है परिजनों में चीख-पुकार मच गई है मामले की जानकारी मिलते ही स्थानीय थाना पुलिस के साथ-साथ पुलिस आला अधिकारियों ने भी घटनास्थल का निरीक्षण कर स्थिति का जायजा लिया है मौके पर पहुंची पुलिस ने अधेड़ के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है जैसे ही पोस्टमार्टम से शव वापस गांव लौटा मंझनपुर मूरतगंज मार्ग के बाबा चौराहे पर शव रखकर ग्रामीणों ने सड़क जाम कर दिया है सड़क जाम की जानकारी मिलते ही फिर दोबारा पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी भारी पुलिस फोर्स के साथ घटनास्थल पर पहुंचे हैं और ग्रामीणों को समझा-बुझाकर हत्यारों की जल्द गिरफ्तारी किये जाने का आश्वासन देकर सड़क का जाम खाली करवाया है हत्यारे के नाम का प्रयास ग्रामीण लगा रहे हैं लेकिन किसी नतीजे पर अभी ग्रामीण और पुलिस नहीं पहुंच सकी हैं। घटनाक्रम के मुताबिक कोखराज थाना क्षेत्र के बिसारा गांव निवासी देवराज उर्फ. मोटका प्रजापति उम्र लगभग 42 वर्ष पुत्र कृपालु का घर गांव के बीच में है बीती रात वह अपने घर के बाहर बरामदे में चारपाई डालकर सो रहा था आधी रात को हमलावरों ने देवराज के गर्दन में कुल्हाड़ी से ताबड़तोड़ वार कर दिया है जिससे घटनास्थल पर तड़प तड़प कर उसकी मौत हो गई है देवराज की मौत की जानकारी मिलते ही गांव के लोग घटना स्थल पर एकत्रित हो गए हैं परिजन भी रोते बिलखते घटनास्थल पर एकत्रित हो गए हैं मामले की सूचना स्थानीय पुलिस को दिया गया है जिस पर स्थानीय पुलिस के साथ-साथ पुलिस आला अधिकारी भी घटनास्थल पर पहुंचे हैं अधेड़ की हत्या क्यों की गई है इस बात का खुलासा खबर लिखे जाने तक नहीं हो सका है।

चिकित्सक की हत्या कांड का नहीं कर सकी पुलिस खुलासा

कोखराज कौशांबी। कोखराज थाना क्षेत्र के बालक मऊ गांव में 3 वर्षों पूर्व गांव के बीच सो रहे एक चिकित्सक पर तेज वार कर उसे मौत के घाट उतार दिया गया था इस हत्याकांड के खुलासे में भी तत्कालीन पुलिस अधिकारियों ने जल्द हत्याकांड खुलासे का आश्वासन दिया था लेकिन घटना को 3 वर्ष से अधिक बीत जाने के बाद भी चिकित्सक हत्याकांड का खुलासा पुलिस नहीं कर सकी है जब कि चिकित्सक पर वार करने वाले हत्यारों का नाम ग्रामीणों की जुबान पर था तत्कालीन चौकी इंचार्ज ने हत्यारों से सांठगांठ कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया था और उसके बाद उनसे बड़ी वसूली कर के उन्हें बेकसूर बताते हुए छोड़ दिया था और हत्यारो की पार्टी बंदी तत्कालीन चौकी पुलिस करने लगी थी।

न्यूज झरोखा

सड़क दुर्घटना में महिला की मौत , पुत्र बाल बाल बंचा

सड़क हादसे में महिला की मौत के बाद घटनास्थल पर पहुंची पुलिस और ग्रामीण

अझुवा कौशाम्बी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के भौंतर मोड़ के पास ट्रक की टक्कर से महिला की दर्दनाक मौत हो गयी है! जानकारी के अनुसार मोहम्मद आजाद उम्र तकरीबन 20 वर्ष अपनी माँ शहनाज बानो उम्र करीब 45 वर्ष पत्नी इस्तियाक अहमद निवासी बुदवन थाना खागा जिला फतेहपुर को कड़ा धाम के मजार से जियारत कर घर बुदवन वापस जा रहा था राष्ट्रीय राजमार्ग भौंतर मोड़ के पास कुत्ते से बचने के प्रयास में मोटरसाइकिल अनियंत्रित हो गयी और महिला सड़क पर ही गिर गयी जिससे सड़क पर निकल रहे तेज रफ्तार ट्रक के नीचे महिला आ गयी जिससे महिला कुचल गयी मौके पर ही उसकी दर्दनाक मौत हो गयी मौके पर राहगीरों की भीड़ लग गयी सूचना पर चौकी इंचार्ज अझुवा विजेंद्र सिंह मय हमराहियों मौके पर पहुंचकर घायल आजाद को मलहम पट्टी करवाकर शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज दिया है हादसे के बाद ट्रक ड्राइवर फरार हो गया वहीं ट्रक को पुलिस ने कब्जे में ले लिया है।

संदिग्ध परिस्थितियों में पेड़ से लटका मिला अधेड़ का शव

पेड़ से लटके मिले शव की जांच करती पुलिस

अझुवा कौशाम्बी। पैंसा थाना क्षेत्र के अफजलपुर वारी गांव के तालाब के पास संदिग्ध परिस्थितियों में एक अधेड़ का फांसी से लटकता शव मिला है ! जानकारी के अनुसार दशरथ लाल उम्र तकरीबन 52 वर्ष पुत्र सतीश का गांव के बाहर तालाब किनारे नीम के पेड़ से फांसी का फंदा लगा शव मिला है परिजन सुबह खोज रहे थे वहीं लोगों के अनुसार मृतक ने खुदकुशी किया है परिजनों का रो रोकर बुरा हाल है, मौके पर थाना पुलिस ने पहुंचकर शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेजकर मामले की छानबीन में जुट गई है।

अनियंत्रित पिकप ने मारी टक्कर,बाइक सवार गम्भीर जखमी

अस्पताल में भर्ती बाइक सवार घायल दूधिया

अझुवा कौशाम्बी। कड़ा धाम कोतवाली क्षेत्र के अंधियारी निवासी दूधिये को अनियंत्रित पिकप सवार ने टक्कर मार दी जिससे दूधिया गम्भीर घायल हो गया। जानकारी के अनुसार रामबहादुर पाल दुग्ध कारोबारी है आज दूध बेंचकर वापस घर जाते समय अंधियारी मोड़ पर पिकप ने उसे जोरदार टक्कर मार दी जिससे रामबहादुर घायल हो गया वहीं मौके पर रहे लोगों ने घायल को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गम्भीर स्थिति देखते हुए परिजनो ने घायल को जिला अस्पताल में भर्ती कराया है वहीं क्षेत्रीय पुलिस ने पिकप वाहन को मय चालक के कस्टडी में लेकर जांच शुरू कर दी है।

टीवीएस रेडर बाइक को डीएम ने किया लांच

अखंड भारत संदेश

टीवीएस बाइक की लांचिंग करते जिलाधिकारी

टीवीएस मोटर कंपनी के एरिया मैनेजर विशाल विक्रम सिंह द्वारा टीवीएस रेडर बाइक की बताई गई खूबी डीलर प्रबंध निदेशक अमित केसरवानी ने कहा कि टीवीएस रेडर भारत और दुनिया भर में युवा उपभोक्ताओं की बन जाएगी पहली पसंद

कौशाम्बी। टीवीएस रेडर बाइक की लांचिंग जिलाधिकारी कौशांबी द्वारा किया गया है लांचिंग के समय जिलाधिकारी ने कहा कि टीवीएस रेडर बाइक बाइक ग्राहकों की पहली पसंद बन गई है जिलाधिकारी ने बाइक की टेस्टिंग भी की है टीवीएस मोटर ने बाबा तिरहा गेरसा मंझनपुर रोड स्थित बाबा मोटर्स पर टीवीएस रेडर बाइक को कौशांबी जिलाधिकारी सुजीत कुमार एवं टीवीएस मोटर कंपनी के एरिया मैनेजर श्री विशाल विक्रम सिंह द्वारा लांच किया गया। कंपनी से आए एरिया मैनेजर ने बाइक की खूबी के बारे में उपस्थित लोगों को बताया है कंपनी के क्षेत्र प्रबंधक आकाश मिश्रा ने बाताया कि टीवीएस रेडर ग्राहक के आराम और सुविधा को ध्यान में रखते हुए टीवीएस रेडर को डिजाइन किया गया है। टीवीएस मोटर कंपनी के परफोर्मेन्स मोटरसाइकल डीएनए को बरकरार रखते हुए एलसीडी डिजिटल स्पीडोमीटर, मल्टीपल राइड मोड्स, लम्बे व्हीलबेस पर कम उंची सीट का संतुलन बनाया गया है। परफेक्ट अगोनोमिक्स ट्राइएंगल एवं मोनो-शाक- राईड एवं हैण्डलिंग को और भी आसान बनाते है । मोटरसाइकल का एक्जहास्ट डिजाइन इसे बोल्ड एवं परफेक्ट लुक देता है। अपने वर्ग में पहली बार पेश किए गए फीचर्स जैसे आपकी जरूरी चीजों के लिए अंडर-सीट स्टोरेट, साईड स्टैण्ड इंडीकेटर विद इंजन इन्हीबिटर, हेलमेट रिमांइडर एवं आप्शनल यूएसबी चार्जर राईड के अनुभव को और भी बेहतर बनाते हैं। डीलर प्रबंध निदेशक अमित केसरवानी ने बताया कि टी0वी0एस0 रेडर आधुनिक 124.7 इंजन के साथ आती है, मोटरसाइकिल अपने वर्ग में सर्वश्रेष्ठ 5.9 सैकण्ड में 0-60 स्पीड देती है। इसे युवा उपभोक्ताओं को ध्यान में रखते हुए इसे आधुनिक व्हीकल एवं कनेक्टेड टेक्नोलाजी के साथ पेश किया गया है।उन्होंने कहा कि मुझे विश्वास है कि टीवीएस रेडर भारत और दुनिया भर में युवा उपभोक्ताओं की पहली पसंद बन जाएगी।इस मौके पर शोरूम मैनेजर अम्बुज श्रीवास्तव सहित अन्य स्टाफ मौजूद थे।

समस्याओं को लेकर शिक्षक विधायक से मिले शिक्षक

कौशाम्बी। राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ सरसवां अध्यक्ष नितिन कुमार समावेशी की अध्यक्षता में शिक्षक विधायक डा0 मान सिंह यादव से शिष्टाचार मुलाकात की गयी। मुलाकात के दौरान नितिन कुमार समावेशी द्वारा कई शिक्षक समस्याओं एवं पुरानी पेंशन बहाली आदि पर प्रमुख रूप से चर्चा की गयी, विधायक द्वारा उक्त समस्याओं के निराकरण के लिए शिक्षकों को आश्वासन शिक्षक विधायक की तरफ से उन्हें दिया गया। इस अवसर पर अंजनी कुमार यादव, मदन लाल बहादुर, दीपक सिंह, रोहित लाल भूर्तिया, सत्येंद्र आदि अनेक शिक्षक मौजूद थे।

संदिग्ध परिस्थितियों में रेलवे ट्रैक पर दो हिस्सों में मिला किशोर का शव

अझुवा कौशाम्बी। सिराथू रेलवे स्टेशन रेलवे स्टेशन सिराथू यार्ड डाउन लाइन 882/32व 882/30के मध्य एक किशोर जिसकी उम्र लगभग 15 वर्ष का दो हिस्सों में शव मिला है। जानकारी के अनुसार सिराथू के स्टेशन के समीप कब्रिस्तान के पास डाउन लाइन पर एक लगभग 15 वर्षीय अज्ञात किशोर का शव मिला है मौके पर रेलवे पुलिस फोर्स और स्थानीय पुलिस शव को कब्जे में लेकर शिनाख्त में जुट गई है लेकिन खबर लिखे जाने तक शव की शिनाख्त नही हो सकी है रेलवे पुलिस उपनिरीक्षक रामकुमार ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज दिया है।

एक करोड़ दस लाख कीमत के उपकरणों का नगर पंचायत को विधायक ने दिया सौगात

चायल विधायक संजय कुमार गुप्ता ने कहा कि 15 हाई मास्ट से नगर पंचायत चरवा की गली गली में फैलेगा प्रकाश

अखंड भारत संदेश

नगर पंचायत चरवा को ट्रैक्टर सपर्पित करते चायल विधायक संजय गुप्ता

कौशाम्बी। विधायक चायल संजय कुमार गुप्ता ने नगर पंचायत में लगभग एक करोड़ दस लाख रुपए की लागत से नगर पंचायत चरवा में होने वाले विकास कार्यों का लोकार्पण कर चरवा क्षेत्र के समस्त नए वार्डों के निवासियों को सौगात दिया जिसमें मुख्य रुप से 15 हाई मास्ट लगभग पचासी लाख रुपए की लागत रु, 6 लाख रु की कीमत का एक ट्रैक्टर और तीन लाख पचास हजार रुपए की लागत की ट्राली, आठ लाख रुपए की लागत से छोटा हाथी, 5 लाख रुपए कीमत की स्ट्रीट लाइट का फीता काटकर विधायक ने चरवा नगरपंचायत क्षेत्र के लोगों के लिए एक बड़ी सौगात दिया विधायक चायल ने सभी का अभिवादन स्वीकार करते हुए कहा कि चरवा नगर पंचायत को बनाने में बड़ी ही मुश्किलों का सामना करना पड़ा है आज लगभग एक करोड़ दस लाख रुपए की लागत के उपकरणों का फीता काटा गया है। इस मौके पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए चायल विधायक संजय गुप्ता ने कहा कि हर वार्डों में एक एक हाई मास्ट लाइट लगेगी उन्होंने कहा कि नगर पंचायत में जो तमाम व्यवस्थाएं अव्यवस्थित हुई अब एक-एक करके लोगों को सौगात के रूप में देकर सुधारा जाएगा अब चरवा का विकास बहुत ही तीव्र गति से आगे बढ़ेगा क्योंकि इससे पहले कोरोना की वजह से काम करने में असुविधा हुई विधायक श्री गुप्ता ने कहा कि नगर पंचायत चरवा के प्रत्येक वार्ड में नाली सड़क पेयजल व लाइट और सरकार की चल रही सभी योजनाओं के माध्यम से विकास होगा । कार्यक्रम में मुख्य रूप से अधिशासी अधिकारी दिनेश सिंह जेई मनोज सिंह, लिपिक अरविंद कुमार, मंडल अध्यक्ष चायल गुलाब सिंह पटेल, भाजपा युवा नेता शेखर पांडे, मिक्की पांडे, युवा मोर्चा से शौर्य मिश्रा, अनूप केशरवानी, महामंत्री पिछड़ा मोर्चा सूरज यादव, नीरज पांडे, लल्ला यादव शिव मोहन मौर्य, यदुनंदन यादव, पवन यादव,सहित सैकड़ों की संख्या में स्थानीय जनमानस उपस्थित रहे।

सीएम से शिकायत के बाद भी डूडा सर्वेयर की नहीं रुकी अवैध वसूली

अखंड भारत संदेश

नगर पंचायत चायल के जिम्मेदार भी सर्वेयर की अवैध वसूली पर अंकुश लगाने में साबित हो रहे हैं विफल

कौशांबी। प्रधानमंत्री आवास योजना के नाम पर लाभार्थियों से जमकर जिम्मेदार वसूली कर रहे हैं मामले की शिकायत लाभार्थियों ने मुख्यमंत्री से भी की है लेकिन मुख्यमंत्री से शिकायत करने के बाद भी डूडा के सर्वेयर की अवैध वसूली नहीं बन्द हुई है।

अवैध वसूली के चलते जहां योजना का लाभ अपात्र अधिक उठा रहे हैं वहीं पात्रों को योजना का लाभ नहीं मिल रहा है इतना ही नहीं अवैध वसूली के चलते एक परिवार में कई लोगों को प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ डूडा के जिम्मेदार दिलाने में कामयाब हो गए हैं डूडा में आवास योजना में धांधली के मामले में यदि शासन ने जांच कराई तो जिम्मेदारों के कारनामे बेनकाब होंगे। जानकारी के मुताबिक डूडा कार्यालय के अधीन प्रधानमंत्री आवास का सर्वे कर विभाग को रिपोर्ट देने वाले विभाग के कमाऊ पूत बने है डूडा के सर्वेयर के माध्यम से डूडा के अधिकारी कर्मचारी लाभार्थियों से अवैध वसूली करा रहे हैं ।

जिन लाभार्थियों ने डूडा सर्वेयर की बात मानकर उनकी घूस की रकम उन्हें दे दी उन लाभार्थियों को आवास की रकम सरलता से उनके बैंक खाते में पहुंच जाती है और जिन लाभार्थियों ने डूडा के सर्वेयर को घूस की रकम देने में आनाकानी की उन्हें आवास योजना का लाभ दिलाने में तरह-तरह के अड़चन पैदा कर परेशान किया जा रहा है ताजा मामला चायल नगर पंचायत का है नगर पंचायत चायल के जिम्मेदार भी सर्वेयर की अवैध वसूली पर अंकुश लगाने में विफल साबित हो रहे हैं नगर पंचायत चायल के आवास लाभार्थी चुन्ना ने मुख्यमंत्री को शिकायती पत्र भेजकर सर्वेयर सूर्य प्रकाश गौतम पर अवैध वसूली का आरोप लगाया है मुख्यमंत्री ने जिले से रिपोर्ट भी मांगी है लेकिन उसके बाद भी चुन्ना को आवास योजना की तीसरी किस्त नहीं मिल सकी है प्रधानमंत्री आवास में डूडा के कर्मचारी और सर्वेयर के अवैध वसूली से पीड़ित लोगों की लंबी लिस्ट है जिन्हें आवास योजना की किस्त देने में तरह-तरह से परेशान किया जा रहा है यदि सर्वेयर सूर्य प्रकाश गौतम की अवैध पर जिला प्रशासन ने मामले को संज्ञान लिया तो विभाग के कई लिपिक का नाम भी घूसखोरी में शामिल होने में उजागर होगा लाभार्थियों ने जिलाधिकारी का ध्यान आकृष्ट कराते हुए डूडा सर्वेयर कर्मचारियों के घूसखोरी की जांच कराते हुए भ्रष्ट सर्वेयर और लिपिक पर निलंबन की कार्यवाही की मांग की है।

समर्थ किसान पार्टी की जिला युवा कार्यकारिणी का गठन

अखंड भारत संदेश

आकाश यादव अध्यक्ष एवं गोविंद मिश्र बने महासचिव

सभी पदाधिकारियों का माल पहनकर किया स्वागत

कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी के जिला कार्यालय मंझनपुर में जिला युवा कार्यकारिणी का गठन किया गया। इस अवसर पर आकाश यादव को जिला अध्यक्ष गोविंद मिश्र को जिला महासचिव सुरजीत कुमार वर्मा को जिला उपाध्यक्ष बनाए गया पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत गुरुवार को समर्थ किसान पार्टी के जिला कार्यालय मंझनपुर में एक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में युवा प्रकोष्ठ के जिला कार्यकारिणी के गठन पर चर्चा हुई। इस अवसर पर पार्टी नेता अजय सोनी ने जिला युवा अध्यक्ष के नाम का खुला प्रस्ताव रखा। प्रस्ताव पर दो लोगो ने अध्यक्ष पद के लिए नाम दिया। जिस पर काफी देर तक समाधान न हो सका। अन्तिम निर्णय अजय सोनी ने आकाश यादव के नाम पर किया जिसका सर्वसम्मति से लोगों ने तालियां बजाकर समर्थन किया और आकाश यादव को सर्वसम्मति से युवा प्रकोष्ठ का जिलाध्यक्ष बनाया गया कार्यकारिणी के बाकी पदों का चुनाव किया गया जिसमें ठाकुर रणजीत सिंह को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, सुरजीत कुमार वर्मा को उपाध्यक्ष, गोविंद मिश्र को वरिष्ठ महासचिव एवं डॉ अवधेश गौतम को महासचिव, राजकुमार साहू को जिला कोषाध्यक्ष, शफीक अहमद को जिला प्रभारी, लाल बहादुर को जिला संगठन मंत्री बनाया गया। इसी क्रम लवकुश प्रजापति, सुशील सोनी, डॉ अरुण पाल, कृष्ण त्रिपाठी, महेंद्र सरोज,, जय सिंह पटेल को जिला सचिव बनाया गया। इस अवसर पर सभी को नियुक्ति पत्र देकर सभी का माल्यार्पण किया गया और लड्डू खिलाकर मुंह मीठा कराया गया। कार्यक्रम का संचालन जिला महासचिव वेद प्रकाश यादव ने किया। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष अखिलेश पटेल एवं जिला उपाध्यक्ष गणेश सोनी भी मौजूद रहे और नव निर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर राजेश मौर्य, जिला सचिव प्रमोद कुमार शर्मा, शनि श्रीवास्तव, मनोज तिवारी समेत कई लोग मौजूद रहे।

जिले में 18 अक्टूबर से शुरू होगा संचारी रोग नियंत्रण अभियान : सीडीओ

कौशांबी। जनपद के सम्राट उद्यान सभागार कलेक्ट्रेट में मुख्य विकास अधिकारी (सीडीओ) शशिकांत त्रिपाठी की अध्यक्षता में अंतर्विभागीय समन्वय समिति की बैठक हुई । बैठक में उन्होने कहा कि जिले में संचारी रोग नियंत्रण अभियान 18 अक्टूबर से 17 नवंबर तक चलाया जाएगा। संचारी रोगों तथा दिमागी बुखार पर प्रभावी नियंत्रण एवं कार्यवाही के लिए विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया गया।

इन विभागों को मिली जिम्मेदारी

कौशाम्बी। इसी प्रकार चिकित्सा शिक्षा विभाग, दीवयांगजन सशक्तिकरण विभाग, कृषि एवं सिंचाई विभाग, सूचना विभाग व उद्यान विभाग आदि संबन्धित विभागों को निर्देश दिए गए हैं। बैठक में मुख्य चिकित्सा अधिकारी, जिला पंचायत राज अधिकारी, जिला मलेरिया अधिकारी, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, नोडल वेक्टर बार्न , यूनिसेफ एवं डबल्यूएचओ के प्रतिनिधि समेत अन्य संबन्धित जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

प्रधान बनेंगे गाँव में अभियान के नोडल

कौशाम्बी। पंचायती राज विभाग, ग्राम्य विकास विभाग के ग्राम प्रधानों को अपने ग्राम में अभियान के नोडल के रूप में कार्य कर ग्रामीण क्षेत्र में ग्राम निगरानी समितियों के माध्यम से कोविड तथा संचारी रोगों के विषय में निरंतर जागरूकता स्थापित करना होगा। इसके साथ ही शुद्ध पेयजल की व्यवस्था कराना एवं वेक्टर कंट्रोल जलाशयों एवं नालियों की नियमित सफाई, झाड़ियों की काट-छाँट का कार्य तथा जलाशयों एवं तालाब में उगने वाले हाइसिन्थ पौधों की सफाई, वातावरणीय स्वच्छता व पशुपालकों का गहन संवेदीकरण कराने के लिए आदेशित किया।

पोस्टर व निबंध माध्यम से पहुंचाएं जागरूकता सन्देश

कौशाम्बी। बाल विकास सेवा एवं पुष्टहार विभाग की आंगनबाड़ी कार्यकताओं को संचारी रोग तथा दिमागी बुखार के बारे में प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। शिक्षा विभाग को छात्रों की गतिविधियों में उनके अभिवावकों की सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए कहा गया है। पोस्टर या निबंध आदि के माध्यम से अभिवावकों को भी दो पंक्तियों की टिप्पणी लिखने को निर्देशित किया गया है।

होगी निःशुल्क रोगी वाहन की व्यवस्था

कौशाम्बी। सीडीओ ने चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग को रोगियों के लिए निःशुल्क रोगी वाहन की व्यवस्था, ग्रामीण क्षेत्रों में वाहन के घनत्व का आंकलन, वेक्टर जनित रोगों की रोकथाम के लिए आवश्यकतानुसार फागिंग , प्रचार-प्रसार एवं व्यवहार परिवर्तन गतिविधियों की मॉनिटरिंग, पर्यवेक्षक रिपोर्टिंग, अभिलेखीकरण तथा विश्लेषण आदि करने के निर्देश दिए हैं। नगर विकास विभाग को नगरीय क्षेत्र में मोहल्ला निगरानी समितियों के माध्यम से संचारी रोग के विषय में निरंतर जागरूकता बढ़ाने तथा कोविड संक्रमण के लक्षणयुक्त व्यक्तियों को दवा उपलब्ध कराने में सहयोग करने को कहा है । व्यक्तिगत स्वच्छता के उपाय हेतु खुले में शौच न करने, शुद्ध पेयजल का प्रयोग तथा मच्छरों की रोकथाम के लिए जागरूकता अभियान को संचालित करने के लिए निर्देशित किया।

सम्पादकीय

बच्चों के लिए टीका

पहली बार इस टीके के जरिए 2 साल की उम्र तक के बच्चों को कवर करने की सोची जा रही है। इससे न केवल तीसरी लहर में बच्चों के मुख्य निशाना होने संबंधी चिंता को कम करने में मदद मिलेगी बल्कि स्कूलों की पढ़ाई को सामान्य बनाना भी आसान होगा। देश में 2 से 18 साल उम्र तक के बच्चों के लिए कोवैक्सीन टीका इस्तेमाल करने को लेकर एक्सपर्ट कमिटी की सिफारिश ऐसे समय आई है जब कोरोना संक्रमण निचले स्तर पर है, जनजीवन सामान्य होने की ओर है और अर्थव्यवस्था भी झटकों से उबर रही है। लेकिन इसके साथ ही यह बात भी सच है कि टीकाकरण अभियान बीच-बीच में रेकॉर्ड बनाने के बावजूद अपेक्षा के अनुरूप रफ़्तार हासिल नहीं कर सका है (19.8 फीसदी आबादी ही टीके के दोनों डोज ले सकी है) और कोरोना की तीसरी लहर की आशंका भी समाप्त नहीं की जा सकी है। हालांकि इस टीके को अभी डीसीजीआई (ड्रग्स कंट्रोलर जेनरल ऑफ इंडिया) की मंजूरी नहीं मिली है। लेकिन सब्जेक्ट एक्सपर्ट कमिटी (एसईसी) की सिफारिश के रूप में एक अहम पड़ाव पार कर लेने के बाद इस टीके से होने वाले नफा-नुकसानों की चर्चा होने लगी है। सबसे पहले ध्यान में रखने वाली बात यह है कि इसके तीसरे फेज के क्लिनिकल ट्रायल डेटा को लेकर सवाल बने हुए हैं। कोवैक्सीन को सुरक्षित वैक्सीन के रूप में अंतरराष्ट्रीय मान्यता पर भी स्थिति पूरी तरह साफ नहीं है। डब्लूएचओ इसे टीकों की अपनी आधिकारिक सूची में शामिल करेगा या नहीं इस पर फैसला अभी नहीं हुआ है। बहरहाल, अपने देश में तो यह टीका न केवल बड़े पैमाने पर दिया जा रहा है बल्कि अब तक के अनुभवों पर खरा भी उतरा है।

फिर भी डब्लूएचओ की मान्यता में देरी का असर इस रूप में जरूर देखने को मिल सकता है कि सरकार की मंजूरी मिल जाने और टीकाकरण अभियान में शामिल कर लिए जाने के बाद भी इसे लेने में लोग शुरू में कुछ हिचक दिखाएं। मगर हर टीके को लेकर शुरू में ऐसी हिचक देखी जाती रही है जो समय के साथ दूर होती है। इससे पहले अगस्त में जायडस कैडिला के कोरोना टीके को भी आपात कालीन इस्तेमाल की मंजूरी मिली थी, लेकिन वह 12 से 18 साल के बच्चों के लिए था।

पहली बार इस टीके के जरिए 2 साल की उम्र तक के बच्चों को कवर करने की सोची जा रही है। इससे न केवल तीसरी लहर में बच्चों के मुख्य निशाना होने संबंधी चिंता को कम करने में मदद मिलेगी बल्कि स्कूलों की पढ़ाई को सामान्य बनाना भी आसान होगा। स्कूल खुलने के बावजूद ऑफलाइन पढ़ाई अभी कई तरह की बंदिशों के बीच ही चल रही है। हाल में आए आंकड़ों के मुताबिक कम से कम 5 करोड़ बच्चे ऐसे हैं जिनकी ऑनलाइन पढ़ाई के लिए जरूरी उपकरणों तक पहुंच नहीं है। इसके अलावा ऑनलाइन पढ़ाई से स्टूडेंट्स की समझ में होने वाले इजाफे को लेकर कई तरह के सवाल हैं। निश्चित रूप से टीके की सुरक्षा और उसकी कारगरता को लेकर सारे संदेह पहले दूर कर लिए जाएं, लेकिन उसके बाद बच्चों को टीकाकरण के दायरे में जल्द से जल्द लाना सबके हित में होगा।

चीनी मंसूबे नाकाम करने पर अड़ा भारत, किस तरह सत्ता में आने के बाद से शी चिनफिंग कर रहे नाजायज विस्तार

रंजीत कुमार

पूर्वी लद्दाख की सीमांत बर्फीली चोटियों पर गत डेढ़ वर्षों से डेरा जमाए बैठे चीनी सैनिकों को वापस पुरानी स्थिति पर लौटने के लिए राजी करने में इस बार भी कामयाबी नहीं मिली। अपने विदेश मंत्री के भारत को भरोसा दिलाने वाले दुशांबे में दिए गए बयानों के विपरीत चीन ने 10 अक्टूबर को हुई 13वें दौर की सैन्य कमांडर वार्ता के दौरान अडि़यल रुख अपनाया और कहा कि भारत गैरवाजिब और अनुचित मांग कर रहा है जिसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। पिछले साल पांच मई को पूर्वी लद्दाख के कई क्षेत्रों (गलवान, पैंगोंग झील, गोगरा, हॉट स्प्रिंग) और उसके पहले देपसांग के इलाकों में की गई सैन्य घुसपैठ को खत्म करने के लिए चीन ने भारत से गहन सौदेबाजी की है।

लेकिन भारत ने दृढ़तापूर्वक कह दिया है कि 5 मई से पहले की यथास्थिति बहाल करने पर ही बात बनेगी। गलवान, पैंगोंग झील के इलाके में तो चीनी सैनिक वास्तविक नियंत्रण रेखा पर वापस लौटने की सहमतियों का पालन कर चुके हैं। लेकिन इसमें भी चीन का पलड़ा इस मायने में भारी रहा है कि वास्तविक नियंत्रण रेखा के भारतीय इलाकों में बफर जोन बनाया गया है, जहां भारतीय सेना गश्त नहीं कर सकेगी। यह भारतीय सेना की जीत इस मायने में कही जा सकती है कि आखिर चीनी सेना उन इलाकों में दोनों को मान्य वास्तविक नियंत्रण रेखा के अनुरूप पीछे हटने को मजबूर हुई है। लेकिन चीन दो कदम आगे बढ़कर एक कदम पीछे हटने की रणनीति पर चल रहा है। इसके अनुरूप चीनी राजनेता औ? आला राजनयिक बार-बार कह रहे हैं कि भारत और चीन बीच रास्ते में मिल कर कोई समाधान खोजें। आधे रास्ते पर मिलकर मसले का हल खोजने के चीनी प्रस्ताव का मतलब यही है कि वह जिन भारतीय इलाकों में बढ़ चुका है वहां से आधा रास्ता पीछे लौटने पर विचार हो। भारत यदि इस प्रस्ताव को स्वीकार करता है तो भारतीय इलाके का एक हिस्सा चीन के पास ही रह जाएगा। इसलिए भारत के रक्षा मंत्री, विदेश मंत्री और सेना प्रमुख सबने साफ कर दिया है कि इस मसले पर झुकने का सवाल ही नहीं उठता। चीन को स्पष्ट संदेश दे दिया गया है कि चीनी घुसपैठ को निरस्त करने के लिए भारत अनंत काल तक डटे रहते हुए मुस्तैदी से अपने इलाके पर दावा जताता रहेगा।

इस बीच भारतीय सेना के लिए सैन्य तैनाती को असहनीय बनाने के इरादे से चीन पूर्वी लद्दाख के सीमांत इलाकों में अपने सैनिकों के रहने-सहने और उनके हथियार रखने के लिए ढांचागत सुविधाएं बढ़ाता जा रहा है। 10 अक्टूबर को दोनों सेनाओं के कमांडरों की 13वें दौर की बातचीत करीब दो महीने बाद हो रही थी। लेकिन इसके पहले पिछले एक महीने में चीन ने उत्तराखंड के बाराहुती और अरुणाचल प्रदेश के सीमांत इलाकों में अपने सैनिकों से अतिक्रमण करवा कर यह संदेश दिया कि वह न केवल पश्चिमी सेक्टर के पूर्वी लद्दाख, बल्कि मध्य सेक्टर के बाराहुती और पूर्वी सेक्टर के अरुणाचल प्रदेश को भी मौजूदा विवादों के घेरे में शामिल कराना चाहता है। चीन इसके पहले यह संदेश दे चुका है कि 1959 में चीन के प्रधानमंत्री चाओ एन लाई ने सीमा मसले का जिस वास्तविक नियंत्रण रेखा के अनुरूप हल करने का प्रस्ताव रखा था, भारत उसे मान ले। उस प्रस्ताव में अक्साई चिन को चीन के शिनच्यांग प्रदेश के तहत शामिल करते हुए प्रस्ताव किया गया था कि दोनों सेनाएं पूर्व में अरुणाचल प्रदेश से लगने वाली मैकमेहोन रेखा (जिसे चीन अवैध बताता रहा है) से 20-20 किलोमीटर पीछे हट जाएं, जबकि लद्दाख और अक्साई चिन वाले इलाकों में जो देश जहां तक मौजूद है वहां तक अपना इलाका मान ले। यह प्रस्ताव करने के पहले चीन लद्दाख के इलाके में काफी आगे बढ़ चुका था। भारत ने 1959 में भी इस प्रस्ताव को नामंजूर कर दिया था। अनधिकृत तौर पर कुछ महीनों पहले दोहराए गए इस प्रस्ताव पर भी भारतीय विदेश मंत्रालय ने कड़ा एतराज किया, क्योंकि भारत और चीन के बीच 1993, 1996, 2005 और 2013 में परस्पर विश्वास निर्माण की जो संधियां हुईं, उनमें तत्कालीन अधिकार वाले इलाकों के अनुरूप ही वास्तविक नियंत्रण रेखा का जिक्र किया गया और 1959 के चाओ प्रस्ताव का कोई उल्लेख नहीं किया गया था। भारत और चीन के सैन्य कमांडरों के बीच 13वें दौर की जो बातचीत चली है वह इन चारों समझौतों के अनुरूप ही है। दोनों देशों के विदेश और रक्षा मंत्रियों के बीच जो संवाद हुए हैं वे भी इनके अनुरूप हैं।

बहरहाल, चीन के अडि़यल रुख के मद्देनजर ऐसा लगता है कि 2020 की बर्फीली सर्दियों की तरह 2021 की सर्दियों में भी भारतीय सेना को वहीं तैनात रहना होगा। हालांकि वित्तीय संकट में चल रही भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए पूर्वी लद्दाख के सीमांत इलाकों की बर्फीली चोटियों पर 50 हजार से अधिक सैनिकों को तैनात रखने पर रोजाना औसतन 150 करोड़ रुपये का खर्च भारी साबित हो रहा है। लेकिन राष्ट्रपति शी चिन फिंग की विस्तार की नाजायज महत्वाकांक्षाओं का डटकर मुकाबला अगर आज नहीं किया तो 2047 तक चीन को दुनिया का नंबर एक ताकतवर और विकसित देश बनाने के उनके सपनों को पर लग जाएंगे। वास्तव में 2013 में सत्ता संभालने के बाद से ही राष्ट्रपति शी ने दक्षिण चीन सागर सहित भारत के सीमांत इलाकों पर सामरिक व सैन्य दबाव बढ़ाकर अपने विस्तारवादी सपनों को पूरा करने की नीति लागू की है। इसके तहत चीनी सेना ने 2017 में डोकलाम सहित कुल पांच बार भारतीय इलाकों में सैन्य घुसपैठ की है। हर बार भारतीय पक्ष ने अपने इलाके को खाली कराने में कामयाबी हासिल कर ली। इस बार राष्ट्रपति शी यह संदेश नहीं देना चाहते कि चीनी सेना भारतीय दबाव में पीछे हटी है। लेकिन भारत के जांबाज सैनिक पिछले साल 15 जून के गलवान हमले से प्रेरणा लेते हुए इस बार भी अपनी एक इंच जमीन न छोड़ने के संकल्प पर डटे हैं।

अवधनामा ः बादशाहों को खूब 'बनाते' थे मौका-परस्त दरबारी

कृष्ण प्रताप सिंह

अवध के नवाबों की सनक के किस्से आज भी रस लेकर कहे व सुने जाते हैं, लेकिन यह जानना कहीं ज्यादा दिलचस्प है कि मतलब-परस्त दरबारी उनके 'नवाब' से 'बादशाह' बन जाने के बाद भी उनकी सनक के सही गलत फायदे उठाने के लिए कैसे-कैसे फरेब रचा करते थे। आठ जुलाई, 1837 को मोहम्मद अली शाह बादशाह बने तो उन्हें हासिल हुए भांति-भांति के ढेर सारे नजरानों में एक विलायती कुत्ता भी था। उसका डील-डौल देखकर वे इतने खुश हुए कि उसकी चौबीसो घंटे देखभाल के लिए दो नौकर तो नियुक्त किए ही, उसे गिजा खिलाने के लिए खजाने से एक रुपया रोज देने का हुक्म भी दे डाला। गौरतलब है कि उस दौर में एक रुपये में एक आदमी पखवारे भर दोनों जून भरपेट भोजन कर सकता था। लेकिन कुत्ता तो कुत्ता, उसकी वक्त बेवक्त की भौं-भौं ने जल्दी ही बादशाह को खिझाकर रख दिया। दरअसल, रात को जैसे ही बादशाह नींद के आगोश में जाने को होते, कुत्ते को अपना चौकसी का फर्ज याद आ जाता। फिर तो वह हर आहट पर भौंकता और बादशाह की नींद हराम करता रहता। बेचारे कई दिन उनींदे रह गए तो उक्त दोनों नौकरों को बुलाकर कुत्ते की बेहूदगी पर खासी नाराजगी जताई और हर हाल में उसे रोकने को कहा। यह भी पूछा कि कहीं उसका पेट भरने के लिए एक रुपये की रकम कम तो नहीं पड़ जाती और वह भूख के मारे तो नहीं भौंकता? एक चालाक दरबारी ने उनकी बात फौरन लपक ली और सुझाव दिया कि कुत्ते को रोज एक सेर गुलकंद और एक बोतल गुलाबजल खिला-पिलाकर रखा जाये तो उसका भौंकना कम भले न हो, सुरीला जरूर हो जाएगा। गुलकंद और गुलाबजल के असर से धीरे-धीरे उसका गला मीठा हो जाएगा। बादशाह ने फौरन उसके सुझाव पर अमल का फरमान सुना दिया। फिर क्या था, गुलकंद व गुलाबजल हजम करने के लिए दरबारी खुद कुत्ता बन बैठा। हां, रात जैसे ही बादशाह आरामगाह में जाते, नौकरों से कहकर कुत्ते को कहीं दूर बंधवा देता और अलस्सुबह फिर ड्योढ़ी पर ला खड़ा करवाता।

लेकिन बादशाह की नींद में खलल फिर भी जारी रहा। कारण यह था कि उनके महल के पास से ही गोमती बहती थी, जिसके दूसरे किनारे पर खेतों के पार घना जंगल था। सर्दी की लंबी रातों में सियार घने जंगल से निकलकर खेतों में आते और हुआं-हुआं करने लगते। इससे नींद टूट जाती और बादशाह बेचैन हो जाते। आजिज आकर एक दिन उन्होंने उसी चालाक दरबारी से पूछा, 'आखिर ये रात-रात भर 'हुआं-हुआं' करके इतना शोर क्यों मचाते हैं? इस बार दरबारी ने कहा, 'हुजूर, सर्दी के सताए हैं बेचारे और उनके पास सर्दी से निजात पाने के लिए इमदाद की फरियाद आपके कानों तक पहुंचाने का बस यही एक तरीका है।' दूसरा दरबारी उसका भी बाप था। उसने फौरन सियारों में कंबल बंटवाने की तजवीज पेश कर दी। कह दिया, 'इससे सियारों का भला तो होगा ही, बादशाह को सवाब भी मिलेगा।' फिर बताया कि सियारों की कुल संख्या पांच सौ के आसपास ही होगी।

बादशाह ने फौरन पांच सौ कंबलों की कीमत उसके हवाले करा दी। लेकिन सियारों को कंबल भला कैसे बंटते? वे पहले की ही तरह गजर-दम मचाते रहे। इससे नाराज बादशाह ने उस दरबारी को तलब किया और पूछा, 'ये नामुराद कंबल पाने के बावजूद कयामत क्यों बरपा किए हुए हैं? उन्हें जवाब मिला, 'हुजूर, उन बदनसीबों में किसी और बादशाह ने कभी कंबल नहीं बंटवाए। इसलिए अब वे खुश होकर आपका शुक्रिया अदा कर रहे हैं और चाहते हैं कि आपकी इस दरियादिली की खबर सारे जहान को हो जाए।' हां, इससे भी मजे की बात यह कि जिस विलायती कुत्ते को रोज एक सेर गुलकंद और एक बोतल गुलाब जल 'खिलाया-पिलाया' जाता था, 1840 में उसके मर जाने के दो साल बाद तक शाही खजाने से उसके नाम पर दो नौकरों की तनखाहें और रोजाना एक रुपया, एक सेर गुलकंद व एक बोतल गुलाब जल दिया जाता रहा। मोहम्मद अली शाह के बेटे अमजद अली शाह की बादशाहत के वक्त भेद खुला तो यह सिलसिला बंद हुआ।

कितने बहुकोणीय होंगे आगामी चुनाव

नरेंद्र नाथ

अगले कुछ महीनों में होने वाले विधानसभा चुनावों में विपक्षी एकता की कोशिश फिलहाल धूमिल हो चुकी है। सभी सियासी दल बहुकोणीय चुनाव के नफा-नुकसान की चर्चा करने लगे हैं। अगले साल की शुरुआत में उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, गोवा और मणिपुर में विधानसभा चुनाव होने हैं। अब तक के जो राजनीतिक संकेत हैं उसके अनुसार इन सभी राज्यों में बहुकोणीय चुनाव ही होंगे। हाल के सालों में आम धारणा यही बनी है कि बहुकोणीय चुनाव से बीजेपी को लाभ होता है क्योंकि इससे उनके विरोधी मतों का ही बंटवारा होता है। हालांकि जानकारों के अनुसार हर चुनाव के समीकरण अलग होते हैं, और इसे कोई एक स्थापित ट्रेंड मान लेना मुनासिब नहीं। लेकिन पांच राज्यों के चुनाव में आए नतीजे एक ठोस ट्रेंड बता सकते हैं। अभी बहुकोणीय चुनाव और इसके असर की बात पर बहस इसलिए शुरू हुई कि एक के बाद एक कई घटनाक्रम हुए हैं। पिछले हफ्ते गुजरात में हुए निकाय चुनाव में आम आदमी पार्टी भले सीट जीतने में सफल नहीं रही, लेकिन कांग्रेस के वोट बैंक में उसने बड़ी सेंध लगाई। इसका असर यह हुआ कि बीजेपी पिछली बार से भी बड़ी जीत पाने में सफल रही। गुजरात में भी अगले साल के अंत में विधानसभा चुनाव होने हैं। अभी कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी लखीमपुर कांड के बाद जिस तरह उत्तर प्रदेश में आक्रामक हुईं और वाराणसी में बड़ी रैली कर उन्होंने कांग्रेस के चुनावी प्रचार का शंखनाद किया, उसके बाद वहां भी यह बात उठी कि अगर कांग्रेस अपना वोट बढ़ाती है तो वह किसकी कीमत पर बढ़ाएगी। तर्क दिया गया कि जितना कांग्रेस बेहतर करेगी, बीजेपी के लिए राहत की बात होगी क्योंकि इससे बीजेपी विरोधी वोट ही बंटेगा।

इसी तरह साल की शुरुआत में गोवा और उत्तराखंड में भी यही सवाल उठेगा। गोवा में आम आदमी पार्टी और टीएमसी पूरी ताकत के साथ उतर रही है। वहां दोनों दल बीजेपी सरकार के सामने कांग्रेस के साथ खुद को विकल्प के रूप में पेश कर रहे हैं। वहीं उत्तराखंड में आम आदमी पार्टी मैदान में उतर चुकी है। पंजाब में भी सत्तारूढ़ कांग्रेस के सामने आम आदमी पार्टी, अकाली दल और बीजेपी मैदान में हैं। मणिपुर में भी एक साथ कई दल चुनावी मैदान में हैं। हाल के सालों में अधिकतर चुनावों में दो पक्षों के बीच सीधी टक्कर ही देखने को मिली है। लेकिन इस बार जिस तरह इन सभी राज्यों में कई कोण अभी से दिख रहे हैं, यह देश की राजनीति में उस पुराने दौर की वापसी की आहट दे रहा है जब सियासी मैदान में कई खिलाड़ी होते थे। लेकिन क्या कई दलों के मैदान में उतरने से बहुकोणीय चुनाव हो जाएगा या मौजूदा ट्रेंड की तरह अंत में वोटर पक्ष और विपक्ष के लिए सिर्फ एक-एक विकल्प को चुनेगा? इसका जवाब तो चुनाव में ही मिलेगा। इसी से सभी दलों के राष्ट्रीय स्तर पर उभरने की ख्वाहिश का विस्तार होगा या नहीं, इसका भी पता चलेगा। बहुकोणीय चुनाव से वोट बंटने का असर क्या होता है, उस बारे में तो अगले साल चुनाव के नतीजे ही कुछ बता पाएंगे। लेकिन अब तक का ट्रेंड यही है कि इसका लाभ हाल के सालों में बीजेपी को मिला है। इसके पीछे कारण रहा है कि अधिकतर क्षेत्रीय दल चाहे तेलंगाना में हो या आंध्र प्रदेश में, पश्चिम बंगाल में हो या महाराष्ट्र में, वे सारे कांग्रेस के पतन की कीमत पर ही उभरे हैं। जिन-जिन राज्यों में कांग्रेस कमजोर होती गई वहां-वहां क्षेत्रीय दल उभरते गए। यह ट्रेंड पिछले तीन दशकों से है। सबसे नया उदाहरण दिल्ली में आम आदमी पार्टी है। बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली हो या झारखंड जैसे राज्य, वहां कांग्रेस से जो वोट बैंक निकला, उस पर ही अपनी पकड़ बनाकर क्षेत्रीय दल स्थापित हुए। अधिकतर क्षेत्रीय दलों को वोट बेस कांग्रेस से ही मिलता रहा है। ऐसे में चूंकि क्षेत्रीय दल और कांग्रेस एक ही पिच पर खेलते रहे हैं तो ये एक ही वोट वर्ग में साझा करते हैं और बीजेपी का वोट बैंक इससे प्रभावित नहीं होता है। यह चुनाव दर चुनाव दिखा भी है। लेकिन जानकारों के अनुसार पिछले कुछ दिनों में हालात बदले भी हैं। अब इन सभी के लिए बीजेपी से लड़ना प्राथमिक सियासी चुनौती बन गई। लगभग एक दशक से देश की राजनीति के केंद्र में आ चुकी बीजेपी इन क्षेत्रीय दलों के लिए बड़ा खतरा बन गई। इसके अलावा बीजेपी की तरह कांग्रेस हो या क्षेत्रीय दल, इनका भी अपना वोट बैंक बन गया।

ऐसे में अब बहुकोणीय चुनाव का असर किसके वोट बैंक पर पड़ेगा, उसका आकलन गलत भी साबित हो सकता है। उत्तर प्रदेश की ही मिसाल लें, तो यहां अगर कांग्रेस उभर कर अपना वोट बैंक बढ़ाती है तो वह बीजेपी में सेंध लगाएगी या विपक्ष में, यह अभी कहना जल्दबाजी होगा। एसपी के नेता ने कहा कि पारंपरिक रूप से बीजेपी का वोट कांग्रेस की ओर जा सकता है, जो एसपी की ओर कभी नहीं आएगा। यही बात दूसरे राज्यों में भी लागू होती है। जाहिर है, सभी दल बहुकोणीय चुनाव में अपने लिए लाभ का आकलन अधिक करेंगे, लेकिन इसके लिए ठोस आधार नहीं है। इसी तरह ओवैसी की पार्टी के बारे में कहा गया है कि उनकी पार्टी मुस्लिम वोट बांटती है। लेकिन अब तक इसके कोई स्पष्ट सियासी प्रमाण नहीं मिले हैं। पश्चिम बंगाल में टीएमसी के सामने कांग्रेस-लेफ्ट का गठबंधन था, जो वहां की स्थापित पार्टियां हैं। उनके साथ इंडियन सेक्युलर फ्रंट की पार्टी भी थी। लेकिन जब चुनाव परिणाम सामने आए तो यही बात देखी गई कि मुस्लिम मतों का बंटवारा नहीं हुआ।

सावधान! वे तंबाकू की तरफ खींच रहे हैं बच्चों को

प्रियांक कानूनगो

अब तक हम यही मानते आए है कि सिगरेट या ड्रग्स का इस्तेमाल युवावस्था में साथियों के दबाव या नए प्रयोग के उत्साह में शुरू होता है, लेकिन सचाई इससे अलग और कड़वी है। क्या हमने कभी सोचा है कि हमारे स्कूली बच्चे बहुत कम उम्र में इस खतरनाक लत के संपर्क में आ रहे हैं? इस बारे में कई अध्ययनों, शोधों और सर्वेक्षणों के आंकड़े परेशान करने वाले हैं। आंकड़े बताते हैं कि औसतन 10 वर्ष की उम्र के बच्चे तंबाकू उत्पादों का इस्तेमाल कर रहे हैं। तंबाकू उत्पादों तक उनकी पहुंच बेहद आसान है, क्योंकि दुकानदार भी उन्हें मना नहीं करते। वर्ष 2012 में बच्चों के तंबाकू उत्पादों का इस्तेमाल शुरू करने की औसत उम्र 12 वर्ष तीन महीने थी। वर्ष 2019 में यह उम्र कम होकर 10 साल रह गई। यह दिखाता है कि कैसे जोखिम बढ़ रहा है। हमारे बच्चे इससे भी कम उम्र में तंबाकू उत्पादों का इस्तेमाल शुरू कर चुके हैं। देश के कुछ हिस्सों, जैसे कि पूर्वोत्तर राज्यों, विशेष रूप से मिजोरम और असम में तत्काल इस पर ध्यान देने की जरूरत है, क्योंकि वहां छह साल के बच्चों तक में तंबाकू उत्पाद अपनी पैठ बना चुके हैं। हाल ही में केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री मनसुख मंडाविया ने ग्लोबल यूथ टोबैको सर्वे- 2019 की नैशनल फैक्ट शीट जारी की। यह रिपोर्ट आंखें खोलने वाली है। रिपोर्ट के मुताबिक स्कूल जाने वाले 13-15 वर्ष की उम्र के बच्चों में तंबाकू सेवन कितना बढ़ रहा है। सर्वे के मुताबिक 13-15 वर्ष की आयु के पांच में से एक बच्चे ने अपने जीवन में किसी न किसी रूप में (धूम्रपान, धुआं रहित और अन्य रूपों में) तंबाकू का इस्तेमाल किया। लड़कों में तंबाकू सेवन का प्रचलन 9.6ज्ञ और लड़कियों में 7.4ज्ञ है। इस आयु वर्ग के स्कूली बच्चों में धूम्रपान का प्रचलन 7.3ज्ञ, जबकि धुआं रहित तंबाकू उत्पाद के मामले में प्रसार 4.1ज्ञ पाया गया।

जाहिर है, हमारे बच्चे बहुत तेजी से तंबाकू के खतरे के शिकार हो रहे हैं। इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, हमें इस समस्या को रोकने के प्रयासों को तेज करना होगा। हमारा मानना है कि अगर कॉटपा (सिगरेट ऐंड अदर टोबैको प्रोडक्ट्स एक्ट- 2003) कड़े नियमों और दंडों से लैस हो, तो यह तंबाकू इस्तेमाल को रोकने में महत्वपूर्ण हथियार साबित हो सकता है। चिंता की बात यह है कि तंबाकू लॉबी लंबे समय से इन कानूनों को दरकिनार कर लाखों लोगों की जान जोखिम में डाल रही है। तंबाकू कंपनियों के लिए अपने उत्पादों पर 'तंबाकू का सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है' जैसी वैधानिक चेतावनियों को प्रमुखता से शामिल करना अनिवार्य है। लेकिन इन्होंने केसर, इलायची, गुलाब और ऐसी ही अन्य सामग्रियों की आड़ ले ली है और अपने उत्पादों का विज्ञापन कर इन कानूनों को दरकिनार कर दिया है। बहुत सारी तंबाकू कंपनियां बच्चों को तंबाकू उत्पादों के प्रति आकर्षित करने के लिए फिल्म अभिनेताओं से विज्ञापन कराती हैं। कायदे से तो ऐसे विज्ञापनों को दंडनीय अपराध माना जाना चाहिए।यहां इस बात का उल्लेख है कि तंबाकू निरोधी विभिन्न कानूनों में निर्धारित जुर्माने बहुत कम हैं। इन कानूनों के जरिए तंबाकू इस्तेमाल को रोकना संभव नहीं है। कल्पना कीजिए, किसी बच्चे को तंबाकू सेवन में धकेलने जितने बड़े अपराध के लिए सिर्फ 200 रुपये जुर्माना! इस पुराने पड़ चुके नियम में भी बदलाव लाना होगा, ताकि बच्चे निडर होकर किसी वैकल्पिक रास्ते की तलाश न कर सकें। एनसीपीसीआर ने भी कॉटपा के साथ मिल कर स्कूल स्तर पर पहल की है। अवैध गतिविधियों पर नजर रखने के लिए एनसीपीसीआर स्कूलों में कैमरे भी लगा रहा है।

तेल की तरह बढ़े बिजली का दाम

भरत झुनझुनवाला

वर्तमान बिजली संकट का तात्कालिक कारण कोयले की शॉर्टेज है लेकिन यह शॉर्टेज खुद ग्लोबल वार्मिंग की वजह से है। आगे बढ़ने से पहले कुछ कथित कारणों का निवारण जरूरी है। पहला कथित कारण है कि कोविड संकट के बाद अर्थव्यवस्थाएं फिर स्पीड पकड़ रही हैं जिससे बिजली की मांग बढ़ी और संकट पैदा हो गया है। यह मान्य नहीं है क्योंकि अपने देश में जितना कोयले का उत्पादन अप्रैल से सितंबर 2019 में हुआ था, उससे 11 प्रतिशत अधिक उत्पादन अप्रैल से सितंबर 2021 में हुआ है। कोविड के बाद कोयले का घरेलू उत्पादन बढ़ा है इसलिए यह संकट का कारण नहीं है। दूसरा कथित कारण यह बताया जा रहा है कि चीन ने ऑस्ट्रेलिया से कोयले के आयात पर रोक लगा दी है। यह भी मान्य नहीं है, क्योंकि ऑस्ट्रेलिया के कोयले की मांग बढ़ी हुई है।

चीन के कोयला न खरीदने से विश्व बाजार में ऑस्ट्रेलिया के कोयले की सप्लाई में कमी नहीं आई है। तीसरा कथित कारण है कि थर्मल पावर की जगह पर सोलर और विंड पावर के बढ़ते उपयोग के चलते कोयले के उत्पादन से उद्यमियों का ध्यान हट गया है और संकट पैदा हुआ है। यह तर्क भी सटीक नहीं बैठता है। अगर यह कारण होता तो कोयले की मांग कम होती, कोयले की उपब्धता बढ़ती और उसके दाम गिरते। लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है। इसलिए तीनों कारण स्वीकार नहीं हैं।

असल में वर्तमान संकट ग्लोबल वार्मिंग के कारण बिजली उत्पादन में कमी के साथ खपत में वृद्धि का संयोग है। ग्लोबल वार्मिंग ने बिजली के उत्पादन को तीन तरह से प्रभावित किया है। पहला यह कि भारत में कोयले की खदानों में बाढ़ आने से उत्पादन प्रभावित हुआ है। चीन और ऑस्ट्रेलिया में भी कोयले की खानों में बाढ़ आने से उत्पादन में गिरावट आई है। इस कारण कोयले का कुल वैश्विक उत्पादन गिरा और कीमतों में इजाफा हुआ है। दूसरा कारण, बीते समय में विश्व के कई हिस्सों में भयंकर तूफान आए, विशेषकर अमेरिका के तेल उत्पादक राज्यों लुईजियाना और टेक्सास में। जिसके कारण वहां तेल का उत्पादन प्रभावित हुआ। तीसरा कारण, बीते समय में चीन में मौसम सूखा रहा है जिसके चलते जल विद्युत का उत्पादन गिरा है। चीन में वायु की गति भी सुस्त रही है जिसके कारण विंड पावर का उत्पादन भी कम हुआ है।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण बिजली की खपत में भी वृद्धि हुई है। बीते वर्ष यूरोपीय देशों में ठंड का मौसम लंबा खिंचा, जिसके कारण तेल की खपत अधिक हुई और उन देशों के पास तेल के भंडार बेहद कम बचे। आगामी सर्दी का समय भी लंबा खिंचने का अनुमान है। इसलिए ये देश तेल का अधिक भंडारण करना चाह रहे हैं, फलस्वरूप तेल की मांग बढ़ी हुई है। इसलिए ग्लोबल वार्मिंग से एक ओर बाढ़ के प्रकोप से, सूखा पड़ने और वायु की तीव्रता कम होने से उत्पादन कम हुआ है, जबकि दूसरी तरफ ठंड के लंबे खिंचने से उर्जा की खपत बढ़ी है। इन प्रभावों का संयुक्त परिणाम रहा कि ऊर्जा की पूर्ति कम हुई, जबकी मांग अधिक है और संकट उत्पन्न हुआ है। यही कारण है कि यूरोप में नैचरल गैस के दाम और वैश्विक स्टार पर कच्चे तेल और कोयले के दाम में भारी वृद्धि हुई। इन तीनों स्रोतों के दाम आपस में वैसे ही जुड़े रहते हैं, जैसे बाजार में दुकानदार माल के दाम एक दूसरे को देख कर घटाते बढ़ाते हैं।बिजली संकट की वजह 'काला कोयला' या 'कोरी राजनीति', क्या बेकार का डर किया जा रहा है पैदा? देखिए आंकड़े अपने देश में बिजली उत्पादन के लिए कोयले का भारी उपयोग होता है। इसे लगभग 90 प्रतिशत घरेलू स्रोतों से पूरा किया जाता है और 10 प्रतिशत आयातों से। कई थर्मल बिजली उत्पादन संयंत्र आयातित कोयले पर आधारित हैं। आयातित कोयले के दाम बढ़ने से इनके द्वारा उत्पादित बिजली का दाम बढ़ गया और बिजली बोर्डों ने इस महंगी बिजली को खरीदने से इनकार कर दिया है। फलस्वरूप देश में बिजली का उत्पादन गिरा है और संकट पैदा हो गया है। जिस प्रकार मरीज का तापमान 104 डिग्री से 105 डिग्री होने से मरीज की हालत बिगड़ जाती है, उसी प्रकार आयातित कोयले से उत्पादित होने वाली 10 प्रतिशत बिजली पर संकट आने से पूरे देश में संकट पैदा हो गया है।आगे की सोचें तो ग्लोबल वार्मिंग के कारण इस प्रकार के संकट उत्तरोत्तर आते रहेंगे। हमारी विशेष समस्या यह भी है कि हम अपनी खपत का 10 प्रतिशत कोयले और 85 प्रतिशत ईंधन तेल का आयात करते हैं। हम वैश्विक बाजार पर इस कच्चे माल के लिए निर्भर हैं। इस कच्चे माल के दाम बढ़ते-घटते रहते हैं लेकिन देश में बिजली का दाम विद्युत् नियामक आयोग लंबे समय के लिए तय करता है।

न्यूजीलैंड के खिलाफ टी-20 सीरीज में कई सीनियर खिलाड़ियों को मिलेगा आराम

ऋतुराज , हर्षल और वेंकटेश अय्यर जैसे खिलाड़ियों को मिल सकता है मौका

नई दिल्ली (एजेंसी)। टी-20 वर्ल्ड कप के ठीक बाद भारतीय टीम को न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन मैचों की टी-20 सीरीज खेलनी है। खबरों के मुताबिक बायो-बबल की थकान को ध्यान में रखते हुए इस सीरीज के लिए टीम इंडिया के कई सीनियर खिलाड़ियों को आराम दिया जा सकता है, जिसमें विराट कोहली, जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद शमी का नाम तय माना जा रहा है। इस सीरीज में आईपीएल 2021 में चमके ऋतुराज गायकवाड़, हर्षल पटेल, आवेश खान जैसे प्लेयर्स को बीसीसीआई आजमा सकती है। टी-20 सीरीज के बाद भारत को कीवी टीम के खिलाफ दो टेस्ट मैच भी खेलने हैं।

चयन समिति में इन घटनाक्रम की जानकारी रखने वाले सूत्र ने पीटीआई से कहा, 'ज्यादातर भारतीय खिलाड़ी, सीनियर खिलाड़ी पिछले चार महीनों में लगातार तीन 'बायो-बबल' में रहे हैं। संभावना है कि टी-20 विश्व कप के बाद आप चाहोगे कि वे आराम लेकर दिसंबर के अंत में शुरू होने वाले दक्षिण अफ्रीका दौरे से पहले तरोताजा हो जाएं। टॉप भारतीय खिलाड़ी जैसे कप्तान विराट कोहली, उप कप्तान रोहित शर्मा और तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह जून में साउथम्पटन में विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप के शुरू होने के बाद से ही 'बायो-बबल' में रह रहे हैं। इसमें से इंग्लैंड में बायो-बबल वातावरण काफी कम बंदिशों वाला था, जिससे मैनचेस्टर में पांचवां टेस्ट भारतीय खेमे में कोविड-19 मामले आने के कारण रद्द कर दिया गया था।

यह पहले से ही तय है कि कोहली, बुमराह और मोहम्मद शमी जैसे खिलाड़ियों को आराम दिया जाएगा। यहां तक कि रोहित भी इंग्लैंड के खिलाफ घरेलू सीरीज के बाद से लगातार खेल रहे हैं, उन्हें भी आराम की जरूरत होगी, लेकिन कोहली के टी-20 कप्तानी पद से हटने के बाद यह देखना होगा कि टीम मैनेजमेंट इस स्थिति से कैसे निपटता है। इस सीरीज के लिए ऋतुराज गायकवाड़, हर्षल पटेल, आवेश खान और वेंकटेश अय्यर को आजामाया जा सकता है। इन खिलाड़ियों ने इंडियन प्रीमियर लीग के 14वें सीजन के यूएई एडिशन में अपने प्रदर्शन से काफी प्रभावित किया है। न्यूजीलैंड के खिलाफ टी-20 सीरीज का पहला मैच 17 नवंबर को खेला जाएगा, जबकि दूसरा मुकाबला 19 और आखिरी मैच 21 नवंबर को होगा। इसके बाद 25 नवंबर से पहला टेस्ट और तीन दिसंबर से दूसरा टेस्ट शुरू होगा।

दिल्ली कैपिटल्स के आईपीएल 2021 से बाहर होने के बाद कप्तान ऋषभ पंत ने लिखा इमोशनल पोस्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2021 में कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाफ दूसरे क्वालीफायर में हार के साथ दिल्ली कैपिटल्स का सफर खत्म हो चुका है। उतार-चढ़ाव से भरे मुकाबले में दिल्ली की टीम ने आखिरी दो ओवरों में जोरदार वापसी की थी, लेकिन राहुल त्रिपाठी ने लास्ट ओवर की 5वीं बॉल पर सिक्स जड़कर टीम को जीत दिला दी।

इस हार के साथ कप्तान ऋषभ पंत का अपनी अगुवाई में टीम को पहली बार चैंपियन बनाने का सपना भी चकनाचूर हो गया। जिसके बाद उन्होंने अपने ट्विटर हैंडल पर एक इमोशनल पोस्ट शेयर किया है। पंत मैच के बाद भी काफी भावुक हो गए थे।

पंत ने अपने ट्विटर पर लिखा, 'इसका समापन दिल तोड़ने वाला रहा, लेकिन मेरे लिए इस असाधारण वॉरियर्स से भरी टीम की अगुवाई करने से ज्यादा गर्व की कोई बात नहीं हो सकती है। हमने पूरे सीजन जमकर लड़ाई लड़ी और कुछ दिन हमारा प्रदर्शन थोड़ा कमजोर भी रहा पर हमने अपना 100 प्रतिशत दिया।' पंत पहली बार दिल्ली कैपिटल्स की कप्तानी की जिम्मेदारी संभाल रहे थे। पंत की कप्तानी में दिल्ली का प्रदर्शन इस सीजन कमाल का रहा था और टीम ने प्वॉइंट टेबल में टॉप पर रहते हुए प्लेऑफ में अपनी जगह बनाई थी।

पहले क्वालीफायर में दिल्ली की टीम को चेनन्ई सुपर किंग्स के हाथों हार झेलनी पड़ी थी।

केकेआर के खिलाफ टीम के बल्लेबाजों का प्रदर्शन बेहद निराशाजनक रहा और टीम की तरफ से कोई भी बल्लेबाज अर्धशतक तक नहीं जड़ सका। इसके बाद कोलकाता के बल्लेबाजों के आगे दिल्ली का धाकड़ बॉलिंग अटैक भी शुरुआती ओवरों में नहीं चला और टीम को पहले विकेट के लिए 13वें ओवर तक का इंतजार करना पड़ा। आखिरी ओवर में भी रविचंद्रन अश्विन ने दो विकेट चटका कर मैच को रोमांचक बना दिया था, पर राहुल त्रिपाठी केकेआर को फाइनल में पहुंचने में सफल रहे।

महिला बिग बैश में बल्ले से फ्लॉप हुईं पर अपनी फील्डिंग से छाईं शेफाली वर्मा, डायरेक्ट थ्रो देख गेंदबाज भी रह गई दंग

नई दिल्ली (एजेंसी)। महिला बिग बैश में सिडनी सिक्सर्स की टीम की तरफ से मैदान पर उतरीं शेफाली वर्मा पहले मुकाबले में अपने बल्ले से तो कुछ खास जौहर नहीं दिखा सकीं, पर भारत की सलामी बल्लेबाज अपनी फील्डिंग से खूब वाहवाही बटोर रही हैं। शेफाली ने सदरलैंड को डायरेक्ट थ्रो मारकर पवेलियन की राह दिखाई। शेफाली की जबरदस्त थ्रो को वीडियो सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रहा है। शेफाली हालांकि बल्ले से कुछ खास प्रदर्शन नहीं कर सकीं और 10 गेंदों का सामना करने के बाद महज 8 रन बनाकर आउट हुईं। दरअसल, मेलबर्न स्टार्स की पारी के छठे ओवर में एलिसा पैरी ने गेंद फेंकी और विलानी ने जोर से प्रहार करने की कोशिश की, पर गेंद सीधे शेफाली वर्मा के हाथों में गई। दूसरे छोर पर मौजूद सदरलैंड रन लेने के लिए क्रीज से बाहर निकल गईं और शेफाली के डायरेक्ट थ्रो ने उनको वापस आना का कोई मौका नहीं दिया। टीम इंडिया की खिलाड़ी की लाजवाब फील्डिंग देखकर कमेंटेटर भी उनको तारीफ करते नजर आए। बारिश के चलते मेलबर्न स्टार्स और सिडनी के बीच खेला गया यह मुकाबला 11 ओवर का रहा। पहले बल्लेबाजी करते हुए मेलबर्न की टीम ने एक विकेट खोकर 99 रन बनाए। जिसके जवाब में सिडनी ने एलिसा हीली की 27 गेंदों में खेली गई 57 रनों की ताबड़तोड़ पारी के दम 4 गेंद शेष रहते हुए ही मैच को अपने नाम कर लिया। शेफाली वर्मा का प्रदर्शन ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ हाल ही में खेली गई लिमिटेड ओवर सीरीज में कुछ खास नहीं रहा था और उन्होंने तीन वनडे मैचों में महज 86 रन बनाए थे। वहीं, टी-20 में भारत की इस ओपनर का हाल और बेहाल रहा था और वह 3 मैचों में सिर्फ 22 रन ही बना सकी थीं।

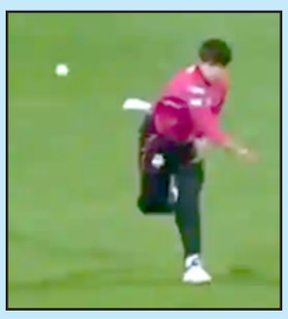

'हर कोई धोनी नहीं बन सकता'

ऋषभ पंत को दिल्ली कैपिटल्स का कप्तान बनाए रखने के पक्ष में वीरेंद्र सहवाग और आशीष नेहरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। बतौर कप्तान ऋषभ पंत के लिए आईपीएल 2021 काफी शानदार रहा। भले ही वह टीम को फाइनल तक पहुंचाने में नाकाम रहे, लेकिन उन्होंने पूरे टूर्नामेंट में काफी सूझबूझ से कप्तानी की। यही वजह रही कि दिल्ली ने प्वॉइंट टेबल में टॉप पर रहते हुए प्लेऑफ में अपनी जगह पक्की की। हालांकि, टीम को फाइनल में पहुंचने के दो मौके मिले, पर पहले चेनन्ई सुपर किंग्स ने और फिर कोलकाता नाइट राइडर्स ने पंत का सपना तोड़ दिया। इनके सबके बावजूद भारत के दो पूर्व दिग्गज खिलाड़ी वीरेंद्र सहवाग और आशीष नेहरा का मानना है कि दिल्ली को अगले सीजन भी टीम की कमान पंत के हाथों में सौंपनी चाहिए और इस युवा कैप्टन पर भरोसा दिखाना चाहिए। 'क्रिकबज' के साथ बातचीत करते हुए नेहरा ने कहा, 'दिल्ली कैपिटल्स को पंत को बतौर कप्तान रिटेन करना चाहिए। जितना ज्यादा वह खेलते जाएंगे उतना ही वह बेहतर होंगे। इस बात में कोई शक नहीं है। जितनी जल्दी वह सीख जाएंगे उतना ही बेहतर होगा उनके और टीम के लिए। अगर पंत द्वारा की गई कुछ गलतियों को हटा दें तो उनका प्रदर्शन एक कप्तान के तौर पर बढ़िया रहा। हर कोई एमएस धोनी नहीं बन सकता है, जो 2007 में आए और आते ही टी-20 वर्ल्ड कप जिता दिया। पंत को सुधार करने का थोड़ा मौका दो।'

सहवाग ने कहा कि पंत को रिटेन किया जाना चाहिए और वह विराट कोहली की तरह दिल्ली कैपिटल्स के लिए भी अगले 10 साल खेल सकते हैं। उन्होंने कहा, 'पंत को जरूर रिटेन किया जाना चाहिए। वह भविष्य है और जैसे विराट कोहली बैंगलोर के लिए खेले वैसे ही वह अगले 10 साल दिल्ली कैपिटल्स के लिए खेल सकते हैं। कप्तानी पर कॉल अगले साल लिया जा सकता है जब टीम फाइनल हो जाए। अगर उनके पास बेहतर ऑप्शन हूं तो वह उसके साथ जाएं नहीं तो फिर पंत।'

'शोएब अख्तर कोई चांस नहीं हैं, हमारी टीम बहुत तगड़ी है उड़ा देगी', भारत-पाकिस्तान महामुकाबले से पहले हरभजन सिंह ने दी चेतावनी

नई दिल्ली (एजेंसी)। टी-20 विश्व कप की उल्टी गिनती शुरू हो चुकी है। 17 अक्टूबर से यूएई और ओमान की सरजमीं पर खेले जाने वाले इस टूर्नामेंट का हर किसी को बेसब्री से इंतजार है। टीम इंडिया को अपने पहले ही मैच में चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान से भिड़ना है। इस हाई-वोल्टेज मैच को लेकर बयानबाजी का दौर शुरू हो चुका है। पाकिस्तान के कई पूर्व क्रिकेटर्स ने हाल ही में टीम इंडिया को इस मैच में फेवरेट बताया था। अब भारत के स्पिन गेंदबाज हरभजन सिंह ने भी पूर्व तेज गेंदबाज शोएब अख्तर को चेतावनी दे डाली है। भज्जी ने कहा कि पाकिस्तान के भारत के खिलाफ जीतने के कोई चांस नहीं हैं और टीम इंडिया इस बार बहुत तगड़ी है। 'स्टार स्पोर्ट्स' के साथ बातचीत करते हुए हरभजन ने कहा कि उन्होंने शोएब अख्तर को इस मैच को लेकर पहले ही कह दिया है कि 'पाकिस्तान का भारत के खिलाफ खेलना का कोई फायदा नहीं है, आप हमारे साथ फिर खेलेंगे और फिर हारकर निराश होंगे। शोएब अख्तर कोई चांस नहीं है, हमारी टीम बहुत तगड़ी है और उड़ा देगी तुमको।' भारत और पाकिस्तान की टीम 24 अक्टूबर को एक दूसरे के खिलाफ मैदान पर उतरेंगी। टी-20 विश्व कप में इन दोनों टीमों की अबतक पांच बार टक्कर हो चुकी है और पांचों बार टीम इंडिया ने जीत दर्ज की है। सिर्फ यही नहीं, 50 ओवर के वर्ल्ड कप में भी 7 मुकाबले खेलने के बावजूद पाकिस्तान की टीम आजतक भारत के खिलाफ जीत हासिल नहीं कर सकी है। हाल ही में पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम ने अपनी टीम पर भरोसा जताते हुए कहा था कि इस बार यूएई की कंडिशंस में पाकिस्तान की टीम भारत को हराने में सफल रहेगा। उन्होंने कहा, 'हम यूएई में पिछले 3 से 4 साल से खेल रहे हैं और हम वहां की कंडिशंस को अच्छे से जानते हैं। हमको पता है कि विकेट कैसे बर्ताव करेगी और किस तरह से बैट्समैनों को एडजस्टमेंट करने हैं। उस दिन जो बेहतर क्रिकेट खेलेगा वह मैच को जीतने में सफल रहेगा। अगर आप मुझसे पूछेंगे, तो हम इस मैच को जीतने वाले हैं।

गांवों के कायाकल्प से बदलेगी देश की तस्वीर : बृजमोहन

ब्लाक प्रमुख औराई ने जाठी गांव में नव निर्मित मार्ग का किया लोकापर्ण

अखंड भारत संदेश

घोसियां। औराई विकास खंड क्षेत्र अंतर्गत ग्रामसभा जाठी में क्षेत्र पंचायत औराई निधि से नवनिर्मित 190 मीटर इंटर लाकिंग मार्ग का लोकापर्ण ब्लाक प्रमुख औराई वृजमोहन मिश्र विकास द्वारा किया गया। इस अवसर पर आयोजित लोकापर्ण समारोह को संबोधित करते हुए ब्लाक प्रमुख श्री मिश्र ने कहा कि औराई विकास खंड क्षेत्र के गांवों का सर्वांगिण विकास के साथ ही मूलभूत आवश्यक संसाधनों का सृजन हमारी प्राथमिकता में शामिल रहा है। जिससे ग्रामीण अंचल में रहने वाले लोग भी बुनियादी सुविधाओं से जुड़कर विकास की ओर आगे बढ़ सके।

कहा कि ग्रामसभा के लोगों द्वारा मार्ग निर्माण का प्रस्ताव लाया गया था, इसे आज पूरा करने के साथ ही जनता के लिए समर्पित कर दिया गया। इस मार्ग के बन जाने से यहां के लोगों को काफी सहूलियत होगी। श्री मिश्र ने कहा कि एक ब्लाक प्रमुख के रूप में जनता के आर्शीवाद से लगातार मुझे दूसरी बार जो जिम्मेदारी मिली है, उसे पूरा करने के लिए मेरा हर संभव प्रयास रहेगा। श्री मिश्र ने कहा कि क्षेत्र पंचायत के पास सीमित संसाधन के बावजूद आवश्यक स्थानों पर स्वच्छ पेय जलापूर्ति की व्यवस्था, प्रकाश व्यवस्था, जल निकासी की सुविधा तथा संपर्क मार्गो का जाल बिछाने का कार्य युद्ध स्तर पर जारी है।

कहा कि गांवों में जहां कहीं भी बुनियादी समस्याएं है, जनता उसे संज्ञान में लाये, निश्चित रूप से त्वरित समाधान की दिशा में कार्य को आगे बढ़ाया जायेगा। कहा कि जब गांव सड़क, बिजली, पानी के साथ ही शिक्षा के अच्छे आयाम स्थापित होंगे, तो निश्चित रूप से देश, प्रदेश और समाज को विकास की मुख्यधारा से जोड़ा जा सकता है। कहा कि क्षेत्र की जनता के सुख दुख में साथ खड़े रहना एक जन प्रतिनिधि का दायित्व होता है। जिसे पूरा करने के लिए हमने हर संभव कोशीश जारी रखी है। कहा कि भारत गांवों का देश है, इस लिए जरूरी है कि शहरों की तरह ग्रामीण अंचलों को भी प्राथमिकता मिले। इस दौरान उन्होंने ग्रामीणों से रूबरू होते हुए गांवो में चलाई जा रही अन्य योजनाओं की भी जानकारी ली। कहा कि जनता के हित से जुड़ा कार्य किसी भी दशा में रूकने नहीं दिया जायेगा। कार्यक्रम में ग्रामीणों ने ब्लाक प्रमुख श्री मिश्र द्वारा कराये जा रहे ऐतिहासिक कार्यो की सराहना की। वहीं चमचमाती इंटर लाकिंग मार्ग की मिली सौगात पर नारे भी लगाए गये। इस अवसर पर प्रधान सूबेदार यादव, क्षेत्र पंचायत सदस्य अवधेश यादव, सभाशंकर तिवारी, जटाशंकर तिवारी, अरूण, रतनेश तिवारी, विनय शुक्ला, सर्वेश मिश्रा, सिक्की यादव, देवा आदि मौजूद रहे।

सीजेएम के निर्देश पर आठ के खिलाफ दर्ज होगी मुकदमा

ज्ञानपुर। न्यायालय मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट भदोही ने गोपीगंज थाना क्षेत्र के छतमी गांव के आधा दर्जन से अधिक लोगों पर मुकदमा दर्ज करने का आदेश दिया है। छतमी गांव निवासी विवेक कुमार पाण्डेय उर्फ रिंकू पांडेय ने प्रार्थना पत्र के माध्यम से बताया कि घर से अपने ढाबे की ओर जा रहा था। तभी गांव के आठ दंबगो द्वारा रास्ता रोककर मारने पिटने लगे। किसी तरह से जान बचाकर घर की तरफ भागा, लेकिन वहां पर पहुंच गये और महिलाओं के साथ बच्चो को भी नही छोड़ा। मामले की तहरीर गोपीगंज थानाध्यक्ष को दिया परन्तु कोई सुनवाई नही हुई।

जनसहयोग से निखरेगा इंदिरा गांधी चौक का स्वरूप

जिलाधिकारी ने नारियल फोडकर किया कार्य का शुभारंभ

अखंड भारत संदेश

भदोही। बदहाल, धूल-धूसरित इंदिरा मिल गांधी चौक अब नये कलेवर में नजर आएगा। अरसे से उपेक्षित पड़े इस चौराहे के कायाकल्प का बीड़ा ठुकराल कैपिटल और वेलनेस फिजियो ने उठाया है। आज जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने चौराहे के सुंदरीकरण कार्यका शुभारंभ जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने नारियल फोडकर और गांधी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर किया।

जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने जनसहयोग के लिए भदोहीवासियों और सहयोगियों का आभार जताया। 'हमार भदोही' का भी उन्होंने जिक्र किया। कहा कि समाज के लोगों द्वारा जनपद को सजाने और संवारने का कार्य सराहनीय है। उन्होंने कहा कि शासन-प्रशासन से जिस तरह की सुविधा या मदद की जरूरत होगी, उसके लिए भदोही प्रशासन पूरी तरह से तैयार है। जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने कहा कि सामाजिक सहयोग से किया जा रहा कार्य काफी महत्वपूर्ण होता है। सामाजिक भागीदारी से बड़े-बड़े कार्य भी काफी आसान हो जाते है। उन्होंने कहा कि सिविल सोसायटी, हमार भदोही का कार्य काफी प्रसंसनीय है।

विश्व स्तरीय बनाया जाएगा चौराहा

अखंड भारत संदेश

ठुकराल कैपिटल मार्केट के एके ठुकराल ने कहा लंबे समय से गांधी चौराहा उपेक्षित था। जो एक टाउन ऑफ एक्सपोर्ट सिटी के लिए अच्छा नहीं था। अब इसे विश्व स्तरीय रूप दिया जाएगा। इसका सुंदरीकरण कराया जा रहा है। हमार भदोही के संयोजक संजय श्रीवास्तव ने कहा कि भदोही को टाउन ऑफ एक्सपोर्ट एक्सीलेंस का दर्जा मिलने के बाद शहर को सुंदर और स्वच्छ बनाना बहुत जरूरी है। इसी भावना के साथ इस कार्य की शुरुआत की गई है। शहर के सभी लोगों का दायित्व है कि शहर को बेहतर रखने के लिए आगे आएं।

सामाजिक संस्था का जुड़ना सराहनीय

अखंड भारत संदेश

गौरतलब हो कि ट्रैफिक के कारण गांधी चौक क्षतिग्रस्त हो गया था। शहर के प्रमुख चौराहा होने के कारण 'हमार भदोही' ने इसके कायाकल्प के लिए जिलाधिकारी से अनुमति मांगी थी। भदोही को केंद्र सरकार ने टाउन ऑफ एक्सपोर्ट एक्सीलेंस का दर्जा दिया है। अब इसे विश्वस्तरीय रूप देने के लिए सामाजिक संस्था और जनसामान्य का जुडना प्रसंसनीय है। इस मौके पर आईआई सिटी के निदेशक आलोक कुमार, उप जिलाधिकारी आशीष मिश्र, ईओ नगर पालिका भदोही, डा. शैलेष पाठक, आरके बोथरा, संतोष गुप्ता, महेश जायसवाल, भरत मौर्य, इश्तियाक खां, काशी यादव, मयंक श्रीवास्तव, रमेश, संदेश योगी, अमीर हसन मौजूद रहे।

ज्ञानपुर पुलिस के हत्थे चढ़े शातिर लुटेरे, घटना में प्रयुक्त मोटरसाइकिल बरामद

अखंड भारत संदेश

भदोही। ज्ञानपुर पुलिस ने दो शातिर लुटेरों को गिरफ्तार किया है। उनकेपास से घटना में प्रयुक्त बाइक भी बरामद हुई है। लूट की घटना बीती रात की है। हालांकि लुटेरे अपनी मंशा में कामयाब नहीं हुए थे, पर सूचना मिलते ही सक्रियता दिखाते हुए पुलिस ने 24 घंटे के भीतर लुटेरों को धर दबोचा।

ज्ञानपुर के अलुआ, असनांव निवासी जगदीश यादव पुत्र स्व. रामराज यादव ने ज्ञानपुर पुलिस को तहरीर देकर बताया कि बीती रात वह घर के सामने सडक किनारे मोबाइल से बात कर रहा था। इसी दौरान बाइक सवार बदमाशों ने उसे धक्का देकर लूट की कोशिश की। पर, जगदीश के शोर पर लुटेरे भाग निकले। मामले की तहरीर मिलते ही ज्ञानपुर पुलिस ने जाल बिछाया और आज दो लुटेरों को धर दबोचा। मुखबिर की सूचना के आधार पर उक्त मामले से संबंधित शातिर लुटेरों प्रकाश गौतम पुत्र राजेश गौतम और सरोज गौतम पुत्र पंचम राम (निवासीगण नारेपार, सीतामढ़ी, थाना कोइरौना) को आज गिरफ्तार कर लिया गया।

वैश्विक भुखमरी सूचकांक में 101वें नंबर पर फिसला भारत, बांग्लादेश और पाक भी हैं आगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। वैश्विक भुखमरी सूचकांक (उघ्) 2021 ने भारत को 116 देशों में से 101वां स्थान दिया है। 2020 में भारत 107 देशों में 94वें स्थान पर था। 2021 की रैंकिंग के अनुसार, पाकिस्तान, बांग्लादेश और नेपाल ने भारत से बेहतर प्रदर्शन किया है। सहायता कार्यों से जुड़ी आयरलैंड की एजेंसी कंसर्न वर्ल्डवाइड और जर्मनी का संगठन वेल्ट हंगर हिल्फ की ओर से संयुक्त रूप से तैयार की गई रिपोर्ट में भारत में भूख के स्तर को 'चिंताजनक' बताया गया है। भारत का जीएचआई स्कोर भी गिर गया है। यह साल 2000 में 38.8 था, जो 2012 और 2021 के बीच 28.8-27.5 के बीच रहा। जीएचआई स्कोर की गणना चार पैरामीटर पर

की जाती है, जिनमें अल्पपोषण, कुपोषण, बच्चों की वृद्धि दर और बाल मृत्यु दर शामिल हैं। साल 2020 में भारत 107 देशों में 94वें स्थान पर था। अब 116 देशों में यह 101वें स्थान पर आ गया है।

रिपोर्ट के अनुसार, पड़ोसी देश जैसे नेपाल (76), बांग्लादेश (76), म्यांमार (71) और पाकिस्तान (92) भी भुखमरी को लेकर चिंताजनक स्थिति में हैं, लेकिन भारत की तुलना में ये सभी अपने नागरिकों को भोजन उपलब्ध कराने को लेकर बेहतर प्रदर्शन किया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में कोविड-19 और महामारी संबंधी प्रतिबंधों की वजह से लोग बुरी तरह प्रभावित हुए हैं, जहां दुनिया भर में बच्चों की वेस्टिंग की दर सबसे ज्यादा है।

रिपोर्ट के अनुसार, भारत में चाइल्ड वेस्टिंग की दर 1998 और 2002 के बीच 17.1 प्रतिशत से बढ़कर 2016 और 2020 के बीच 17.3 प्रतिशत हो गई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत ने अन्य पैरामीटरों में सुधार दिखाया है जैसे कि बाल मृत्यु दर, बाल स्टंटिंग की व्यापकता और अपर्याप्त भोजन के कारण अल्पपोषण की व्यापकता। रिपोर्ट में चीन, ब्राजील और कुवैत सहित अठारह देशों ने पांच से कम के जीएचआई स्कोर के साथ टॉप स्थान साझा किया है। जीएचआई की रिपोर्ट के मुताबिक, पूरी दुनिया के लिए भूख के खिलाफ लड़ाई खतरनाक तरीके से पटरी से उतर रही है। वर्तमान अनुमानों के आधार पर, दुनिया और विशेष रूप से 47 देश 2030 तक निम्न स्तर की भूख को प्राप्त करने में असमर्थ होंगे।

अपहरण और मारपीट के मामले में महाराष्ट्र के मंत्री जितेंद्र आव्हाड गिरफ्तार, जमानत पर छुटे

ठाणे (एजेंसी)। महाराष्ट्र के आवास मंत्री और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के नेता जितेंद्र आव्हाड को अपने घर पर एक व्यक्ति पर कथित रूप से हमला करने के मामले में गुरुवार को गिरफ्तार कर लिया गया और बाद में उन्हें जमानत पर रिहा कर दिया गया। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा कि आव्हाड गुरुवार को मामले के सिलसिले में ठाणे शहर के वर्तक नगर पुलिस थाने में पेश हुए। धिकारी ने कहा कि उनका बयान दर्ज किया गया और उन्हें एक मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया, जिन्होंने मंत्री को 10,000 रुपए के मुचलके और एक जमानत पर रिहा कर दिया। शिकायतकर्ता आनंद करमुसे ने आरोप लगाया था कि उन्हें आव्हाड के बंगले में ले जाया गया और मंत्री की मौजूदगी में एक

सोशल मीडिया पोस्ट को लेकर पीटा गया। बॉम्बे हाई कोर्ट ने ठाणे पुलिस को उचित जांच करने और आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश दिया था, जब करमुसे ने आव्हाड को आरोपी बनाने का अनुरोध किया था।

सिविल इंजीनियर, करमुसे ने आरोप लगाया था कि कुछ पुलिसकर्मी पांच अप्रैल, 2020 की शाम को उनसे मिलने आए और उनसे कहा कि उन्हें पुलिस थाने चलना होगा, लेकिन इसके बजाय उन्हें आव्हाड के बंगले में ले गए। करमुसे ने आरोप लगाया था कि मंत्री की उस तस्वीर को लेकर, जिसे उन्होंने फेसबुक पर साझा किया था, दस से पंद्रह लोगों ने उनकी पिटाई की।

जम्मू-कश्मीर में आतंकियों का बढ़ रहा दुस्साहस, पुंछ में सेना के दो जवान घायल, नेशनल हाईवे बंद

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के पुंछ में गुरुवार को आतंकियों से मोर्चा लेते हुए सेना के दो जवान गंभीर रूप घायल हो गए हैं। आतंकियों के खिलाफ सेना की ओर से चलाए जा रहे ऑपरेशन की

वजह से जम्मू-राजौरी-पुंछ नेशनल हाइवे पर आवागमन फिलहाल रोक दिया गया है। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार आतंकियों के खिलाफ इस ऑपरेशन में घायल होने वाले जवानों में एक जूनियर कमीशंड अधिकारी (व्ग्ध्) और एक सैनिक शामिल है। घटना के बाद सुरक्षाबलों ने आतंकियों के घेरने के लिए जम्मू-राजौरी-पुंछ नेशनल हाइवे के कुछ हिस्सों पर आवाजाही को रोक दी है। पिछले कुछ दिनों में घाटी में आतंकवादी घटनाओं में वृद्धि होने के बाद सेना की ओर से आतंकवाद विरोधी अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के अंतर्गत पिछले छह दिनों में सेना ने कम से कम नौ आतंकियों को मार गिराया है। बता दें कि सोमवार को राजौरी सेक्टर के पीर पंजाल रेंज में आतंकियों से मोर्चा लेते हुए सेना के पांच जवान शहीद हो गए थे। शहीदों में एक जूनियर कमीशंड ऑफिसर और चार सैनिक शामिल थे। घटना को लेकर रक्षा विभाग के प्रवक्ता ने बताया था कि घात लगाए बैठे आतंकियों ने सुरक्षा बलों पर ताबड़तोड़ फायरिंग कर दी थी जिसके बाद पांच जवान घायल हो गए थे। घायल जवानों को अस्पताल ले जाया गया लेकिन उनको बचाया नहीं जा सका। बता दें कि 3 अक्टूबर से जम्मू कश्मीर में अल्पसंख्यक समुदायों के तीन लोगों सहित सात आम नागरिक मारे गए हैं। इनमें दो शिक्षक सतिंदर कौर और दीपक चंद भी शामिल हैं, जिनकी पिछले हफ्ते गुरुवार को गोली मारकर हत्या कर दी गई थी।

आर्यन से जुड़े ड्रग्स केस की निगरानी कर रहे अफसर की बढ़ी सुरक्षा, आधिकारिक गाड़ी भी बदली

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई क्रूज ड्रग्स केस की निगरानी कर रहे नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के जोनल डायरेक्टर समीर वानखेड़े की सुरक्षा को बढ़ा दिया गया है। हाई प्रोफाइल केस की जांच कर रहे वानखेड़े ने पिछले दिनों आरोप लगाया था कि दो पुलिस वाले उनकी मूवमेंट्स की निगरानी कर रहे हैं। वानखेड़े की सुरक्षा के नए प्रोटोकॉल के मुताबिक एनसीबी और मुंबई पुलिस के सशस्त्र गार्ड्स को उनकी सिक्योरिटी फ्लीट में शामिल किया गया है। उनकी आधिकारिक गाड़ी को भी सुरक्षा के लिहाज से बदल दिया गया है। सूत्रों के मुताबिक सोमवार को समीर वानखेड़े ने एक शिकायत दर्ज कराई थी कि मुंबई पुलिस के दो जवान उनकी निगरानी कर रहे हैं। उन्होंने कहा था कि वह मां के अंतिम संस्कार के लिए श्मशान घाट गए थे तो वहां भी पुलिस वाले उनकी निगरानी कर रहे थे। कहा जा रहा है कि दोनों पुलिसकर्मी ओशिवारा पुलिस स्टेशन से हैं। यही नहीं उन दोनों पुलिसकमियों पर समीर वानखेड़े की ओर से आरोप लगाया गया है

कि उन्होंने सीसीटीवी फुटेज ली है ताकि उनकी मूवमेंट को मॉनिटर किया जा सके। समीर वानखेड़े फिलहाल हाई प्रोफाइल मुंबई क्रूज केस की निगरानी कर रहे हैं। इस केस में शाहरुख खान के बेटे आर्यन खान को भी आरोपी बनाया गया है।

समीर वानखेड़े एनसीबी के चर्चित अधिकारी रहे हैं। इससे पहले भी वह कई हाई प्रोफाइल रेड्स में शामिल रहे हैं। सुशांत सिंह राजपूत की मौत के बाद सामने आए ड्रग्स केस की जांच का भी वह हिस्सा थे। इसके अलावा भी कई हाई प्रोफाइल मामलों की जांच में वह शामिल रहे हैं। समीर वानखेड़े की सुरक्षा बढ़ाने के साथ ही उनकी शिकायत के आधार पर मुंबई के पुलिस कमिशन्र ने जांच के भी आदेश दे दिए हैं। कमिशन्र के आदेश के मुताबिक इस मामले की जांच रिपोर्ट एक सप्ताह में आ जाएगी। बता दें कि गुरुवार को भी आर्यन खान की बेल पर सुनवाई हुई, लेकिन कोई फैसला नहीं आ सका। इस मामले में अदालत ने 20 अक्टूबर को फैसला सुनाने की बात कही है। ऐसे में उन्हें 6 दिन और जेल में ही गुजारने होंगे।

लगातार बिगड़ रही जम्मू-कश्मीर की स्थिति... बीजेपी नेता ने की एक्शन की मांग

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के पूर्व उपमुख्यमंत्री और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता कविंदर गुप्ता ने बुधवार को कहा कि जम्मू-कश्मीर में स्थिति लगातार बिगड़ रही है। उन्होंने इस माहौल के लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। उन्होंने कहा, ठजम्मू-कश्मीर में हालात लगातार बिगड़ते जा रहे हैं इसलिए ऐसा माहौल बनाने वालों के खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए। 70 साल से इस तरह का माहौल बना है और हाल ही में पाकिस्तान के झंडे फहराए गए, पथराव की घटनाएं हुईं।ठ उनकी यह टिप्पणी जम्मू-कश्मीर में पिछले कुछ दिनों में आतंकवादियों द्वारा गैर मुस्लिमों की हत्याओं के बाद आई है।केंद्र शासित प्रदेश में राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) के छापे पर बोलते हुए, भाजपा नेता ने कहा, ठहम सभी ने देखा है कि अतीत में कश्मीरी पंडितों या हिंदुओं को कैसे नुकसान हुआ है। यह स्पष्ट है कि कई लोग घाटी में उनके सहायक के रूप में काम कर रहे हैं। जो उन्हें पूरी जानकारी देते हैं। यही एकमात्र कारण है कि एनआईए इन दिनों छापेमारी कर रही है ताकि वहां इन घटनाओं (आतंक) को रोका जा सके।''उन्होंने कहा, ठएजेंसी को यह भी जानकारी मिली है कि हाल ही में दिल्ली में हुई घटना केंद्र शासित प्रदेश से जुड़ी है। इसलिए, इस तरह के ऑपरेशन करना महत्वपूर्ण है।ठ पूर्व उपमुख्यमंत्री ने कहा कि जम्मू-कश्मीर के लोग अब शांति से रहना चाहते हैं। इससे पहले बुधवार को, एनआईए ने आतंकवाद की साजिश के मामले में जम्मू-कश्मीर में कई छापेमारी के दौरान चार लोगों को गिरफ्तार किया है, एजेंसी ने यह जानकारी दी। ताजा मामला प्रतिबंधित आतंकवादी संगठनों लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मोहम्मद (जेईएम), हिज्ब-उल-मुजाहिदीन (एचएम), अल बद्र और इसी तरह के अन्य संगठन और उनके सहयोगी जैसे टीआरएफ और पीपल अगेंस्ट फासिस्ट फोर्सेज (पीएएफएफ) के कैडरों द्वारा जम्मू-कश्मीर और नई दिल्ली सहित अन्य प्रमुख शहरों में हिंसक आतंकवादी कृत्यों को अंजाम देने के लिए शारीरिक और साइबर स्पेस दोनों में साजिश रचने के संबंध में प्राप्त जानकारी से संबंधित है।

उद्योग पर असर डालने लगा कोयले का संकट, कोल इंडिया ने रोकी ऐसी कंपनियों की आपूर्ति

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में कोयले का संकट गहराता जा रहा है। महाराष्ट्र और पंजाब समेत कई राज्यों में थर्मल पावर प्लांट की कई यूनिट बंद हो चुकी हैं। इस बीच कोल इंडिया लिमिटेड ने गुरुवार को कहा है कि उसने गैर-बिजली ग्राहकों को कोयले की सप्लाई देना बंद कर दिया है। इसका असर उन कंपनियों पर सीधे तौर पड़ा है, जो गैर-विद्युत कारोबार में लगी है। कोल इंडिया ने कहा है कि भारत पिछले कुछ सालों में अपने सबसे खराब बिजली आपूर्ति घाटे में से एक से जूझ रहा है। एक न्यूज एजेंसी के मुताबिक दुनिया के चौथे सबसे बड़े भंडार के साथ भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा कोयला उत्पादक है। कोरोना महामारी के पहले से भी ज्यादा बिजली की मांग में वृद्धि के बाद दुनिया की सबसे बड़ी कोयला खनन कंपनी कोल इंडिया अब पर्याप्त आपूर्ति नहीं कर पर रहा है। कंपनी ने एक बयान में कहा कि उसने बिजली क्षेत्र को छोड़कर अन्य सेक्टर्स के लिए कोयले की ऑनलाइन नीलामी रोक दी है।

नीलामी रोकने को लेकर कोल इंडिया ने कहा है कि यह केवल एक अस्थायी प्राथमिकता है, राष्ट्र

के हित में पावर प्लांट्स में कोयला के कम स्टॉक की स्थिति से निपटने के लिए और उन्हें आपूर्ति बढ़ाने के लिए हैं। एल्युमीनियम एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने तत्काल पहले जैसी आपूर्ति फिर से शुरू करने की मांग की। इसने कहा कि कोल इंडिया का कदम उद्योग के लिए 'हानिकारक' है, जिन्हें बिजली की निर्बाध आपूर्ति की जरूरत है।

एसोसिएशन ने बुधवार को एक बयान में कहा कि दो घंटे से अधिक समय तक बिजली आपूर्ति ठप रहने से कंपनियों को भारी वित्तीय नुकसान हो सकता है। इसने कहा कि कई एल्युमीनियम संयंत्र पहले से ही कम क्षमता पर काम कर रहे हैं क्योंकि उनके कोयले का स्टॉक अप्रैल में लगभग 15 दिनों से घटकर 2-3 दिनों का हो गया है। एसोसिएशन ने कहा कि उनके पास स्थायी संचालन जारी रखने के लिए कोई योजना तैयार करने के लिए समय नहीं बचा है। उद्योग की उत्पादन लागत में कोयले का योगदान लगभग 40 फीसदी है। वहीं, देश में कोयला संकट को लेकर कोल इंडिया ने कहा है विदेशों में कोयले की बढ़ी कीमत की वजह से भारतीय कंपनियां स्थानीय कोयले पर निर्भर हो गए हैं।

बांग्लादेश में दुर्गा पूजा पंडालों पर हमले पर आया मोदी सरकार का रिएक्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। बांग्लादेश में उपद्रवियों द्वारा हिंदुओं के कुछ मंदिरों को क्षतिग्रस्त किये जाने के मामले में अब भारतीय विदेश मंत्रालय की तरफ से प्रतिक्रिया सामने आई है। विदेश मंत्रालय की तरफ से गुरुवार को कहा गया है कि उन्होंने इस बात पर गौर किया कि पड़ोसी मुल्क ने इस घटना के बाद गंभीरता से एक्शन लिया और हालात को काबू किया। भारतीय मिशन इस मामले को लेकर बांग्लादेशी अथॉरिटी के साथ लगातार संपर्क में है। जब मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बाग्ची से बांग्लादेश में पूजा पंडाल और मंदिरों पर हमलों से जुड़ी रिपोर्ट के बारे में पूछा गया तब मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा 'हमने कुछ परेशान करने वाली खबरें देखी हैं। जिसमें बांग्लादेश में कुछ धार्मिक स्थलों पर हमला करने की घटनाएं हुई हैं। हमने यह बात नोटिस किया

कि बांग्लादेशी सरकार ने हालात को काबू करने के लिए तुरंत जरुरी कार्रवाई की है। हम इस बात को भी समझते हैं कि वहां दुर्गा पूजा त्योहार सरकारी एजेंसियों और बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों के सहयोग की वजह से हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जा रहा है।

बता दें कि बांग्लादेश में दुर्गा पूजा समारोहों के दौरान कुछ अज्ञात मुस्लिम उपद्रवियों ने हिंदुओं के कुछ मंदिरों को क्षतिग्रस्त कर दिया, जिसके चलते सरकार को 22 जिलों में अर्द्धसैनिक बलों की तैनाती करनी पड़ी। मीडिया की खबरों में बृहस्पितवार को बताया गया कि संघर्ष में चार लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए।

गृह मंत्रालय के एक प्रवक्ता ने बताया कि बॉर्डर गार्ड्स बांग्लादेश (बीजीबी) के सैनिकों को देशभर के 22 जिलों में हिंसा को रोकने के लिए तैनात किया गया है। उन्होंने कहा कि देश के 64 प्रशासनिक जिलों में से 22 में तथा अन्य कहीं भी हिंसा की रोकथाम के लिए बीजीबी के साथ अपराध रोधी रैपिड एक्शन बटालियन (आरएबी) और सशस्त्र पुलिस को भी तैनात रहने का आदेश दिया गया है। खबरों के अनुसार बुधवार को कमीला की सीमा से लगे चांदपुर के हाजीगंज उपजिले में पुलिस और मुस्लिम उपद्रवियों के बीच संघर्ष के दौरान तीन लोग मारे गये, वहीं एक अन्य शख्स की बाद में मृत्यु हो गयी। अधिकारियों ने हाजीगंज में रैलियों पर प्रतिबंध लगा दिया है जहां अधिकारियों ने गोली लगने से चार लोगों की मौत की पुष्टि की है। उन्होंने बताया कि संघर्ष में दो अन्य लोग गंभीर रूप से घायल हो गये। पुलिस ने कहा कि उनके कुछ अधिकारी भी जख्मी हुए हैं, क्योंकि भीड़ ने पुलिस और स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों पर हमला कर दिया था और उनके वाहनों में तोड़फोड़ की थी। हालांकि उन्होंने यह नहीं स्पष्ट किया कि लोग पुलिस कार्रवाई में मारे गये हैं या नहीं, लेकिन खबरों में बताया जा रहा है कि पुलिस ने 500 से अधिक लोगों की भीड़ पर गोलीबारी शुरू कर दी थी।

इमरान खान की सुनने को राजी नहीं बाजवा? आईएसआई के नए चीफ पर अब भी नहीं हुआ फैसला

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी घ्ए्ध् के नए डायरेक्टर की नियुक्ति को लेकर पाकिस्तान में पीएम इमरान खान और सैन्य नेतृत्व के बीच गतिरोध जारी है। डॉन की एक रिपोर्ट मुताबिक इमरान खान को उम्मीदवारों की एक लिस्ट मिली है। नाम न बताने की शर्त पर एक केंद्रीय मंत्री ने डॉन को बताया है कि पीएम को मामले को लेकर जानकारी दी गई है जिसमें डीजी आईएसआई के ऑफिस के लोगों के नाम हैं। सत्ताधारी पार्टी तहरीक-ए-इंसाफ ने नेशनल असेंबली में सेना प्रमुख जनरल कमर जावेद बाजवा के साथ पीएम की बैठक के विवरण के खुलासे को लेकर अपने नेता आमिर डोगर को

फटकार लगाई है। उन्हें कथित तौर पर पार्टी से कारण बताओ नोटिस मिला था।मामले को लेकर सफाई देते हुए केंद्रीय सूचना मंत्री फवाद चौधरी ने ट्वीट कर बताया कि नए घ्ए्ध् डायरेक्टर की नियुक्ति को लेकर पीएम और चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ के बीच बातचीत हो चुकी है और नियुक्ति की प्रक्रिया भी शुरू हो चुकी है। इमरान सरकार ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि देश की स्थिरता, अखंडता और विकास के लिए सभी संस्था एकजुट हैं।इससे पहले कैबिनेट बैठक की जानकारी देते हुए फवाद चौधरी ने जहा था कि पीएम इमरान खान संविधान के मुताबिक आईएसआई के डायरेक्टर की नियुक्ति चाहते हैं। रक्षा मामलों के विशेषज्ञों की मानें तो नियुक्ति की प्रक्रिया का संविधान या सेना अधिनियम में उल्लेख नहीं किया गया है। पिछली नियुक्तियां परंपराओं के मुताबिक की गई थी जिसके तहत सेना प्रमुख पीएम को तीन नामों का प्रस्ताव देते हैं। अंतिम फैसला पीएम ही लेते हैं। पिछले हफ्ते इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस ने घोषणा की थी कि लेफ्टिनेंट जनरल नदीम अहमद अंजुम को नया घ्ए्ध् डायरेक्टर बनाया गया है।

अदानी पोर्ट्स के बैन से नाराज हुआ ईरान, बताया असंतुलित कदम

नई दिल्ली (एजेंसी)। ईरान ने अदानी पोर्ट्स द्वारा ईरानी कंटेनर्स के आयात और निर्यात पर प्रतिबंध लगाने के फैसले की आलोचना की है। ईरान ने इसे गैर-पेशेवर और असंतुलित कदम बताया है। बता दें कि 11 अक्टूबर को अदानी पोर्ट्स ने घोषणा करते हुए कहा था कि 15 नवंबर से उनके टर्मिनल ईरान, पाकिस्तान और अफगानिस्तान के कार्गो को नहीं संभाल सकेंगे। यह नियम अदानी पोर्ट्स द्वारा संचालित सभी पोर्ट्स के लिए होंगे। अदानी ग्रुप के इस कदम को उठाने के पीछे कोई वजह नहीं बताई थी। हालांकि करीब तीन हफ्ते पहले भारतीय अधिकारियों ने अदानी ग्रुप द्वारा संचालित मुंद्रा पोर्ट पर 2.65 बिलियन रुपये की तीन टन हेरोइन जब्त की थी।नई दिल्ली स्थित ईरानी दूतावास ने अपने ट्विटर पेज से मामले को लेकर कई ट्वीट किए हैं। इसमें कहा गया है कि अफगानिस्तान में अस्थिरता के कारण ईरान कई चुनौतियों का सामना कर रहा है। इसमें नशीले पदार्थों के उत्पादन में बढ़ोतरी देखी है। ईरान ने कहा है कि यूनाइटेड नेशंस ने नशीले पदार्थों पर नियंत्रण करने के लिए हमारी तारीफ की है लेकिन ट्रेड से इनकार कर और एक गैर-पेशेवर और असंतुलित कदम उठाकर खेपों पर प्रतिबंध लगाकर गलत तरीके से निशाना बनाया जा रहा। ब्यान में कहीं अदानी पोर्ट्स का नाम नहीं था लेकिन तेहरान ने कड़े शब्दों में अपनी प्रतिक्रिया दे दी है।

कृषि कानूनों के बाद बीएसएफ के अधिकारों पर उबला पंजाब, विपक्ष भी सड़कों पर उतरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। पंजाब में सीमा सुरक्षा बल (ँएइ) के अधिकार क्षेत्र के विस्तार को लेकर शिरोमणि अकाली दल के अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल ने केंद्र सरकार के इस फैसले का विरोध किया है। सुखबीर सिंह ने पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ चंडीगढ़ राजभवन के बाहर विरोध प्रदर्शन किया है। इससे पहले पंजाब के सीएम चरणजीत सिंह चननी ने भी केंद्र सरकार की निंदा करते हुए कहा था कि यह संघवाद पर सीधा हमला है। पंजाब कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने सुनील जाखड़ के इस कदम को पंजाब पुलिस को शर्मिंदा करने वाला बताया था।

जाखड़ ने ट्वीट कर कहा था कि ध्यान रखें कि आप क्या मांगते हैं! क्या चरणजीत सिंह चननी अनजाने में आधा पंजाब केंद्र सरकार को सौंपने में कामयाब रहे। 25 हजार वर्गकिलोमीटर क्षेत्र को ँएइ के अधिकार क्षेत्र में रखा गया है। यह पंजाब पुलिस का तिरस्कार है। क्या हम अब भी राज्यों को अधिक स्वायत्तता चाहते हैं।

केंद्र सरकार ने कहा है कि इस कदम का मकसद आतंकवाद और सीमा पार अपराधों के खिलाफ 'जीरो टॉलरेंस' बनाए रखना है।ँएइ को अंतर्राष्ट्रीय सीमा से भारतीय क्षेत्र के अंदर 50 किलोमीटर क्षेत्र में तलाशी लेने, संदिग्धों को गिरफ्तार करने और जब्ती करने का आदेश दिया है। पंजाब के साथ ही पश्चिम बंगाक और असम प्रदेश में भी 15 किलोमीटर के अधिकार क्षेत्र को बढ़ाकर 50 किलोमीटर कर दिया गया है।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं. UPHIN 2001/9025